Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमचन्द

प्रतिशोध

143
-P
44

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167944
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशोध

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
Veg, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशोध

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

081
167944
Central Library
167944
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-P

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2. बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०/९०, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : १९९४

मूल्य : अस्सी रुपये मात्र

शब्द संयोजक : अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

मुद्रक : संजीव ऑफसेट प्रिंटर्स,
कृष्णनगर, दिल्ली

PRATISHODH by Gurudutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

दुनियादारी में साधारणतः और राजनीति में विशेष रूप से यह माना जाता है कि शत्रु का शत्रु मित्र होता है। इस मान्यता पर राज्य और सांसारिक जीव कार्य करते भी देखे जाते हैं। परन्तु क्या यह मान्यता ठीक है ? यही इस पुस्तक का विषय है।

ज़िनकी दृष्टि केवल बाहरी व्यवहार को देखती है अथवा जो कभी दूर की बात विचार करते ही नहीं, उनको उक्त सिद्धान्त जीवन के व्यवहार की एक महान् धुरी प्रतीत होती है। कार्य और कारणों का गम्भीरता से अध्ययन करनेवालों के लिए 'शत्रु का शत्रु मित्र' वाला सिद्धान्त सर्वथा मिथ्या ही प्रतीत होगा।

यह नहीं कि किसी एक समय पर किसी विशेष परिस्थिति में शत्रु के शत्रु को प्रयोग करना पाप है। ऐसा कई बार किया जाता है। कभी इस प्रयोग का शुभ फल भी होता देखा जाता है, परन्तु यह फल इतना शत्रु के शत्रु के मित्र होने के कारण नहीं होता जितना शत्रु के शत्रु से सहयोग करनेवाले की चतुराई का परिणाम होता है।

चतुर व्यक्ति तो शत्रु के शत्रु को मित्र कहता है, परन्तु उसको मित्र मानता नहीं। सरलचित्त शत्रु के शत्रु को मित्र मान स्वयं किसी न किसी मुसीबत में फँस जाता है। सरलचित्त व्यक्ति शत्रु के स्वभाव और उद्देश्य को भूल जाता है। अपनी इस भूल और विश्वास पर उसके लिए पश्चात्ताप के अतिरिक्त अन्य कुछ करने को रह ही नहीं जाता।

राजनीति में भी, जहाँ सतत सतर्कता एक अत्यावश्यक व्यवहार है, 'शत्रु का शत्रु मित्र' का सिद्धान्त सदैव मिथ्या सिद्ध हुआ है। जहाँ कहीं भी शत्रु के शत्रु से किसी प्रकार का लाभ उठाया गया है वह जागरूकता से शत्रु के शत्रु को एक संदिग्ध साथी मानकर ही उठाया गया है।

विश्वव्यापी द्वितीय जर्मन युद्ध ने इसका उदाहरण इतने स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया था कि इस विषय में दो मत हो ही नहीं सकते। इस युद्ध के आरम्भ में तो नाज़ी जर्मनी और सोवियत संघ की मित्रता हो गई, परन्तु शीघ्र ही दोनों में जंग छिड़ गई। इस समय अंग्रेज़ों ने समझा कि जर्मनी उनका शत्रु है और जर्मनी का शत्रु सोवियत रूस है, अतः इससे मित्रता कर लेनी चाहिए। युद्ध में सहयोग तो हुआ, परन्तु मित्रता नहीं हुई। कुछ अंग्रेज़ और अमेरिका के अधिकारी रूस के भुलावे में आ गए और उसको मित्र समझ बैठे। परिणाम भयंकर ही हुए थे।

सत्य तो यह है कि मित्र होने के लिए स्वभाव, जीवन-लक्ष्य और व्यवहार में समानता आवश्यक है। इन लक्षणों के अभाव में कोई शत्रु का मित्र हो अथवा शत्रु का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु, कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता।

कभी भावुकता अथवा सामयिक परिस्थितियाँ वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं होने देतीं। समय पर वस्तुस्थिति प्रकट हुए बिना नहीं रहती।

कुछ शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मित्रता और शत्रुता में मानसिक अवस्था कारण होती है। व्यवहार, जो परिस्थितियों से विवश होकर स्वीकार किया जाता है, मित्रता अथवा शत्रुता का सूचक नहीं हो सकता।

शेष तो यह कहानी है जिसमें पात्र, स्थान और घटनाएँ काल्पनिक ही हैं।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशोध

प्रथम परिच्छेद

पद्मजीतसिंह ज़िला रायबरेली की एक छोटी-सी ज़मींदारी का मालिक था। उसका लड़का लखनऊ में ताल्लुकेदारों के स्कूल में पढ़ता था। लड़के की पढ़ाई का खर्चा दो सौ रुपए मासिक पड़ जाता था। पढ़ाई तो उस स्कूल में जैसी होती थी वह थी ही; हाँ, वहाँ अभिमान और निर्धनों के प्रति घृणा सीखने का बहुत अच्छा अवसर मिलता था। पद्मजीतसिंह के लड़के का नाम पृथिवीपालसिंह था। अभी छठी श्रेणी में ही पढ़ता था कि उसको यह ज्ञान हो गया था कि उसका पिता ज़मींदार है और उसकी भूमि पर कई सौ परिवार बसे हुए हैं। उसको यह भी अनुभूति होने लगी थी कि वे सब परिवार उसके पिता जी की भूमि जोतते, बोते और उसीसे निर्वाह करते हैं। यदि वह भूमि उनसे छीन ली जाए तो वे भूखों मर सकते हैं।

ज़मींदार पद्मजीतसिंह कुरेड़ी गाँव में एक बहुत बड़ी हवेली में रहता था और उसमें उसके भाई-बन्धु, बहन-बहनोई प्रायः आकर टिके रहते थे। हवेली, जो कोट कहाती थी, इन सगे-सम्बन्धियों से प्रायः भरी रहती थी। पृथिवीपालसिंह ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों में घर आया था और कोट में बहुत भारी भीड़ एकत्रित देख बेचैनी अनुभव करने लगा था। स्कूल के होस्टल में उसको रहने के लिए एक पृथक् कमरा मिला हुआ था। कमरा तो कोट में भी उसके रहने के लिए पृथक् था, परन्तु इस बार सम्बन्धियों की भीड़ अधिक होने से उसकी बुआ का लड़का दुर्गानन्दनसिंह वहाँ टिका हुआ था।

दुर्गानन्दनसिंह पृथिवीपालसिंह से आठ वर्ष बड़ा था। कॉलेज से बी० ए० पास कर अब वह घर का काम-काज सँभालता था। ईसाई स्कूलों में सीखी जानेवाली बुराइयों के अतिरिक्त वह और विषयों में भी बहुत-कुछ जानता था। वह अच्छी और बुरी बातों का एक विचित्र सम्मिश्रण बन गया था।

पृथिवीपालसिंह इस बार लखनऊ से आया तो अपने कमरे में दुर्गानन्दन को डटकर बैठा देख द्वार पर ही खड़ा रह गया। दुर्गानन्दन कुर्सी पर बैठा सामने मेज़ पर दर्पण रख दाढ़ी बना रहा था। मेज़ पर हजामत बनाने का सामान रखा हुआ था।

दिन के ग्यारह बजे थे। पृथिवीपालसिंह लखनऊ से स्नान और नाश्ता करके चला था। प्रातः दस बजे की गाड़ी से रायबरेली पहुँचा था और पिता की भेजी घोड़ागाड़ी में सवार हो स्टेशन से साढ़े दस बजे कुरेड़ी पहुँच गया था। गाड़ी से उतर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ से मिल और पिता को नमस्कार कर वह अपने कमरे में पहुँचा तो अपने फुफेरे भाई को नाइट ड्रेस में हजामत बनाते देख पहले तो विस्मय में खड़ा रह गया, फिर आहिस्ता-आहिस्ता बात समझ खिलखिलाकर हँस पड़ा।

दुर्गानन्दन उसके हँसने का कारण नहीं समझ सका। वह एक गाल पर का साबुन उस्तरे से उतारते हुए घूमकर पृथिवीपाल की ओर देख बोला, "वहाँ खड़े क्या हा-हा कर रहे हो? भीतर आओ बेटा! बड़े भाई को 'पाये लागूँ' करो और फिर मुझसे आशीर्वाद लो।"

इससे तो पृथिवीपाल और भी ज़ोर से हँसा। इस समय तक वह भीतर कमरे में आ गया और दुर्गानन्दन के मुख पर ध्यान से और समीप से देखने लगा।

"अबे बच्चू! मैं दुर्गानन्दन हूँ। तुम्हारे बाप के बहनोई का लड़का। अब भी पहचाना कि नहीं?"

"भैया! पहचाना तो है। मैं तो यह देख रहा हूँ कि यह हजामत किसकी कर रहे हो। तुम्हारी ठुड्डी पर बाल तो एक भी दिखाई नहीं देता?"

"बैठो, पृथिवी! तुमको चश्मा लगाने की आवश्यकता है। ज़रा ठहरो। बकाया हजामत बना लूँ तो फिर तुमको फिरोज़ चश्मेवाले के पास ले चलूँगा।"

"और दादा! अभी सोकर उठे हो?"

"हाँ, तो क्या इस समय सोकर उठना पाप है?"

"नहीं भैया, पाप नहीं, पुण्य कर रहे हो। मगर तुमको इस कमरे में किसने ठहराया है?"

"तुम्हारी माँ के पति ने। उसको भी जानते हो कि नहीं?"

"तुम गँवार के गँवार ही रहे! तुमको बिल्कुल बात करने की अक्ल नहीं। और मैं समझता हूँ कि तुम-जैसे बेवकूफ से मेरा निर्वाह कठिन है। मुझको रात सोने का प्रबन्ध कहीं अन्यत्र करना होगा।"

"तो यह रात होने तक विचार कर लेंगे। बैठो, अभी तो यह बताओ कि कब आए हो?"

पृथिवीपाल हँस पड़ा और पलँग पर बैठ गया। वहाँ दूसरी कुर्सी नहीं थी। सामने दीवार के साथ नौकर उसका सूटकेस और बिस्तर रख गया था। पृथिवीपाल विचार कर रहा था कि वह अपना सूटकेस खोले अथवा अपने पिता के पास जाकर कहे कि उसके लिए पृथक् कमरा दिया जाए।

दुर्गानन्दन हजामत समाप्त कर उठा और ब्रश तथा सेफ्टी रेज़र लेकर कमरे के बाहर तिपाई पर रखे गगरे में से जल लेकर उनको धोने लगा। ब्रश, रेज़र और प्याला धोने में उसे पर्याप्त समय लग गया। इस समय तक पृथिवीपाल मन में निश्चय कर चुका था कि वह कुरेड़ी में ही नहीं रहेगा; उसको अपने फुफेरे भाई की निन्दा करने की अपेक्षा पहाड़ पर जाने का कार्यक्रम बना घर से ही छुट्टी ले लेनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उठा और पिताजी को अपनी इच्छा बताने के लिए चल पड़ा। पिताजी आज शतरंज की बाज़ी लगाए बैठे थे। उनके सामने खेलनेवाला इलाहाबाद का वकील था। वह ज़मींदारी के किसी मुकद्‌दमे के संबंध में आया हुआ था, और अभी जाने का समय न होने के कारण शतरंज खेलकर समय निकाल रहा था। कुछ अन्य सम्बन्धी दोनों का खेल देख रहे थे। वकील साहब हार रहे थे और बाबू साहब जीत रहे थे। ज्यों-ज्यों वकील साहब हार रहे थे और बाबू साहब जीत रहे थे, ज्यों-ज्यों वकील साहब के प्यादे और मोहरे कट रहे थे, सब वाह-वाह कर रहे थे और वकील साहब प्रत्येक हार पर हँस देते थे।

पृथिवीपाल कुछ देर तक खड़ा-खड़ा उनका खेल देखता रहा। एकाएक उसकी समझ में आया कि वकील साहब तो जान-बूझकर हार रहे हैं। इसको वकील साहब की खुशामद समझ उसको खेल में रस नहीं आया और वह पिताजी के खाली होने की प्रतीक्षा में वहाँ ठहरना उचित न समझ बाहर निकल आया। द्वार पर चौकीदार हाथ में बन्दूक लिये खड़ा था। वह पृथिवीपालसिंह को कोट से निकलता देख सलाम कर पूछने लगा, "भैया ! कब आए हो ?"

"अभी आया हूँ बटनसिंह ! क्यों, तुम किसलिए पूछ रहे हो ?"

बटनसिंह मुस्कराया और बोला, "श्रीपति आपके विषय में पूछ रहा था।"

पृथिवी को श्रीपति की याद ही नहीं रही थी। वह उसका बचपन का साथी था। स्कूल में भरती होने से पहले दोनों गहरे मित्र थे। पीछे श्रीपति गाँव के स्कूल में भरती हो गया और पृथिवीपाल लखनऊ के स्कूल में। इसपर भी जब पृथिवी गाँव में आता, दोनों मिलते-जुलते और खेतों तथा जंगल में घूमते रहते थे।

एक बात हो रही थी कि पृथिवीपाल और श्रीपति को अपनी सामाजिक स्थिति में अन्तर का ज्ञान होता जा रहा था। बाबू साहब अपने चौकीदार के लड़के से अपने लड़के का मेल-जोल पसन्द नहीं करते थे और वे जहाँ अब श्रीपति को मुख नहीं लगाते थे वहाँ पृथिवीपाल को भी कहा करते थे कि गाँव के लोगों से मित्रता का कुछ प्रश्न ही नहीं। वे हमारी प्रजा हैं और श्रीपति एक दिन उसकी प्रजा बननेवाला है।

अपने स्कूल के मास्टरों के नित्य यह बताने पर कि वहाँ पढ़नेवाले समाज में नेता का पद रखते हैं, और साधारण स्कूलों में पढ़नेवाले छोटे दर्जे के लोग हैं, पृथिवी के मन में अभिमान की मात्रा द्रुत गति से बढ़ रही थी। घर पिताजी के कहने और स्कूल की इस शिक्षा के प्रभाव से श्रीपति विस्मृत होता जा रहा था।

जब बटनसिंह ने बताया कि उसका बेटा उसको स्मरण कर रहा था तो उसके मन में विचार उठा कि श्रीपति से मिला जाए। एक बार उसके मन में यह भी विचार उठा—किसलिए मिला जाए ? परन्तु तुरन्त ही उसको कारण जानने की बात भूल गई और वह बचपन के संस्कारों से प्रेरित बटनसिंह के घर की ओर चल पड़ा।

बटनसिंह को यह स्वाभाविक ही प्रतीत हुआ था। बचपन के काल में तो पृथिवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके ही घर में घुसा रहता था और श्रीपति की माँ से गुड़-चबैना छीनकर खा जाया करता था। अब उतनी घनिष्ठता नहीं रही थी। इसपर भी श्रीपति उसको याद करता रहता था और अब पृथिवीपाल को भी श्रीपति की ओर जाते देख बटनसिंह को समझ में आया कि अभी बचपन की मित्रता स्थिर है।

२

श्रीपति ज़मींदार के लड़के से स्नेह रखता था। दोनों बचपन में कई प्रकार के खेल-कूद और बातों तथा कल्पनाओं में इतने एक-दूसरे के साथ-साथ रह चुके थे कि श्रीपति इसको भूल नहीं सका था। उस समय तो पृथिवी प्रत्येक बात में उससे बाज़ी ले जाता था।

बातों और कल्पनाओं में भी पृथिवी श्रीपति से आगे रहता था। इसमें कारण दोनों के घरों का वातावरण था। दोनों के घरों में भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें और प्रथाएँ चलती थीं। दोनों के श्रुत तथा दृश्य ज्ञान में अन्तर था।

परन्तु जब स्कूल भिन्न-भिन्न हुए, अध्यापक भिन्न-भिन्न हुए और उनकी शिक्षा भिन्न हुई तो श्रीपति पृथिवी से बाज़ी ले-जाने लगा था। वह देहात के स्कूल के लड़कों से लड़ता-झगड़ता और कबड्डी-कुश्ती खेलता हुआ पृथिवी से शरीर में सुदृढ़ हो रहा था। स्कूल की पढ़ाई में भी वह अपने पर ही निर्भर करने के कारण द्रुत गति से उन्नति कर रहा था।

पृथिवीपाल के लिए न तो शारीरिक संघर्ष था और न ही मानसिक। सब-कुछ स्कूल मास्टर, होस्टल के नौकर और घर पर नौकर-चाकर कर देते थे। पढ़ाई के विषय में भी वह मास्टरों से सीमा से अधिक आश्रय ले रहा था। अतः वह धीरे-धीरे इस विषय में भी श्रीपति से पीछे रहता जाता था।

इसपर भी पृथिवीपाल को इस बात का ज्ञान नहीं था। इसके विपरीत श्रीपति अपनी विशिष्टता को अनुभव करने लगा था।

पृथिवीपाल ने बटनसिंह के द्वार पर खड़े होकर आवाज़ लगाई तो श्रीपति धोती-कुर्ता पहने पाँव तथा सिर से नंगा भागा-भागा घर के द्वार पर चला आया और पृथिवीसिंह को नेकर-कमीज़ और सिर पर सोला हैट लगाए तथा घुटनों तक मोज़े और बूट पहने खड़ा देख एक क्षण के लिए तो अपने और उसमें अन्तर देख ठिठककर खड़ा रह गया, फिर आगे बढ़कर बोला, "भैया! तुम आ गए? सब ठीक है?"

पृथिवीपाल उसकी बाँह में बाँह डालता हुआ बोला, "क्या कर रहे हो?"

"छुट्टियों का काम कर रहा हूँ।"

"कब से छुट्टियाँ हैं?"

"कल से ही। आज छुट्टियों का पहला दिन है।"

"और आज से ही बैल की भाँति जुट गए हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपति ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं आज प्रातः से ही तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। विचार था कि दो सवाल और हल कर कोट में पहुँच पता करूँगा।

"वैसे मैं कल वहाँ गया था और तुम्हारा कमरा खुला देख वहाँ जा पहुँचा और वहाँ एक अन्य प्राणी को मज़े में तुम्हारे पलँग पर लेटे देख विस्मय में मुख देखता रह गया। मैं तो बिना बात किए लौट आनेवाला था कि उसने बुला लिया और मुझको सामने खड़ा कर मेरे विषय में पूछने लगा। जब सब-कुछ जान गया तो पूछने लगा कि क्या कोट में प्रवेश करने से मुझे किसीने रोका नहीं?

"मैंने उसको बता दिया कि मुझे कोट के किसी भी भाग में जाने की मनाही नहीं है।

"उसने मेरी ओर आँखें फाड़कर देखा और फिर कहने लगा कि वह मुझे कोट में आने के लिए मना करता है। कहने लगा, 'भाग जाओ नहीं तो कान मरोड़कर नानी याद करा दूँगा!'

"तब मैं वहाँ से चला आया।"

"चलो, उस इन्दारा तक चलें, जूता पहन लो।"

"भैया! जूता नहीं है, मैं ऐसे ही चलूँगा।"

"तो स्कूल में भी नंगे ही पाँव जाते हो?"

"हाँ, जब है ही नहीं तो कहाँ से पहनूँ!"

दोनों मित्र कुएँ की ओर चल पड़े। गाँव से आधा कोस दूर एक बहुत बड़ा कुआँ था और इन दोनों को उस कुएँ की जगत पर बैठने का अभ्यास था।

श्रीपति और पृथिवीपाल एक ही आयु के थे। दोनों के जन्मदिवस में एक मास का अन्तर था। श्रीपति छोटा था। इसपर भी श्रीपति ज़मींदार के लड़के से दो अंगुल ऊँचा हो गया था। उसकी छाती और गर्दन भी मित्र से मज़बूत हो गई थी।

श्रीपति के कहने पर कि उसके पास जूता नहीं है, पृथिवीपाल के दिमाग में वे सब बातें प्रस्फुटित होने लगीं जो उसका पिता और स्कूलमास्टर उसके कान में भरा करते थे। उसने कहा, "पाँव में ठोकर लग जाए तो?"

"नहीं लगती। मैं तो नंगे पाँव ही फुटबाल भी खेल लेता हूँ।"

पृथिवी विस्मय में उसके पाँव देखने लगा तो श्रीपति ने बात बदल दी और कहने लगा, "भैया! इस वर्ष मैंने परीक्षा में बहुत अच्छे अंक लिये तो हैडमास्टर ने मुझे दो श्रेणियाँ चढ़ा दिया है और अब मैं सातवीं श्रेणी में हूँ।"

"बहुत मूर्ख है तुम्हारा मास्टर।"

"और इस त्रैमासिक परीक्षा में मैं सातवीं श्रेणी में भी प्रथम रहा हूँ।"

"तो तुम्हारे स्कूल में सब बुद्धू ही पढ़ते हैं?"

"हाँ भैया! मैंने छठी श्रेणी की हिन्दी तथा अंग्रेज़ी की सब किताबें घर पर ही पढ़ ली थीं। केवल एक-दो बार मास्टरजी से सहायता लेनी पड़ी थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम अंग्रेज़ी में चिट्ठी लिख सकते हो ?"

"हाँ।"

"पर तुम और बहुत-सी बातें नहीं जानते।"

"क्या ?"

"तुम जानते हो कि हिन्दुस्तान में कितने सूबे हैं ?"

"हाँ, ज्योग्राफी की किताब में लिखा है। आठ सूबे हैं।"

"सूबे के हाकिम को क्या कहते हैं ?"

"गवर्नर।"

"हमारे सूबे का क्या नाम है ?"

"संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध।"

"इसको ऐसा क्यों कहते हैं ?"

"पहले दो प्रान्त पृथक्-पृथक् थे। अब इनको इकट्ठा कर दिया गया है। इसपर भी दोनों के कई-कई कायदे-कानून अभी भी भिन्न-भिन्न हैं।"

पृथिवीपाल समझ गया कि इस बात को भी उसका मित्र उससे अधिक जानता है। इस कारण इस बात को उसके मन पर अंकित करने के लिए कि वह उससे छोटा है, उसने कुछ उन विषयों पर बात आरम्भ कर दी जो स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त थी।

उसने पूछा, "अच्छा श्रीपति ! यह तो बताओ कि यहाँ के शहंशाह का क्या नाम है ?"

"जार्ज पंचम दि किंग ऑफ इंग्लैंड ऐण्ड एम्परर ऑफ इंडिया, सीलोन एण्ड बर्मा।"

"यह क्यों, इंग्लैंड का किंग और हिन्दुस्तान का एम्परर में क्या भेद है ?"

"इसलिए कि वह इंग्लैंड का रहनेवाला है और हिन्दुस्तान-जैसे एक पराये देश पर राज्य करता है।"

"तो वह एम्परर हो गया ?"

"हाँ, मगर हमको इसका राज्य यहाँ से हटाना है।" अब श्रीपति भी वैसी ही बात करने लगा था जैसी स्कूल के बाहर की बात पृथिवीपालसिंह ने की थी।

"कैसे हटाओगे ?"

"लड़कर।"

पृथिवीपाल हँस पड़ा। बोला, "हम सब राजा-महाराजा, किंग एम्परर की तरफ से लड़ेंगे। हम उसके राज्य को यहाँ रखेंगे और जो भी उसके बरखिलाफ होगा उसे मार डालेंगे।"

"परन्तु भैया ! राजा-महाराजा तो थोड़े-से हैं न ? उनके लड़ने से क्या होगा ? प्रजा तो बहुत ज़्यादा है !"

"मगर सेना हमारी तरफ होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बात श्रीपति की बुद्धि पार करने लगी थी। जो कुछ लड़ने की बात उसने कही थी वह उसके मास्टर ने एक दिन बताई थी। उसे राजा-महाराजाओं के विषय में तथा सेना के विषय में बात नहीं बताई गई थी।

यह सन् १९२० की बात थी। जर्मनी का अंग्रेज़ों से युद्ध हो चुका था। अंग्रेज़ अमेरिका की सहायता से विजयी हो गए थे। इस युद्ध पर चर्चा करते हुए मास्टर ने बताया था कि एक दिन वे भी अंग्रेज़ों से लड़ेंगे। इसपर उसने किंग तथा एम्परर शब्दों की व्याख्या भी की थी। इसी सम्बन्ध में उसने बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, दादाभाई नौरोजी, गोखले इत्यादि देश के नेताओं की बातें भी बताई थीं।

जब पृथिवीपालसिंह ने सेना की बात की तो श्रीपति उसका मुख देखता रह गया। इसपर पृथिवीपाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। और बोला, "देखो, तुम मुझसे कम जानते हो।"

"हाँ भैया! लखनऊ के मास्टर अधिक पढ़े-लिखे हैं।"

इसपर पृथिवीपाल ने इस पाँव और सिर से नंगे अपने साथी के मन पर यह अंकित कर दिया कि वह उससे कम-से-कम इस ज्ञान में अधिक है।

श्रीपति ने बात बदलकर कहा, "भैया! कल तुम्हारे कमरे में कौन टिका था?"

"वह मेरी बुआ का लड़का दुर्गानन्दनसिंह है। वह अब भी वहीं टिका हुआ है।"

"बहुत ही बदतमीज़ है।"

"श्रीपति! वह हमसे बड़ा है, इसलिए हमारे कान भी मरोड़ सकता है।"

"क्यों?"

"उसका विचार होगा कि तुमको कोट में नहीं आना चाहिए। वह अपने को बाबू साहब का सम्बन्धी जो मानता है!"

"पर मैं तुम्हारा दोस्त जो हूँ! मैंने उसको बताया भी था।"

"इसपर भी मित्रता से रिश्तेदारी बड़ी बात है।"

श्रीपति गम्भीर हो गया। वह इसके अर्थ विचार करने लगा। इसपर पृथिवी ने कह दिया, "देखो, मैं यहाँ के ज़मींदार का लड़का हूँ। इस कारण मेरी और तुम्हारी इज़्ज़त में अन्तर है।"

"पर मैंने उसको अपनी इज्ज़त करने के लिए तो नहीं कहा था?"

"कोट में जाना भी तो एक इज़्ज़त ही है!"

"परन्तु पहले तो मैं सब जग्ह जाता था? कल भी सीता ने मुझसे पूछा था कि अब मैं माताजी से मिलने के लिए क्यों नहीं आता?"

"ओह! वह तुमको कहाँ मिली थी?"

सीता पृथिवीपाल की सौतेली बहन का नाम था। वह पृथिवीपाल से पाँच वर्ष छोटी थी। श्रीपति ने उत्तर दिया, "कोट में। मैं तुम्हारे कमरे से उस भयानक जानवर से डरकर लौट रहा था कि वह सामने से आती हुई मिल गई। उसके साथ मैं उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी के पास गया। पाय लागूँ की तो उन्होंने पीठ पर हाथ फेरकर प्यार किया, खाने को मिठाई दी और जब मैंने बताया कि मैंने एक वर्ष में दो श्रेणियाँ पास की हैं तो उन्होंने मुझे एक पुस्तक इनाम में भी दी।"

श्रीपति ने यह बात यह प्रकट करने के लिए बताई थी कि उसके अन्य सम्बन्धी उसकी इज़्ज़त करते हैं। परन्तु पृथिवीपाल इसको एक दूसरे ढंग से विचार करता था। वह समझता था कि श्रीपति बटनसिंह चौकीदार का लड़का है, और नौकरों के लड़कों को इनाम-इकराम मिलता रहता है।

परन्तु उसने बात बदलकर बताया, "मैं किसी पहाड़ पर जाने का विचार कर रहा हूँ।"

"कहाँ ?"

"जहाँ पिताजी भेज दें।"

श्रीपति ने उत्तर में केवल एक दीर्घ निःश्वास छोड़ दिया। पृथिवी का ध्यान उस ओर नहीं था। उसने कहा, "यदि मैं जा सका तो तुमको साथ ले चलूँगा।"

"बहुत कठिन है।"

"क्यों, खर्चा तो पिताजी देंगे।"

"इसपर भी मुझे स्कूल का काम तो करना ही है।"

"किताबें वहीं ले चलेंगे।"

"और भैया, तुम्हारे साथ कौन जाएगा ?"

"मैं तो केवल एक नौकर को ही साथ ले जाना चाहूँगा।"

"असम्भव है, बाबू साहब जाने नहीं देंगे।"

"यह कैसे कहते हो ?"

"अच्छा, देख लेना।"

३

पृथिवीपाल के पहाड़ जाने पर बहुत विचार हुआ। पृथिवीपाल का कहना था, "हमारे स्कूल के प्रायः सब विद्यार्थी किसी-न-किसी पहाड़ पर जा रहे हैं। हमारा हेडमास्टर कहता था कि इससे ज्ञान-वृद्धि और चरित्र-निर्माण होता है।"

पहले ही दिन मध्याह्न के भोजन के बाद यह बात हो रही थी।

पद्मजीतसिंह यह समझ नहीं सकता था कि ग्यारह वर्ष का लड़का माता-पिता के बिना किस प्रकार परदेस जा सकता है। पृथिवीपाल की माता भी यही समझती थी और वह चाहती कि वह अपने माता-पिता के साथ ही पहाड़ पर क्यों न जाए। सब धनी-मानी लोग जाते हैं। बाबू साहब समझते थे कि घर पर बीस से अधिक सम्बन्धी आए हुए हैं, उनको छोड़कर वे जा नहीं सकते।

पृथिवी की माता नर्मदारानी ने कहा, "सम्बन्धियों को कह दिया जाए कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ पर जा रहे हैं। इससे वे शीघ्र ही विदा हो जाएँगे। उनका यहाँ आकर टिक जाना भी तो किसी प्रयोजन से नहीं है।"

पद्मजीतसिंह समझता था कि इस प्रकार तो सम्बन्धियों का अपमान हो जाएगा। वह ऐसा करना नहीं चाहता था। इसपर पृथिवी की माता ने कह दिया, "तो पृथिवी, तुम पहाड़ पर नहीं जा सकते।"

"माँ! क्यों?"

"हम तुमको अकेले नहीं जाने देंगे।"

"मैं किसी आदमी को साथ ले जाऊँगा।"

"किस आदमी को साथ ले जाओगे?"

"बटनसिंह चौकीदार को।"

"तुम उसको आदमी समझते हो? वह तो महामूर्ख है!" पद्मजीतसिंह ने कहा।

"पिताजी! वह कलकत्ते में नौकरी कर चुका है।"

"नहीं, तुम उसके साथ अकेले नहीं जा सकते।"

"तो माताजी को साथ भेज दीजिए।"

"घर पर भी तो कोई रहेगा कि नहीं?"

"छोटी माँ जो हैं!"

पृथिवीपाल का अभिप्राय अपनी विमाता विन्ध्यवासिनी से था।

पृथिवीपालसिंह की माता से पृथिवीपाल के उत्पन्न होने के चार साल तक जब कोई अन्य सन्तान उत्पन्न नहीं हुई तो उसके पिता ने दूसरा विवाह करने का विचार किया। सम्भवतया वे न भी करते यदि विन्ध्यवासिनी के सौन्दर्य की चर्चा उनके कानों में न पड़ती।

विन्ध्यवासिनी के पिता वहीं ज़मींदारी में एक छोटे-से काश्तकार थे। तीस बीघा भूमि थी। विन्ध्यवासिनी का भाई लखनऊ में नौकरी करता था। इस प्रकार निर्वाह हो रहा था।

जब विन्ध्यवासिनी के सौंदर्य की चर्चा बाबू साहब के कान में पहुँची तो उन्होंने लड़की के पिता को, जिसका नाम विजयबहादुरसिंह था, बुलवाया और अपनी सन्तानोत्पत्ति की इच्छा व्यक्त कर उसकी लड़की माँग ली।

विजयबहादुर ने बताया, 'सरकार! लड़की की सगाई देहरा के बाबू साहब के तीसरे लड़के महीपालसिंह के साथ हो चुकी है।'

'तो अब सगाई टूट नहीं सकती?'

'सरकार, फौजदारी हो जावेगी।'

'तुम बताओ कि क्या चाहते हो। हम तुमको प्रसन्न कर देंगे।'

'मुझे तो कोई आपत्ति नहीं है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर घर जाकर चुपचाप बैठो। कल हम कुछ बरातियों के साथ आवेंगे। विवाह होगा और डोला ले आवेंगे। फौजदारी का प्रबन्ध हम कर लेंगे। आज राज अंग्रेज़ का है, नवाबी राज्य नहीं है।'

पद्मजीतसिंह कुछ ऊँची पदवी का ज़मींदार माना जाता था। इस कारण लड़की का पिता मान गया। देहरावाले तो दहेज भी माँग रहे थे।

अगले दिन विवाह हो गया। परन्तु जब विवाह हो रहा था, विजयबहादुर के किसी शत्रु ने घोड़ा जोता और देहरा सूचना देने के लिए चला गया।

देहरावालों ने इसको अपना भारी अपमान समझा और सूचना पाते ही लठैत लेकर विजयबहादुर के गाँव की ओर चल पड़े। उनका विचार था कि वे विवाह से पहले ही वहाँ पहुँचकर लड़की को बलपूर्वक उठा लावेंगे। तब विवाह देहरा में आकर लेंगे।

परन्तु पद्मजीतसिंह विवाह की सब सामग्री और ब्राह्मण अपने साथ ही लाया था और दो घंटे में ही विवाह कराकर लौट गया।

विजयबहादुर देहरावालों से किसी प्रकार के झगड़े की आशंका तो करता ही था, इस कारण विवाह समाप्त होते ही वह अपनी पत्नी के साथ रायबरेली स्टेशन के लिए रवाना हो गया।

विवाह होने के दो घंटे बाद देहरावाले अपने दल के साथ वहाँ पहुँचे और विजयबहादुर का मकान बन्द पा उन्होंने उसको आग लगाकर फूँक दिया। उसके खलिहान और पशुशाला को भी आग लगा दी। वहाँ से वे सब फिर कुरेड़ी के लिए चल पड़े।

यदि वे विजयबहादुर के मकान तथा अन्य सम्पत्ति को नष्ट करने में अपना समय न गँवाते तो कदाचित् पद्मजीतसिंह को मार्ग में ही पकड़ लेते और विन्ध्यवासिनी का अपहरण कर लेते। किन्तु अब वे पीछे रह गए थे और पद्मजीतसिंह अपनी नई पत्नी को लेकर अपने कोट में पहुँच गया था। विजयबहादुर के गाँव का एक आदमी देहरावालों के वहाँ पहुँचने से पूर्व ही उनके आने का समाचार लेकर वहाँ पहुँच गया। अतः पद्मजीतसिंह ने अपने गाँव में एक सौ से अधिक लाठी और बन्दूकधारी जवानों को एकत्रित कर लिया था। इसके अतिरिक्त उसने रायबरेली थाने में इस सम्भावित आक्रमण की सूचना भी दे दी।

जब देहरा के लोग कुरेड़ी पहुँचे तो दोनों पक्षों के लोगों में नारेबाज़ी होने लगी। देहरावाले समझ गए कि यहाँ मुकाबला तगड़ा है। इस कारण एकदम जूझ जाने की अपेक्षा वे दूर खड़े-खड़े घुड़कियाँ देते रहे। पद्मजीतसिंह और उसका चौकीदार बटनसिंह अपनी बन्दूकें साधे अपनी चौपाल पर खड़े थे। उसके आदमी लाठी लिये चौपाल और कोट के द्वार पर तैनात थे। पद्मजीतसिंह की आज्ञा थी कि जब तक देहरावाले कोट पर आक्रमण करने के लिए कोट के नज़दीक न आवें तब तक इधर से आक्रमण न किया जाए।

अभी दोनों ओर से ललकारा ही जा रहा था, रायबरेली से पुलिस आकर दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलों के बीच में खड़ी हो गई।

पुलिस को देखते ही देहरावाले भाग खड़े हुए।

पद्मजीतसिंह की पहली पत्नी देहरा के बाबू छोटेलाल की छोटी साली थी। उसके और उसके माता-पिता के बीच-बचाव से विजयबहादुर के मकान को आग लगाने की बात रफा-दफा हो गई। छोटेलाल के लड़के संगीन जुर्म में फँसते-फँसते बच गए।

सौभाग्य की बात कि विन्ध्यवासिनी के आते ही उसके गर्भ ठहर गया और एक वर्ष के भीतर ही उसने एक कन्या को जन्म दे दिया जिसका नाम सीता रखा गया।

यह घटना सन् १९१३ की थी। सीता का जन्म १९१४ में हुआ था और अब वह छः वर्ष की थी।

जब पृथिवीपाल ने कहा कि छोटी माँ यहाँ कुरेड़ी में रहकर कोट का प्रबन्ध कर लेंगी तो नर्मदारानी ने कहा, "मैं चल तो सकती हूँ मगर मेरे साथ भी एक नौकरानी और एक चौकीदार होना चाहिए।"

पद्मजीतसिंह ने प्रस्ताव स्वीकार किया तो पृथिवीपाल बोला, "पिताजी! मैं तो आज ही जाना चाहता हूँ।"

"इतनी जल्दी की क्या आवश्यकता है?"

"मैं तो यहाँ एक रात भी रहना नहीं चाहता।"

"क्यों?"

पृथिवीराज कहना चाहता था कि वह दुर्गानन्दन के साथ रहना नहीं चाहता, किन्तु उसने ऐसा कहा नहीं। उसको सन्देह था कि इस बात से पिताजी नाराज़ हो जावेंगे। इस कारण ऐसा कहने की अपेक्षा उसने कह दिया, "मेरे लिए सोने की जगह तक तो यहाँ है नहीं। मेरे कमरे में तो दुर्गा दादा डटे हुए हैं।"

"ओह! तो तुम्हारे कमरे में एक पलँग और डलवा दिया जावेगा।"

"इसपर उनके रहते वहाँ पढ़ाई तो हो नहीं सकती।"

"दो दिन पढ़ाई से आराम कर लेना।"

"तो क्या अब मैं छोटी माँ से कह दूँ कि हम पहाड़ पर जानेवाले हैं?"

"तुम मत कहना, मैं स्वयं कह लूँगा।"

४

नर्मदा के मन में किसी प्रकार का अज्ञात भय सदा ही समाया रहता था। वह अपने बहनोई छोटेलाल के स्वभाव को भली-भाँति जानती थी। विन्ध्यवासिनी के विवाह के समय भी उसने बहुत झगड़ा किया था।

यह समझा जाता था कि अंग्रेज़ी राज्य के बाद हिन्दुस्तान में शान्ति-व्यवस्था बन गई है। धनी और शक्तिशालियों को मनमानी करने का अवसर नहीं रहा। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विन्ध्यवासिनी के विवाह के समय जो कुछ हुआ वह अप्रत्याशित था। न तो विन्ध्यवासिनी के पिता को और न ही पद्मजीतसिंह को इतने झगड़े की आशा थी।

पद्मजीतसिंह यह मामला पुलिस में नहीं ले-जाना चाहता था। परन्तु विजयबहादुर के गाँववाले ने रिपोर्ट लिखा दी थी। छोटेलाल के दो लड़के तथा कुछ अन्य लोग, जो लापता थे, बलवा और आगज़नी करने के आरोप में पकड़ लिये गए।

मुकद्दमा ठंडा किया गया। ऐसा करने के लिए पुलिस की मुट्ठी गरम करनी पड़ी। विजयबहादुर को हानि से दुगुना खर्चा देना पड़ा। यह सुलह पद्मजीतसिंह ने कराई थी। छोटेलाल के आदमी छूट तो गए, परन्तु अपने लड़के के लिए मँगनी की हुई लड़की के किसी दूसरे के घर में विवाहे जाने के अपमान से, और फिर अपनी फौजदारी के असफल होने से छोटेलाल जल-भुन गया था।

उसने अपने श्वसुर पर ज़ोर दिया कि नर्मदारानी को पद्मजीतसिंह के घर से ले आया जाए। नर्मदा की माँ आई और उसने उस पर सौत पड़ जाने का प्रतिकार करने के लिए कहा तो नर्मदा ने माँ को कह दिया, "नहीं माँ! मैं पति का घर छोड़कर नहीं जाऊँगी।"

"तो यहाँ सौत के जूते और ताने खाओगी?"

"जब ऐसा होगा, मैं देख लूँगी। अभी तो ऐसी कोई नौबत नहीं आई है।"

"परन्तु तुम्हारी मान-प्रतिष्ठा में तो कमी हुई ही है।"

"ईश्वरेच्छा, और अपने अदृश्यों के सामने मैं क्या कर सकती हूँ! यदि मेरे भाग्य में यह सब-कुछ न होता तो मेरे घर सन्तान हो जाती और फिर यह विवाह न होता। इसमें कौन क्या कर सकता है!⋯नहीं माँ! मैं यह घर नहीं छोडूँगी।"

छोटेलाल ने अपनी साली के मार्ग में और भी प्रलोभन उपस्थित किए, परन्तु वह विचलित नहीं हुई और अपने पति के घर बैठी रही। साथ ही अपने पति के कहने पर वह तब से अपने माता-पिता से भी मिलने के लिए नहीं गई। इस न जाने में भी एक कारण था। वह डरती थी कि उसका बहनोई उसपर किसी प्रकार का अत्यचार भी कर सकता है।

इस घटना को सात वर्ष हो चुके थे। परन्तु उसके मन में छोटेलाल के स्वभाव को जानते हुए, किसी-न-किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका बनी ही रहती थी।

इसपर भी पहाड़ जाने में तीन दिन लग गए। पृथिवीपाल को दुर्गानन्दन के साथ ही कमरे में सोना पड़ा।

दुर्गानन्दन ने इन तीनों में पृथिवीपाल को एक सीमा तक प्रसन्न कर लिया था।

५

नर्मदा पढ़ी-लिखी विदुषी स्त्री थी। वह लखनऊ में ईसाइयों द्वारा चल रहे लड़कियों के कॉलेज में पढ़ी थी। उन दिनों उस कॉलेज में अधिकतर एंग्लो-इंडियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुदाय की लड़कियाँ ही पढ़ती थीं। विरली ही कोई हिन्दुस्तानी लड़की पढ़नेवाली होती थी।

नर्मदा ने कॉलेज में एंग्लो-इंडियन लड़कियों की उच्छृंखलता देखी तो उसने अपनी माँ को लिख दिया और वह आकर उसको कॉलेज से छुट्टी दिलवा ले गई।

उन दिनों वह बी० ए० की प्रथम श्रेणी में पढ़ती थी।

कॉलेज से आने के बाद ही उसका विवाह हो गया। यह सन् १९०८ की बात थी। जब उसके पति ने दूसरा विवाह किया तो उसको भड़काकर अपने मायके चले जाने की प्रेरणा देनेवाली उसकी माँ थी। परन्तु उसने उसकी नहीं सुनी। वह अपने पति के घर में ही बैठी रही। यही कारण था कि वह देहरावालों के विरुद्ध विजयबहादुर के घर को आग लगाने का मुआमला रफा-दफा करने में सफल हो सकी थी।

तब से वह अपनी सौतिन के साथ मेल-मिलाप रखती थी, और वह भी उसको अपनी बड़ी बहन ही मानती थी। पृथिवीपाल और सीता के लिए बड़ी और छोटी माँ बराबर-बराबर ही पदवी रखती थीं।

विन्ध्यवासिनी को यह पता चला कि पृथिवीपाल और उसकी माता पहाड़ पर जा रहे हैं। उसने सीता को भी साथ जाने के लिए तैयार कर दिया। दुर्गानन्दन ने जब इनके जाने का समाचार सुना तो वह भी तैयार हो गया।

जब पृथिवीपाल ने यह सुना तो वह अपनी माँ के पास जाकर कहने लगा, "माँ! दुर्गा को साथ मत ले जाओ।"

"क्यों?"

"वह ठीक आदमी नहीं है।"

"क्या खराबी देखी है तुमने उसमें?"

"माँ! वह ग्यारह बजे तो सोकर उठता है।"

"तो इससे हमको क्या? वह अपना ही जीवन बरबाद कर रहा है।"

"माँ! वह तो गँवारों की-सी बातें करता है।"

"क्या कहता है, भला बताओ तो?"

"कहता था, बच्चू जानते हो, मैं तुम्हारे बाप के बहनोई का लड़का हूँ।"

"ओह! और भी कुछ?"

"हाँ माँ! कहता था, अपनी माँ के खसम से जाकर पूछो।....हमारे मास्टर ने बताया है, जो गँवार भाषा बोले उससे मित्रता मत करो।"

"ठीक है, ऐसे आदमी से मित्रता नहीं करनी चाहिए। परन्तु पृथिवी! संसार में दुर्गा की भाँति के बहुत-से आदमी हैं, यदि उन सबसे भागने लगे तो रहोगे कहाँ? इसलिए इनमें रहते हुए भी इनमें निर्लेप होकर रहना ही चतुराई है। और फिर जहाँ दोष हैं, वहाँ गुण भी कुछ-न-कुछ होते ही हैं। मनुष्य को हंस के समान रहना चाहिए। दूध पी ले और जल छोड़ दे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो बहुत कठिन है।"

"नहीं, बहुत कठिन नहीं है। इसका एक ढंग है—दुर्गा में जो भी बुरी बातें हैं उनको मन में बुरा मान चिन्तन करते रहोगे तो उनको तुम स्वीकार नहीं कर सकोगे। इस प्रकार उन बुरी बातों से बच जाओगे।"

पृथिवीपालसिंह सतर्क हो गया। साथ ही माँ मान गई थी कि बटनसिंह चलेगा और उसका लड़का श्रीपतिसिंह भी चलेगा। इससे वह समझ रहा था कि उसकी पहाड़ की सैर बहुत ही रसपूर्ण रहेगी।

नर्मदा अवध के ज़मींदारों के स्त्रीवर्ग से विलक्षण थी। इसमें एक कारण तो उसकी माता यमुना थी। वह इलाहाबाद के किसी वकील की लड़की थी। संसार के ज्ञान से परिचित और स्त्रीवर्ग की दशा सुधारने के लिए यत्नशील। नर्मदा का पिता भी पढ़ा-लिखा आदमी था और देहरा की ज़मींदारी में एक फार्म का मालिक होने से सामान्य ज़मींदारों से अधिक ज्ञानवान था। नर्मदा स्वयं भी कॉलेज में पढ़ चुकी थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि पद्मजीतसिंह सरलचित्त, उदार विचारोंवाला और नये विवाह के समय पर नर्मदा के व्यवहार से बहुत प्रसन्न था। उसने अपनी बड़ी पत्नी को बहुत स्वतन्त्रता दे रखी थी। उसका विश्वास था कि उसकी बड़ी पत्नी अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग नहीं करेगी।

नर्मदा अपने माता-पिता के घर प्रायः अकेली जाया करती थी। इस बार पहाड़ पर जाने की स्वीकृति तो पृथिवीपाल के आग्रह पर मिली थी। वह प्रसन्न थी और पहाड़ पर डेढ़ महीने के लगभग जीवन में सुख और नए अनुभवों को प्राप्त करने का अवसर मिलने की आशा करती थी।

सीता के साथ चलने से वह कुछ उत्तरदायित्व और बोझा अनुभव करती थी, परन्तु उसका उत्तरदायित्व के काम से भागने का स्वभाव नहीं था।

निश्चित दिन छः आदमी चल पड़े। बटनसिंह पहले ही भेज दिया गया था। उसने जब वहाँ से लिखा कि पन्द्रह रुपए नित्य पर एक 'लॉज' ठीक किया है जिसमें चार कमरे और एक कोठरी तथा रसोई, स्नानागार इत्यादि है, तो ये लोग चल पड़े।

नर्मदा, सीता, पृथिवी और दुर्गानन्दन तो फर्स्ट क्लास में सवार हो गए। श्रीपति और खाना बनानेवाली ब्राह्मणी कमला सरवेंट-क्लास में बैठा दिए गए। इन लोगों ने रायबरेली स्टेशन से पंजाब मेल पकड़ी। वे रात के आठ बजे बरेली पहुँचनेवाले थे। वहाँ से काठगोदाम की गाड़ी रात के बारह बजे चलनेवाली थी। प्रातः छः बजे काठगोदाम, फिर वहाँ से मोटर बस में दस बजे तक नैनीताल पहुँचने का कार्यक्रम था।

दुर्गानन्दन को यह देखकर विस्मय हुआ कि श्रीपति भी साथ चल रहा है। रायबरेली स्टेशन पर जब वह नौकर के डिब्बे में चढ़ने लगा तो उसने कह दिया, "ओ छोकरे! कहाँ जा रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167344
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
R 089.9143 GUR-P

उसका विचार था कि वह गाँव के अन्य लोगों की भाँति उनको विदा करने के लिए ही आया होगा।

श्रीपति ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप कमला के पास जाकर बैठ गया। उस समय तक नर्मदा और पृथिवीपाल अपने डिब्बे में जाकर बैठ गए थे। रायबरेली स्टेशन पर डाकगाड़ी तीन-चार मिनट ही खड़ी होती थी। इस कारण दुर्गानन्दन अपने मन की बात, कि श्रीपति को कान से पकड़कर गाड़ी से उतार दे, नहीं कर सका। गाड़ी ने चलने की सीटी बजा दी। वह लपककर उस डिब्बे में चढ़ने के लिए चला गया जिसमें उसकी मामी और पृथिवीपाल आदि बैठे थे।

गाड़ी चलने पर उसने कहा, "मम्मी! एक गाँव का लड़का भी नौकरों के डिब्बे में जा रहा है!"

"हाँ, वह हमारे साथ है।"

दुर्गानन्दन ने समझा कि वह नौकर के रूप में चल रहा है। उसको पता था कि उसने एक दिन स्वयं को पृथिवीपालसिंह का मित्र बताया था। पर इसे तो वह बालबुद्धि की बात ही समझता था। अब वह नर्मदारानी से 'हाँ' का उत्तर सुन चुप रहा।

लखनऊ स्टेशन पर श्रीपति अपने डिब्बे से निकल प्लेटफॉर्म पर खड़ा था कि दुर्गानन्दन ने अपने डिब्बे से आवाज़ दे दी, "ओ छोकरे!"

इस ओर श्रीपति की पीठ थी, इसलिए श्रीपति ने घूमकर देखा भी नहीं। मानो उसने आवाज़ को सुना ही नहीं। दुर्गानन्दन ने दो बार आवाज़ दी। श्रीपति दूसरी तरफ चल दिया। दुर्गा उसको पकड़ने के लिए जाने ही वाला था कि पृथिवी ने पूछ लिया, "क्या है दादा?"

"उसको कहना था कि यह जल का लोटा भरकर ले आवे।"

"इधर लाओ लोटा, मैं ले आता हूँ।"

दुर्गानन्दन पृथिवी को मना करना चाहता था, परन्तु इससे पूर्व ही उसने लोटा उठाया और गाड़ी से नीचे उतर नल की ओर चल दिया।

श्रीपति कुछ दूर जा अपने व्यवहार की प्रतिक्रिया देखने के लिए घूमा तो उसने पृथिवीपाल को लोटा लिये नल की ओर जाते देखा। अब वह लपककर मित्र के पास पहुँचा और उसके हाथ से लोटा ले जल भरने चल पड़ा।

जब श्रीपति जल भरकर लाया तो दुर्गानन्दन ने डाँट के भाव से कहा, "मेरे कहने पर क्यों नहीं आया था?"

"आपने कब बुलाया था?"

"छोकरे! मैंने तुझे कई आवाज़ें दी थीं।"

"बाबू साहब! मेरा नाम छोकरे नहीं है। मैं श्रीपति हूँ। छोकरे कौन है, मैं नहीं जानता।"

इस पर पृथिवीपाल ने कह दिया, "हाँ दादा! इसका नाम श्रीपति है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गानन्दन ने असन्तोष से नर्मदा की ओर देखा। परन्तु वह बच्चों की बात में दखल देना नहीं चाहती थी, अतः खिड़की से बाहर का दृश्य देखती रही। दुर्गानन्दन ने श्रीपति की ओर देखकर कहा, "अच्छा देखो, आज से तुम्हारा नाम मैं छोकरा रखता हूँ। अब तो छोकरे के नाम से बोलोगे ?"

श्रीपति ने हँसकर कहा, "बाबू, जब तुम्हारा विवाह होगा और तुम्हारी पत्नी के कोई लड़का होगा, यह नाम तुम उसका रखना। दूसरों के लड़कों का नाम तुम नहीं रख सकते।"

इस पर तो नर्मदा भी हँस पड़ी। इतने में गार्ड ने सीटी दी तो श्रीपति वहाँ से उतरकर अपने डिब्बे में जाकर बैठ गया।

जब गाड़ी चली तो दुर्गानन्दन ने नर्मदारानी से कह दिया, "मामी ! मेरी इस लौंडे से नहीं बनेगी।"

"तुम उससे बात मत करो। मैं देखूँगी कि वह भी तुमसे बात नहीं करेगा।"

"पर मामी ! मैं मालिक हूँ और वह नौकर है। हम दोनों एक ही स्तर पर कैसे रखे जा सकते हैं ?"

"तो श्रीपति किसका नौकर है ?"

"नौकर नहीं तो यह हमारे साथ किस रूप में जा रहा है ?"

"पृथिवी के मित्र के रूप में।"

"तो पृथिवी ने उसको अपने साथ फर्स्ट क्लास में क्यों नहीं बैठाया ? उसको नौकरों के डिब्बे में क्यों बैठाया है ?"

"यह इसलिए कि पृथिवी के पास अपने इतने पैसे नहीं हैं कि उसके लिए वह फर्स्ट क्लास का टिकट ले लेता।"

"तो पृथिवी उसको अपने पास से खर्च करके ले-जा रहा है ?"

"हाँ।"

यह रहस्य तो पृथिवी भी नहीं जानता था। एक तो बड़ी माँ श्रीपति को उसके मित्र के रूप में ले-जा रही है ; दूसरे, उसपर जो खर्चा हो रहा है वह उसके जेबखर्च में से हो रहा है—इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि यदि उसके पास जेबखर्च के और अधिक रुपये होते तो उसको श्रीपति को अपने साथ फर्स्ट क्लास में ले चलना चाहिए था। इस सूचना और विचार से उसके मन में मिश्रित उद्गार उत्पन्न होने लगे। वे थे प्रसन्नता, विस्मय और न समझ सकने के।

परन्तु इससे दुर्गानन्दन को सन्तोष नहीं हुआ। उसने कह दिया, "मामी ! यदि पृथिवी के पास अपने मित्र के लिए फर्स्ट क्लास का टिकट लेने के लिए पैसे नहीं थे तो उसको चाहिए था कि वह भी उसके साथ ही थर्ड क्लास में जाकर बैठता।"

"दुर्गा ! उसका खर्चा उसका पिता कर रहा है और श्रीपति का पृथिवी। साथ ही पृथिवी के मित्र को मित्र से अलग और छोटे दर्जे में यात्रा करने पर किसी प्रकार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमान का अनुभव नहीं हो रहा है। यह तो उसके विचार करने की बात है, तुम्हारे और मेरे नहीं।"

"परन्तु मेरे उसको छोकरा कहने पर तो उसने अपमान का अनुभव किया है?"

"तुम न तो उसके मालिक हो और न ही मित्र। तुम्हारे असभ्य भाषण को उसने पसन्द नहीं किया।"

दुर्गानन्दन निरुत्तर हो गया था। परन्तु उसका समाधान नहीं हुआ। इस कारण वह असन्तुष्ट-सा बैठा रहा।

६

नैनीताल में एक बड़ा-सा 'लॉज' साढ़े चार सौ रुपये मासिक पर ले लिया गया था।

वे वहाँ पहुँचे तो वहाँ की सुखद जलवायु और सुन्दर दृश्य का रसास्वादन करने लगे।

दुर्गानन्दन प्रातः अभी सोया ही होता था कि सीता, श्रीपति और पृथिवी झील के किनारे-किनारे भ्रमण करने चले जाते थे। नर्मदारानी प्रातःकृत्यों से निवृत्त हो बच्चों के लिए अल्पाहार तैयार कराने लगती थी। बटनसिंह, जो लॉज की पिछली कोठरी में रह रहा था, बच्चों के साथ उनकी रक्षार्थ चला जाता था। उस समय दुर्गानन्दन बिस्तर पर खुर्राटे भर रहा होता था।

बच्चे दो घंटे का भ्रमण कर लौटते तो उनके लिए अल्पाहार तैयार होता। वे एकदम खाने के कमरे में जा बैठते। इस समय दुर्गानन्दन अँगड़ाइयाँ लेते हुए 'बेड टी' लेने के लिए वहाँ आ जाता।

"आओ दादा!" पृथिवीपाल कह देता, "ज़रा बाहर देखो, सूर्य भगवान कहाँ पहुँच गया है।"

"कहाँ पहुँच गया है? वहीं तो जहाँ कल इस समय था।"

नर्मदा नहीं चाहती थी कि बच्चों में झगड़ा हो। वह यह समझ गई थी कि दुर्गानन्दन सर्वथा गँवार प्रकृति का लड़का है—रात विलम्ब से सोना और दिन चढ़े तक सोए रहना; अल्पाहार और दिन का खाना एकदम बारह बजे लेता था। उस समय नर्मदारानी बाज़ार से सब्ज़ी-भाजी तथा रसद खरीदने चली जाया करती थी। रसोई बनाने के लिए कमला गाँव से ही आई थी। हाँ, सामान उठाने के लिए एक नौकर रख लिया गया था। वह नर्मदारानी के साथ बाज़ार से सामान लाने के लिए जाता था।

एक बजे दुर्गा खा-पीकर अवकाश पाता तो घूमने के लिए चला जाता। मध्याह्नोत्तर बच्चे नर्मदारानी के साथ दूर स्थानों पर घूमने के लिए निकल जाते थे। बटनसिंह तब भी उनके साथ रहता था।

नर्मदा ने श्रीपति को उसी फैशन के कपड़े बनवा दिए थे जैसे पृथिवी के पास थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों लड़के जब एक-समान वस्त्र पहनकर साथ-साथ चलते तो श्रीपति अधिक सुदृढ़, सुडौल और सुन्दर लगता था। वह गौरवर्ण भी था।

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। पृथिवी के मस्तिष्क से ज़मींदार का बेटा होने की बू कम हो रही थी, और श्रीपति को वह वास्तव में ही मित्र के रूप में देखने लग गया था। इस मानसिक विकास में नर्मदा का भारी हाथ था। जब से रेल में बड़ी माँ और दुर्गा में हुए वार्तालाप को पृथिवी ने सुना था, वह मन में विचार करता था कि वह कौन-सी बात है जिसके कारण श्रीपति उसका मित्र है? यद्यपि मन कहता था कि बड़ी माँ का कहना ठीक है कि वह उसको अपने मित्र के नाते ही लाया है, परन्तु वह मित्र है तो उसकी बुआ का लड़का दुर्गानन्दन उसका मित्र क्यों नहीं है?

एक दिन उससे नहीं रहा गया। उसने मध्याह्नोत्तर के भ्रमण के समय अपने मन का संशय निवारण करने के लिए बड़ी माँ से पूछ ही लिया। वे चीना पीक देखकर लौट रहे थे। उसने पूछा, "माँ! मित्र होने के लिए कौन-सी बात आवश्यक है?"

उस समय श्रीपति और सीता एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए उतराई पर भागते हुए दूर आगे निकल गए थे। बटनसिंह लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ उनके पीछे-पीछे जा रहा था और श्रीपति को आवाज़ दे रहा था, "ओ श्रीपति! धीरे-धीरे!"

नर्मदा पृथिवी के प्रश्न का आशय नहीं समझ सकी। इसलिए उसके कथन का उद्देश्य जानने के लिए उसने पूछा, "क्या पूछ रहे थे तुम? फिर से कहना!"

"मैं यह पूछ रहा हूँ कि किसीका मित्र बनने के लिए कौन-सी बात करनी चाहिए?"

"कुछ करने की आवश्यकता नहीं; न ही किसीको अपना मित्र बनाने के लिए कोई कृत्रिम व्यवहार अपनाना चाहिए। मेरे कहने का अभिप्राय है कि जैसे तुम हो वैसे ही अपने को प्रकट करो। साथ ही केवल चाहने-मात्र से मित्र नहीं बनते। जब मित्र बनने होते हैं तो स्वयमेव ही बन जाते हैं।"

"कैसे बन जाते हैं?"

"जब दो प्राणी एक-जैसे स्वभाव, विचार और कर्म रखते हों तो वे मित्र बनने लगते हैं। जब दोनों के मन में यह विश्वास हो जाता है कि उनके मन सुस्वर हैं तो वे स्वयमेव मित्र हो जाते हैं। स्वभाव, विचार और आचार में समानता तो पृथक्-पृथक् बनती है। इस समानता का भास होने पर मित्रता गहरी हो जाती है।"

"माँ! तुम मुझमें और श्रीपति में यह बात देखती हो?"

इस प्रश्न पर नर्मदा ध्यान से पृथिवीपाल का मुख देखने लगी। वह गम्भीर विचार में मग्न आगे को देखता हुआ चला जा रहा था। नर्मदा ने कुछ विचारकर पूछ लिया, "तुम्हारा मन क्या कहता है?"

"मैं उसका बचपन का साथी हूँ। हम उस समय से इकट्ठे खेलते आए हैं जब का मुझको स्मरण भी नहीं। कुछ ऐसा समझ आता है कि अनन्त काल से ही हम इकट्ठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बात पिताजी ने बताई थी कि जब मैं अभी छोटा, कुछ ही दिन का था कि तुम्हारा दूध सूख गया था। बटनसिंह की पत्नी के तब श्रीपति उत्पन्न हुआ था और उसकी छाती में बहुत दूध था। इसलिए उसको नौकर रख लिया था। सुलखी हम दोनों को अपनी छाती से दूध पिलाती थी और उसकी गोद में ही हम एक-दूसरे से परिचित हुए हैं।

"मुझे ज्ञात नहीं यह दूध का प्रभाव था या इकट्ठे खेलने का कि मैं उसको मित्र मानता हूँ। कोई उसे मेरा मित्र कहे तो मुझे विचित्र प्रतीत नहीं होता। इसपर भी मेरी समझ में नहीं आता कि यदि वह मेरा मित्र है तो गाँव के अन्य लड़के क्यों नहीं हैं?

"मेरे पिताजी तथा मेरे स्कूल के ट्यूटर मुझे कहते हैं कि मालिक और प्रजा में मित्रता नहीं हो सकती। बटनसिंह हमारी प्रजा है। इसीसे श्रीपति भी हमारी प्रजा हुआ। आज नहीं तो किसी दिन तो होगा ही।

"इसपर भी जब मैं नैनीताल आने का विचार कर रहा था तो मेरे मन में आया कि श्रीपति साथ चल सके तो बहुत अच्छा रहे।

"जब रेलगाड़ी में दुर्गा दादा से आपने कहा कि श्रीपति मेरे मित्र के नाते मेरे साथ है तो मुझे प्रसन्नता हुई थी।

"इसीलिए मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने क्या बात देखी है उसमें और मुझमें जिससे यह कहती हो कि वह मेरा मित्र है?"

नर्मदा हँस पड़ी और कहने लगी, "मैंने तुम दोनों में कुछ तो समानता देखी ही है जिससे तुम दोनों को मित्र माना है।"

"परन्तु माँ! हममें समानता किस प्रकार हो सकती है? मैं ज़मींदार का लड़का हूँ। वह ज़मींदार के चौकीदार का लड़का है। मैं ताल्लुकेदारों के स्कूल में पढ़ता हूँ। वह गाँव के देहाती स्कूल में पढ़ता है। उसके पास पहनने के लिए जूते भी नहीं थे। हमने ही नैनीताल में आकर उसको सब वस्त्र दिलाए हैं।"

"पृथिवी! ये सब बातें तो केवल शरीर से सम्बन्ध रखने के कारण बाहर की हैं; इनका मन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। मित्रता मन का गुण है, शरीर का नहीं। तुम दोनों के मनों में समानता प्रतीत होती है।"

"मन से अभिप्राय माइँड अर्थात् ब्रेन से है। इसको आप कैसे देखती हैं? ब्रेन तो चारों ओर से खोपड़ी से ढका हुआ है।"

हँसते हुए नर्मदा ने कहा, "नहीं, मन के अर्थ ब्रेन नहीं। ब्रेन तो एक चिपचिपा-सा माद्दा है जो सिर की खोपड़ी में रखा है। मन में कई प्रकार की शक्तियाँ हैं। एक शक्ति है संस्कार-संचय करने की और फिर उन संस्कारों के अधीन कार्य करने की। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे मन और श्रीपति के मन में एक-जैसे संस्कार संचय हुए हैं और उनके अधीन तुम दोनों के स्वभाव, विचार और आचार में समानता प्रकट हो रही है। वह मैंने देखी है और इसीसे कहती हूँ कि वह और तुम मित्र हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पाठ पृथिवीपाल के लिए बहुत बड़ा था। वह सुन रहा था और उसको समझ भी रहा था, इसपर भी उसके मस्तिष्क में वे सब बातें टिकी नहीं रह सकीं जो माँ ने उसको समझाई थीं। उसके अध्यापक कुछ अन्य बात ही कहा करते थे।

उसने अपनी माँ से पूछा, "तो पिताजी और मास्टरजी का कहना ग़लत है कि वह और उसका पिता हमारी प्रजा हैं?"

"मित्र प्रजा भी हो सकता है और प्रजा भी मित्र हो सकती है।"

"तो जब मैं ज़मींदार बनूँगा तो श्रीपति से लगान नहीं लूँगा।"

"इस…।" इसके आगे नर्मदादेवी कुछ कह नहीं सकी। उसको दूर नीचे बटनसिंह का हल्ला सुनाई देने लगा था। बच्ची और बटनसिंह पहाड़ के मोड़ के पीछे छिपे हुए थे। बटनसिंह की आवाज़ सुन दोनों माँ-पुत्र नीचे की ओर भागे। जब वे पहाड़ का मोड़ पार कर घूमे तो आठ-दस लठैत लोग बच्चों का मार्ग रोककर खड़े थे। उनमें से दो ने बच्चों को पकड़ा हुआ था। बटनसिंह के सिर पर लाठी लगने से रक्त बह रहा वह एक ओर लुढ़का पड़ा था।

नकाबन्दों में से एक ने इनको कहा, "देखो, शोर मचाओगे तो तुम सबके मुख में कपड़ा ठूँसना पड़ेगा। चुप रहोगे तो कोई कष्ट नहीं होगा। हमारे साथ चले आओ।"

"कहाँ?" नर्मदा ने पूछा।

"हमारे साथ चली आओ, जहाँ जाओगी देख लेना।"

"मगर तुम किसको पकड़कर ले-जाना चाहते हो?"

"हम आपको नहीं जानते। हाँ, मालिक ने आपको दिखा दिया है। यह आप वहाँ चलकर पूछ लेना।"

नर्मदा ने ऊपर-नीचे देखा। सारा मार्ग निर्जन पड़ा था। इस कारण शोर मचाने का कोई प्रयोजन न समझकर बोली, "मगर हमारे चौकीदार की दशा तो उसको छोड़कर जाने लायक नहीं है।"

"वह तो मर गया प्रतीत होता है। इसपर भी हमारा एक आदमी यहाँ रहेगा; यदि वह जीवित हुआ तो उसको सचेत कर नीचे नगर में पहुँचा देगा।"

नर्मदा कुछ निश्चय नहीं कर सकी। इसपर डाकुओं के नेता ने कह दिया, "चलो बच्चो!"

सबने नर्मदा की ओर देखा तो नर्मदा ने कह दिया, "हाँ, चलो।" उसने फिर कहा, "मगर यह इस आदमी का लड़का है, इसको इसके पास रहने दो।"

"यह यहाँ रहकर क्या करेगा? साथ ही इसको हम यहाँ जीवित नहीं छोड़ सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

देहरा के बाबू साहब छोटेलाल के लड़के महीपालसिंह की विन्ध्यवासिनी से सगाई उसके अपने कहने से ही हुई थी। वह अपने नाना महेश्वरसिंह जी के घर गया हुआ था। सन् १९१२ की बात थी। वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी० ए० के द्वितीय वर्ष में पढ़ता था।

महीपाल के नाना की भूमि के पास ही एक जंगल था। उसमें जंगली सूअर का शिकार खेला जाता था। जंगल देहरा की ज़मींदारी से चलकर कुरेड़ी की ज़मींदारी के भीतर तक चला गया था। महीपाल इस बार आया तो अपने नाना की बंदूक लेकर अपने मामा के साथ शिकार खेलने के लिए चल दिया।

सूअर ढूँढते-ढूँढते वे दोनों जंगल के पास निकल गए और कुरेड़ी की ज़मींदारी में पहुँच जंगल के किनारे के कुएँ की जगत पर बैठकर आराम करने लगे। इस समय सामने के मकान से दो-तीन लड़कियाँ कुएँ से जल भरने आईं। उनमें विन्ध्यवासिनी भी थी। महीपाल उसको देख मुग्ध-सा देखता ही रह गया। जब वे जल भरकर चली गईं तो महीपाल ने अपने मामा से कहा, "लल्लन ! इस लड़की के विषय में पता करो कि यह किसकी पुत्री है।"

"क्यों, क्या बात है ?"

"मैं इससे विवाह करूँगा।"

"यह कठिन नहीं है। मैं इसको जानता हूँ। यह सामने की भूमि को जोतनेवाला एक विजयबहादुर है, इसका हमारे घर में आना-जाना रहता है।"

"तो मामाजी ! मेरा विवाह करा दो न इससे !"

"बहिन से कहो, वह विजयबहादुर से कहेगी तो विवाह हो जावेगा।"

महीपाल तो लड़की पर मुग्ध था। परन्तु छोटेलाल अपनी बड़ी ज़मींदारी का अभिमान करने लगा था। जब उसने अपनी पत्नी को महीपाल के विवाह का प्रस्ताव लेकर विजयबहादुर के पास भेजा तो उसने कह दिया, "वे मान तो जाएँगे, परन्तु सगाई के समय क्या देंगे और विवाह के समय क्या देंगे, यह निश्चय भी कर लेना चाहिए। मुझे इस लड़के के ससुराल से बहुत बड़ी आशा है।"

महीपाल की माँ सुभद्रा गई तो विजयबहादुर ने उसका प्रस्ताव स्वीकार तो कर लिया, परन्तु जब लेन-देन की बात होने लगी तो वह परेशानी अनुभव करने लगा।

विन्ध्यवासिनी की माँ को विन्ध्यवासिनी के लिए एक बड़े ज़मींदार के घर से विवाह का प्रस्ताव बहुत पसन्द आया और वह अपने पति और लड़के को अधिक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक देने के लिए प्रेरित करने लगी। दूसरी ओर महीपाल को जब पता चला उसकी मनपसन्द लड़की के माता-पिता साधारण वृत्ति के किसान हैं तो वह अपने माता-पिता को अपनी माँग कम करने के लिए प्रेरित करने लगा।

इस दोहरे प्रयत्न के कारण समझौता हो गया। सगाई के समय केवल एक सहस्र एक सौ ग्यारह रुपये और मिठाई का एक थाल और विवाह के समय पाँच सहस्र नकद का निर्णय हो गया।

विजयबहादुर के लिए यह भी बहुत अधिक था। परन्तु विन्ध्यवासिनी की माँ इतने बड़े परिवार में लड़की देने पर रीझ गई थी। दूसरी ओर छोटेलाल इस साधारण-सी रकम पर प्रसन्न नहीं था। परन्तु जब महीपाल ने धमकी दी, "माँ! यदि तुम लोग नहीं मानोगे तो अकेला ही जाकर और बिना एक भी पैसा लिये विवाह कर लूँगा।'' तो इसने सबको विवश कर दिया और सगाई हो गई।

सगाई के उपरान्त निश्चय किया गया कि जब महीपाल बी० ए० पास कर लेगा तब विवाह कर दिया जावेगा। छोटेलाल का विचार था कि वह महीपाल को अपनी ज़मींदारी का मैनेजर नियुक्त कर देगा। उस समय मैनेजर एक रिटायर्ड तहसीलदार था और उसे पाँच सौ रुपया मासिक वेतन दिया जाता था।

विजयबहादुर विवाह के लिए रुपया एकत्रित कर रहा था। महीपाल बी० ए० की परीक्षा दे घर आया हुआ था और परीक्षाफल की प्रतीक्षा कर रहा था। इसी समय विजयबहादुर के गाँव से सूचना आई कि महीपाल की प्रस्तावित पत्नी को विवाहने के लिए कुरेड़ी का ज़मींदार आया है।

समाचार सुनकर परिवार की गोष्ठी बुलाई गई और महीपाल तथा उसके एक बड़े भाई का यह निर्णय था कि लड़की का बलपूर्वक अपहरण किया जाए। जल्दी-जल्दी तीस के लगभग लठैत एकत्र किए गए और वे लड़की के बाप की भूमि की ओर उनको लेकर चल दिए।

वहाँ से विफल हो जब महीपाल लौटा तो महीपाल और उसके भाई को इलाहाबाद भेज दिया गया। यह यत्न किया गया कि उनका घटनाकाल में इलाहाबाद में होना सिद्ध किया जा सके।

परन्तु पुलिस ने केस बना दिया। देहरा के तीस के लगभग आदमी पकड़ लिये गए और जब उनकी पिटाई हुई तो चार-पाँच लोग बक गए और उसके आधार पर महीपाल और उसके बड़े भाई को भी पकड़ लिया गया।

इस समय नर्मदारानी और उसकी माँ के प्रयत्न से विजयबहादुर को मकान इत्यादि जल जाने का पाँच सहस्र रुपया हर्जाना दिया गया। लगभग इतना ही पुलिस को जेब गरम करने के लिए दिया गया और सूबे के सेक्रेटरी की सिफारिश लगवा दी गई।

अवध में एक राजा रामपाल पढ़े-लिखे ज़मींदार थे। वे गवर्नर की कौंसिल के सदस्य थे। उनकी सेवाएँ प्राप्त की गईं और सूबा सरकार के सेक्रेटरी के कहने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस ने इस केस के कागज़ जला दिए और यह लिख दिया कि विजयबहादुर के मकान को आग लग जाने का कारण पता नहीं चल सका।

कुरेड़ी से हुए झगड़े की बात पर लिख दिया गया कि कुरेड़ी के ही कुछ किसानों ने बाबू साहब की किसी बात पर असन्तुष्ट होकर बलवा कर दिया था, परन्तु बाद में दोनों पक्षों में समझौता हो गया है। किसी प्रकार के जान व माल की हानि नहीं हुई।

इस झगड़े में छोटेलाल का काफी खर्चा हो गया। जहाँ वह लड़के के विवाह पर कुछ प्राप्ति की आशा कर रहा था वहाँ उसके कारण उसको अपनी जेब से देना पड़ गया। वह इस क्रोध को भीतर ही भीतर पी गया।

महीपाल विन्ध्यवासिनी से विवाह न कर सकने के कारण अति निराश था। वह अपने पिता से कहने लगा था कि उसको पढ़ाई के लिए विलायत भेज दिया जाए। छोटेलाल अपने इस छोटे लड़के पर अब और अधिक धन व्यय करना व्यर्थ समझता था। वह चाहता था कि उसको मैनेजर बना दे और तब उसका विवाह करे। इससे वह दहेज में और बड़ी राशि नकद पाने की आशा करता था।

महीपाल न तो मैनेजर बनने में ही रुचि प्रकट करता था और न विन्ध्यवासिनी के अतिरिक्त किसी अन्य लडकी से विवाह करना ही। इससे वह घर को छोड़ लखनऊ जाकर रहने लगा। अब वह विन्ध्यवासिनी के अपहरण की कल्पना किया करता था।

इसी समय यूरोप में युद्ध आरम्भ हो गया। इंग्लैंड, फ्रांस और रूस एक तरफ हो गए और जर्मनी, आस्ट्रिया और हंगरी दूसरी तरफ। बाद में इस युद्ध में टर्की भी जर्मनी की तरफ हो गया और इटली अंग्रेज़ों की तरफ।

जब भारत के वायसराय ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तो महीपाल के मन में विचार आया कि वह सेना में भरती हो जाए। अतः वह पुनः राजा रामपालसिंह के पास जा पहुँचा। उनको उसने बताया कि यदि उसको कमीशन मिल जाए तो वह सेना में भरती हो युद्ध में जाना चाहता है। इन दिनों हिन्दुस्तानियों को कमीशन बहुत कम मिलता था। परन्तु महीपाल का परिवार, जाति और शिक्षा का विचार कर राजा साहब उसको लेकर गवर्नर साहब के पास जा पहुँचे।

गवर्नर ने महीपाल को पत्र देकर लखनऊ छावनी के कमांडिंग आफिसर के पास भेज दिया। वह ट्रेनिंग के लिए ले लिया गया और यह कहा गया कि यदि वह परीक्षा में पास हो गया तो उसको लेफ्टिनेंट बना दिया जावेगा।

छः मास की शिक्षा के बाद परीक्षा हुई तो महीपाल पास हो गया। उसको लेफ्टिनेंट की उपाधि मिल गई और फिर सन् १९१६ में उसको इराक भेज दिया गया।

इराक के मोर्चे पर हिन्दुस्तान की सेना के पूरे दो-के-दो डिविज़न गिरफ्तार हो गए। उनमें महीपाल भी था। युद्ध के ये कैदी युद्ध समाप्त होने के बाद ही छूटे। सन् १९१९ के आरम्भ में महीपाल हिन्दुस्तान वापस आया और अपनी रेजिमेंट में हाज़िर हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय हिन्दुस्तान में राजनैतिक बेचैनी फैली हुई थी और महीपाल की रेजिमेंट विनियोजित नहीं की गई थी। महात्मा गाँधी रॉलेट-ऐक्ट के सम्बन्ध में देशव्यापी आन्दोलन खड़ा करना चाहते थे और सरकार सेना की सुदृढ़ टुकड़ियाँ बड़े-बड़े नगरों में नियुक्त कर रही थी। महीपाल की रेजिमेंट आगरा में नियुक्त थी। वहाँ से वह फिरोज़पुर छावनी भेज दी गई।

इसी समय महात्मा गाँधी पकड़ लिये गए और इस समाचार से पंजाब में व्यापक उपद्रव खड़ा हो गया। इसके परिणामस्वरूप वहाँ पर मार्शल लॉ लगा दिया गया।

मार्शल लॉ के दिनों में सेना ने पंजाब में भारी अत्याचार और दुराचार किया।

महीपाल की रेजिमेंट फिरोज़पुर में लगी थी और इसने जो क्रूरता का प्रदर्शन किया उसकी बाद में जाँच कर हंटर कमेटी ने भी बहुत सख्त टिप्पणी लिखी थी।

परन्तु इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी सरकार के इस रेजिमेंट के विपरीत भाव नहीं बने।

मार्शल लॉ के बाद और हंटर कमेटी के सामने इस रेजिमेंट के कमांडर के बयान होने के बाद महीपाल जब छुट्टी पर लखनऊ पहुँचा तो गवर्नर ने उसका विशेष सम्मान करने के लिए अनेक कमांडिंग आफिसरों के साथ चाय पी।

इससे महीपाल के दिमाग में अभिमान की मात्रा कुछ बढ़ी ही थी। इन छुट्टी के दिनों में वह नैनीताल भ्रमण के लिए गया तो उसके साथ उसके बड़े भाई की लड़की त्रिवेणी और लड़के सिद्धेश्वर, बटुकेश्वर आदि भी चले गए। ये वही दिन थे जिन दिनों नर्मदा इत्यादि भी वहाँ गए हुए थे।

२

एक दिन मध्याह्न के समय दुर्गानन्दन भ्रमण करने के लिए लॉज से निकला तो उसने सड़क पर एक सैनिक अफसर के साथ एक लड़की और दो लड़कों को चलते देखा। साधारण रूप से वह उनकी ओर निहारने लगा। उसका ध्यान लड़की की ओर आकर्षित हो गया। लड़की तेरह-चौदह वर्ष की थी। लम्बी और सुन्दर, यूरोपियन फ्रॉक और स्कर्ट पहने थी। साथ के लड़के भी अंग्रेजी पोशाक में ही थे। साथ चलनेवाला पुरुष सैनिक पोशाक में था। उसपर दो तमगे भी लगे हुए थे।

दुर्गानन्दन ने समझा कि ये कोई ऐंग्लो-इंडियन समुदाय के सदस्य हैं। अतः नैनीताल में रहते हुए मनोरंजन के विचार से उनसे परिचय प्राप्त करने का विचार करने लगा।

ये लोग सड़क के दूसरे किनारे जा रहे थे। दुर्गानन्दन सामने के किनारे पर था। परिचय करने का अवसर मिला। उस सैनिक अफसर ने जेब से सिगरेट निकाली और उसको जलाने के लिए माचिस निकाली तो डिब्बी खाली थी। उसमें कोई सलाई नहीं थी। निराश महीपाल ने डिबिया एक ओर फेंकी और बिन सुलगाए सिगरेट को मुख में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाले चलता गया। वह झील के दूसरे छोर पर मल्ली ताल पहुँचकर किसी पनवाड़ी से माचिस खरीदने का विचार कर रहा था। इस समय दुर्गानन्दन ने स्वयं सिगरेट निकालकर जलाई और फिर महीपाल की ओर देखा; उसके पास पहुँचकर बोला, "आपको माचिस चाहिए क्या ?"

"हाँ, चाहिए तो।"

दुर्गानन्दन ने माचिस जला उसकी सिगरेट को लगा दी। महीपाल ने उसका धन्यवाद किया तो दुर्गानन्दन ने कह दिया, "आप तो अवध के रहनेवाले प्रतीत होते हैं ?"

"हाँ, मैं लखनऊ का रहनेवाला हूँ।"

दुर्गानन्दन ने अपना परिचय देते हुए बताया, "मैं दुर्गानन्दन हूँ, कुरेड़ी के बाबू साहब का भाँजा हूँ।"

"और यहाँ अकेले आए हुए हो ?" इस प्रकार महीपाल ने अपना अधिक परिचय देना उचित न समझ बात को फेरना चाहा।

"मामी, उनका लड़का और लड़की मेरे साथ हैं।"

महीपाल ने समझा कि विन्ध्यवासिनी है। वह अपने अपमान का बदला लेने के लिए मन में योजना बनाने लगा। उसने पूछ लिया, "कहाँ ठहरे हैं आप लोग ?"

जब दुर्गानन्दन ने लॉज का नम्बर और स्थान बताया तो वह उससे प्रसन्न नहीं हुआ। इस समय तक वे लोग बोट क्लब के समीप पहुँच गए थे। महीपाल ने कहा, "आइए, मैं उस होटल में ठहरा हूँ। चाय पीएँगे और परिचय बढ़ाएँगे।"

दुर्गानन्दन यही तो चाहता था। उसने अपने मतलब की बात आरम्भ करते हुए कहा, "ये आपके बच्चे हैं ?"

"नहीं, ये मेरे बड़े भाई के हैं। यह है त्रिवेणी, और ये लड़के हैं सिद्धेश्वर और बटुकेश्वर।"

"बहुत प्यारे लगते हैं। क्यों त्रिवेणी !" उसने लड़की से परिचय बढ़ाने के लिए पूछ लिया, "कितना पढ़ी हो ?"

त्रिवेणी को उत्तर देने में लज्जा आ रही थी, इसलिए वह आँखें नीची किए चलती रही। इस समय वे होटल को जानेवाली सड़क पर मुड़ने लगे तो दुर्गानन्दन की बात का उत्तर महीपाल ने देते हुए बताया, "यह सेंट मेरी गर्ल्ज़ स्कूल में पढ़ती है। इसके बाबा इसका विवाह करने की बात कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में पढ़ाई कहाँ हो सकती है !"

"मैं तो समझा था कि आप लोग ऐंग्लो-इंडियन समुदाय के हैं। विवाह के लिए रिश्ता ढूँढ लिया गया है ?"

"अभी ढूँढा तो नहीं, हाँ, इसका विचार किया जा रहा है।"

दुर्गानन्दन ने बात बदलकर पूछा, "आप लोग यहाँ कब तक रहने वाले हैं ?"

"अभी तो हमें आए एक ही सप्ताह हुआ है। हमारा विचार दो मास तक यहाँ रहने का है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो आपके दर्शन हुआ करेंगे। हमारा विचार भी अभी कम-से-कम एक-सवा महीने तक रहने का तो है ही।"

"आप दिन-भर क्या करते रहते हैं? यहाँ आ जाया करिए। यहाँ बिलियर्ड रूम है।"

"मैंने कभी खेला नहीं।"

"आपको सिखा देंगे। त्रिवेणी बहुत अच्छा खेलती है।"

"ओह! तब तो मैं अवश्य आया करूँगा और त्रिवेणी को अपना गुरु बना लूँगा।"

इस प्रकार दोनों की बात बन गई। लड़की अभी सर्वथा अल्हड़ थी और दुर्गानन्दन का भी केवल उससे मन बहलाने के अतिरिक्त अन्य कोई आशय नहीं था। महीपाल उसकी मामी के घूमने-फिरने के कार्यक्रम की टोह लेने लगा और उसके अपहरण की योजना बनाने लगा था।

होटल के एक बैरे करीम की सहायता से नैनीताल के कुछ गुण्डों की सेवाएँ उपलब्ध की गईं और उनको दस मिनट की सूचना पर निश्चित स्थान पर इकट्ठे होने का प्रबन्ध कर वह नित्य उत्सुकता से दुर्गानन्दन की बिलियर्ड खेलने आने की प्रतीक्षा करने लगा। नित्य आने पर वह पूछ लिया करता था कि आज बच्चे किधर को जा रहे हैं।

बिलियर्ड के साथ-साथ दुर्गानन्दन को लेफ्टिनेंट एम० पी० राजपूत के युद्ध की बातों और अन्य सैनिक कारनामों को सुनने में भी रुचि थी। मिस्टर राजपूत पंजाब के मार्शल लॉ के दिनों के अपने द्वारा किए अत्याचारों की बातें ऐसे सुनाता था मानो वे उसके शौर्य की बातें हों। दुर्गानन्दन यद्यपि राजनीति में न तो रुचि रखता था और न ही उसको किसी प्रकार का ज्ञान था, इसपर भी वह इतना तो समझता था कि निरपराध लोगों को कष्ट देना तो किसी भी ढंग से ठीक नहीं हो सकता।

महीपाल ने एक दिन फिरोज़पुर के समीप एक गाँव के सब मर्दों को एकत्रित कर पूछा कि उनमें से किसने वहाँ के तहसीलदार को मारा है? गाँववाले या तो बताना नहीं चाहते थे या वे बता नहीं सकते थे, अर्थात् उनको हत्यारे का ज्ञान ही नहीं था। बस फिर क्या था? महीपाल ने आज्ञा दे दी कि गाँव की सब औरतों को एकत्र कर उनको निर्वस्त्र करके उनके मर्दों के सामने परेड कराई जाए।

दुर्गानन्दन तो इस घटना को सुनकर काँप उठा। उसने पूछा, "तो यह सब आपने कराया था?"

"हाँ।"

"भाई जान! यह तो भारी पाप हो गया! भला उन औरतों ने क्या अपराध किया था?"

"उनके मर्दों ने अपराध किया था और कुछ 'कम्युनिटी क्राइम' होते हैं। उनका दण्ड भी कम्युनिटियों को ही दिया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीपाल ने अपना आशय समझा दिया। उसने कहा, "देखो दुर्गानन्दन! सर्विया के एक युवक ने आस्ट्रिया, हंगरी के युवराज को मार डाला। यह अपराध एक व्यक्ति का नहीं माना गया और पूर्ण सर्वियां जाति को उसका दण्ड भोगना पड़ा।"

"और उस दण्ड को देनेवालों का अपना नामोनिशान भी तो नहीं रहा!" दुर्गानन्दन ने सुनी-सुनाई बात कह दी।

महीपाल जानता था कि दुर्गानन्दन ठीक कह रहा है, परन्तु राजनीति में अपनी श्रेष्ठता प्रकट करने के लिए बोल उठा, "तुम नहीं जानते। उस विनाश के दूसरे कारण थे, वे इतिहास की बातें हैं।"

दुर्गानन्दन त्रिवेणी के साथ बिलियर्ड रूम में चला गया और राजनीति की बात भूल गया। उसने त्रिवेणी से मेल-मुलाकात केवल मनोविनोद की लालसा से की थी। नैनीताल में आकर वह अकेलापन अनुभव कर रहा था। इस कारण सुन्दर लड़की से मेल-मुलाकात में वह रस पाने लगा था।

एक दिन उसने लेफ्टिनेंट के सम्मुख अपने पिता की सम्पत्ति का संक्षिप्त-सा वर्णन भी कर दिया। उसने बताया, "हमारी छोटी-सी ज़मींदारी ज़िला प्रतापगढ़ में है, परन्तु हमारी मुख्य सम्पत्ति इलाहाबाद और लखनऊ में है। पिताजी को इन नगरों की सम्पत्ति से लगभग पाँच हज़ार रुपये प्रतिमास किराये की आमदनी है। हमारा खर्चा तो कुछ भी नहीं। वह तो ज़मींदारी से निकल आता है। नगर की आमदनी से और अधिक सम्पत्ति हमारे यहाँ संचित की जा रही है।"

"तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध अभी हुआ कि नहीं?"

"नहीं, परन्तु अब की बार लखनऊ जाने पर मैं यत्न करनेवाला हूँ।"

"कहाँ?"

"आपके भाई की लड़की त्रिवेणी के साथ।"

"ओह, तो तुम आपस में इस प्रकार की बातें करते रहते हो?"

"बातें अभी तक तो नहीं कीं। किन्तु मेरा विचार है कि यदि की जाएँ तो वह पसन्द करेगी।"

"मगर मैं चाहता हूँ कि तुम इस प्रकार की बातें न करो।"

"क्यों?"

"पहले बड़ों से पूछकर बातें करना ठीक है। सम्भव है, आपके माता-पिता का अथवा त्रिवेणी के माता-पिता का इस सम्बन्ध के लिए विचार न बने तो फिर दोनों को निराशा ही होगी।"

महीपाल अपनी निराशा और अपमान का विचार कर रहा था। दुर्गानन्दन ने कह दिया, "आप भी तो उसके बड़ों में से हैं। आपको मैं कैसा लगा हूँ?"

"मैं तो तुममें कोई दोष नहीं देखता, परन्तु वह मेरे बड़े भाई की लड़की है और उसके विवाह में मेरी शायद चलेगी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप सिफारिश तो कर ही सकते हैं।"

"हाँ, इतना तो मैं कर सकता हूँ।"

महीपाल ने अब तक दुर्गानन्दन को अपना पता नहीं दिया था। दुर्गानन्दन ने भी सद्व्यवहार का ध्यान कर पूछना उचित नहीं समझा।

३

घटना के दिन बच्चे नित्य से कुछ जल्दी नर्मदा के साथ चले गए थे। नर्मदा ने दुर्गानन्दन को कहा भी था कि वह भी उनके साथ चले, वे चीना पीक देखने के लिए जा रहे हैं।

दुर्गानन्दन को त्रिवेणी की मीठी-मीठी बातें सुनने में अधिक रुचि थी। वह नर्मदा इत्यादि के साथ जाने की अपेक्षा यॉर्क होटल में चला गया।

उस दिन महीपाल कमरे में नहीं था। त्रिवेणी और छोटा लड़का बटुकेश्वर वहीं थे। दुर्गानन्दन वहाँ पहुँचा तो त्रिवेणी ने कहा, "ओह! दुर्गा भैया! आज तो जल्दी ही आ गए हो। बिलियर्ड रूम तो दो बजे से पहले नहीं खुलता।"

"तो एक घण्टे तक यहीं बैठकर बातें करेंगे।"

दोनों सिटिंग रूम में बैठ गए। दुर्गानन्दन ने सिगरेट निकाली और कश लेता हुआ कहने लगा, "त्रिवेणी, अब तुम मुझे भैया मत कहा करो!"

"क्यों?"

"मैंने तुम्हारे चाचा से तुम्हारे साथ अपनी सगाई के लिए कहा है।"

इससे त्रिवेणी के गालों पर लाली छा गई। वह गर्दन नीची किए चुपचाप बैठी रही। उसे चुप देख दुर्गानन्दन बोला, "क्यों, चुप क्यों हो गई?"

"मुझसे ऐसी बात मत करिए।"

"क्यों, क्या बात है?"

"मैं नहीं जानती कि जिससे सगाई हो गई हो अथवा होनेवाली हो उसके साथ किस प्रकार बातें की जाती हैं।"

"बातें तो वही करनी चाहिएँ जो तुम पहले किया करती थीं, और वैसे ही करनी चाहिएँ जैसे पहले किया करती थीं। फर्क सिर्फ इतना ही है की भैया कि बजाय डियर कहा करो।"

"यह तो सुगम है।"

"और क्या! देखो, त्रिवेणी डार्लिंग···।"

त्रिवेणी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "पहले यह तो फैसला हो जाए कि हमारी सगाई होगी भी कि नहीं। सुना है मेरी सगाई मेरे पिता नहीं, बल्कि मेरे दादा और दादी करेंगे।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे चाचा मेरी सिफारिश करेंगे। और उनकी सिफारिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानी जादेगो।"

"इसपर भी जब तक निश्चय न हो जाए तब तक तो डार्लिंग-डियर नहीं चलेगा।"

"परन्तु भैया भी तो ठीक नहीं रहेगा।"

"तो फिर क्या सम्बोधन किया जाए?"

"केवल दुर्गा कह सकती हो।"

"दुर्गाजी ठीक रहेगा।"

"हाँ···।" दोनों हँसने लगे।

इसी समय महीपाल ने सिद्धेश्वर के साथ कमरे में प्रवेश किया। त्रिवेणी और दुर्गानन्दन खूब हँस रहे थे।

उनको हँसते देख महीपाल ने लड़की से पूछा, "क्यों, किसलिए इतने ज़ोर से हँस रही हो?"

"चाचा! ये कहते हैं कि मैं इनको दुर्गा भैया कहने की बजाय दुर्गाजी कहा करूँ।

"मुझे दोनों में कोई अन्तर प्रतीत नहीं हुआ। इसपर मेरी हँसी निकल गई तो ये भी हँसने लग गए।"

महीपाल ने दुर्गानन्दन से पूछा, "आज आप जल्दी आ गए हैं। खाना खाकर आए हैं या नहीं?"

"मैं खाना खाकर आया हूँ। वे लोग चीना पीक देखने के लिए गए तो मैं इधर के लिए चल दिया।"

"चीना पीक? कितने बजे लॉज से चले थे?"

"साढ़े बारह बजे और मैं यहाँ एक बजे से हूँ।"

महीपाल ने कुछ विचार किया और बोला, "अच्छा, तुम अभी भैया और 'जी' में कुछ अन्तर मालूम करने का यत्न करो, मैं अभी दस मिनट में आता हूँ।"

महीपाल बाहर जाकर सीधा करीम बैरे के पास पहुँचा। उसको एक ओर ले जाकर कहने लगा, "तुम कहते थे न कि जिस दिन वे चीना पीक देखने के लिए जावेंगे उस दिन तुम हमारा काम कर सकोगे?"

"हाँ सरकार! एक तो सड़क अक्सर अकेली होती है, दूसरे वहाँ एक स्थान है जहाँ से वह बँगला समीप पड़ता है जहाँ का चौकीदार मेरा दोस्त है।"

"तब ठीक है, सबको पकड़कर उस बँगले में ले जाना, वहाँ मैं उस औरत के साथ एक रात रहना चाहता हूँ। कल सुबह उसको उसके लॉज में पहुँचा देंगे।"

"हमारा इनाम?" करीम का प्रश्न था।

"एक हज़ार फैसला है न? कामयाबी होने का पाँच सौ इनाम।"

"और अगर किसी किस्म का झगड़ा हो गया और कोई मारा गया तो?"

"उसके लिए मुनासिब खर्चा दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पेशगी ?"

महीपाल ने पाँच सौ रुपया निकालकर दे दिया। करीम रुपये लेकर चला गया और महीपाल सिटिंग रूम में चला आया। वह उन दोनों के सामने बैठकर पूछने लगा, "क्यों दुर्गाजी ! त्रिवेणी मान गई है ?"

"इसमें न मानने की तो बात ही नहीं है।"

"विवाह के लिए कितने साल तक प्रतीक्षा कर सकते हो ?"

"यदि आपके घरवाले मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लें तो मैं दो वर्ष तक प्रतीक्षा कर सकता हूँ।"

"तो ठहरो। मगर एक बात समझ लो। जो हमारे साथ रिश्तेदारी करता है वह सुख-दुःख में, शराफत और बदमाशी में, गरीबी-अमीरी में हमारा साथ देने का वचन देता है। नहीं तो हम उसको क्षमा नहीं कर सकते।"

"रिश्तेदारी का यही तो मतलब होता है !"

"समझ लो। हम अपनी लड़की क्या और बहिन क्या, उसको भी विधवा बना देने में संकोच नहीं करते अगर उसका घरवाला हमारी सब बातों में साथ न दे।"

"आप तो बिलकुल मेरे ही खयाल के आदमी मालूम होते हैं।"

"अच्छी बात है, मैं प्रतीक्षा करूँगा और तब तक त्रिवेणी के विषय में घर के बड़ों से भी बात कर लूँगा।"

दुर्गानन्दन इस बात से बहुत प्रसन्न था। त्रिवेणी अपने चाचा और समीप बैठे युवक में होनेवाले वार्तालाप का अर्थ समझ रही थी। उसको यह तो पता चल रहा था कि उसकी सगाई की बात हो रही है, परन्तु वह किस सीमा तक पहुँची है यह वह समझ नहीं सकी।

वह अभी विचार कर ही रही थी कि महीपाल ने कहा, "अच्छा, अब बिलियर्ड रूम खुलनेवाला है और तुम वहाँ खेलना। मैं आज वहाँ नहीं जा सकूँगा। खेल खेलने के बाद दुर्गाजी, आप मुझसे मिलकर जाइएगा।"

"अच्छी बात है।" दुर्गानन्दन ने कहा तो महीपाल अपने बेडरूम को चल दिया।

दो बजे बिलियर्ड रूम खुला तो त्रिवेणी और दुर्गानन्दन वहाँ चले गए। सिद्धेश्वर और बटुकेश्वर बोट क्लब की ओर चले गए और चौकीदार को एक रुपया घूस देकर किश्ती की सैर करने लगे। ऐसा वे पहले भी किया करते थे।

बिलियर्ड रूम में त्रिवेणी और दुर्गानन्दन अकेले थे। त्रिवेणी ने एक स्ट्रोक लगाई तो फिर पूछने लगी, "चाचाजी क्या कह रहे थे ?"

"वे कह रहे थे कि हमारी सगाई पक्की है। विवाह दो वर्ष बाद होगा। तब तक मैं तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करूँगा।"

"विवाह पहले क्यों नहीं होगा ?"

"इसलिए कि तुम अभी पढ़ती हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर सुना है कि गाँव में तो लड़कियों का सात-आठ वर्ष की आयु में विवाह कर दिया जाता है ?"

"हाँ, मगर बड़े घरों में यही रिवाज है।"

जब दोनों खेलते-खेलते थक गए तो वे घूमने के लिए सड़क पर निकल पड़े। घूमकर वे पाँच बजे होटल में वापस लौटे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि महीपाल के साथ उस होटल का बैरा करीम बड़ी घबराहट में बात कर रहा था। दुर्गानन्दन ने करीम के मुख से इतना सुना, "वह मर गया है।"

इसी समय महीपाल की दृष्टि त्रिवेणी और दुर्गानन्दन पर चली गई। उसने इन दोनों को कहा, "तुम अभी यहीं बैठो, मैं आता हूँ।"

दुर्गानन्दन ने अनुभव किया कि महीपाल भी घबराया हुआ है। करीम को लेकर महीपाल कमरे से बाहर चला गया। वे दूर होटल से उतरनेवाली सड़क पर जाकर खड़े हो गए। दुर्गानन्दन न महीपाल को घबराया हुआ देखा था और करीम के मुख से सुना था कि 'वह मर गया है।' फिर उसने उनको जल्दी में वहाँ से उठकर जाते भी देखा था। एकाएक दुर्गानन्दन उठा और बाहर बरामदे में आकर देखने लगा कि वे किस ओर जाते हैं। वे सड़क पर आधा रास्ता जाकर ठहर गए और वहाँ पर खड़े-खड़े ही बात करने लगे। दुर्गा ने उनको वहाँ खड़े देखा और उस सबका अर्थ समझ वापस कमरे में आ गया और त्रिवेणी को कहानी सुनाने लगा।

आधे घण्टे बाद महीपाल लौट आया और उनसे पूछने लगा, "तुम लोगों ने चाय पी या नहीं ?"

"नहीं।" त्रिवेणी ने बताया।

महीपाल ने कमरे में लगी घंटी का बटन दबाया और बैरे के आने पर वहीं चाय लाने के लिए कह दिया।

एक घंटा-भर इधर-उधर की बातें करता रहा। तब तक दुर्गानन्दन के जाने का समय हो गया और वह उठकर चला गया। रात का खाना खाने के बाद करीम आया और कहने लगा, "सरकार! अब चलना चाहिए।"

महीपाल ने त्रिवेणी से कहा, "मैं रात को क्लब में नाच देखने के लिए जा रहा हूँ, तुम यहाँ भीतर से द्वार बन्द कर सो रहना। मैं आऊँगा तो खटखटाकर खुलवा लूँगा।"

त्रिवेणी को वैसे सोने का पहले भी अभ्यास था। उसने बिन्दु नौकरानी को, जो बाहर बैठकघर में सोया करती थी, भीतर बुला लिया और सोने के कमरे को भीतर से बन्द कर सोने की तैयारी करने लगी।

महीपाल करीम के साथ चीना पीक रोड पर चल पड़ा। घटना के स्थान पर बटनसिंह का शव अभी भी उसी प्रकार औंधा मुख पड़ा था। वे उसे वहीं छोड़ पगडंडी के रास्ते पहाड़ पर चलने लगे। करीम हाथ में टॉर्च लिये उसको मार्ग दिखा रहा था। वे उस बँगले में पहुँचे जहाँ नर्मदा को बन्दी बनाया हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीपाल ने चौकीदार से पूछा, "कुछ खीने-पीने को भी दिया कि नहीं?"

"अभी कुछ नहीं। खाना बन रहा है।"

"क्या बिना अपने को दिखाए हुए मैं उन लोगों को देख सकता हूँ?"

"हाँ, बगल के कमरे से आप उनको देख सकते हैं। उनके कमरे में रोशनी है। दोनों कमरों के बीच में दरवाज़ा है, उसमें शीशे लगे हुए हैं। हम आपवाले कमरे में अँधेरा कर देंगे, जिससे उस कमरे में खड़े आपको कोई न देख सके।"

"हाँ, ठीक है। चलो।" वह देखना चाहता था कि विन्ध्यवासिनी अब कैसी दीखती है।

महीपाल उस कमरे में पहुँचा और नर्मदा के कमरे में झाँककर देखने लगा। उसे देखकर वह स्तब्ध खड़ा रह गया। यह तो उसकी मौसी थी।

इससे वह अपने कुचक्र के असफल होने से मूर्ख-सा बना खड़ा रह गया। वह कोठी के उस कमरे में, जिसमें विन्ध्यवासिनी से वह भेंट करना चाहता था, जाकर हताश पलँग पर लेट गया। करीम ने पूछा, "क्यों सरकार! क्या बात है?"

"यह तो वह नहीं जिसके लिए यह सब किया गया है!"

"परन्तु सरकार! आपने जो निशान बताए थे वे तो सब इसमें थे। इसके साथ दो लड़के और एक लड़की और एक लठैत चौकीदार था। यही आपने बताया था।"

"मगर यह वह औरत नहीं जिसकी मुझको लालसा थी।" उसने यह बताना उचित नहीं समझा कि वह रिश्ते में उसकी मौसी लगती है। उसने कहा, "इसे वापस पहुँचाना चाहिए।"

"मगर सरकार! कैसे?"

"उसे भोजन कराओ, फिर मैं बताता हूँ।"

महीपाल की योजना थी कि उनको पिछली ओर भुवाली की सड़क पर ले-जाया जाए और वहाँ वह अपनी मोटर और ड्राइवर लेकर पहुँच जाएगा। वह ड्राइवर उनको दूर किसी निर्जन स्थान पर छोड़ देगा।

करीम और चौकीदार वहीं रहे। महीपाल चीना पीक रोड से नीचे आ गया। उसने अपने ड्राइवर को उठाया और मोटर गैरेज से मोटर निकालकर भुवाली की ओरवाली सड़क पर चल पड़ा। निश्चित स्थान पर वे पहुँचे तो करीम उनकी वहाँ पर प्रतीक्षा कर रहा था। करीम ऊपर गया और नर्मदा इत्यादि को लाकर मोटर में बिठा दिया गया। महीपाल वहीं अँधेरे में एक स्थान पर छिपा खड़ा था। जब मोटर चली गई तो वह करीम के साथ बँगले में आया और उसको यह बताया कि वह पुलिस को क्या बयान दे।

४

अगले दिन महीपाल अभी सो ही रहा था कि दुर्गानन्दन उससे मिलने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया। दिन के ग्यारह बजे रहे थे। त्रिवेणी आदि उठकर झील का एक चक्कर काटकर आ गए थे। उन्होंने प्रातः का अल्पाहार भी कर लिया था। दुर्गानन्दन आया तो त्रिवेणी ने बताया, "चाचा अभी भी सो रहे हैं।"

"क्यों?"

"वे रात नाचघर गए थे और बहुत रात गए घर लौटे हैं।"

"अच्छा, मैं तो उनसे मिलने के लिए आया था।"

"किसलिए?"

"हमारा चौकीदार मार डाला गया है और मामी तथा तीनों बच्चे लापता हैं।"

त्रिवेणी अवाक् बैठी रह गई। दुर्गानन्दन भी बाहर के कमरे में चुपचाप बैठा था। साढ़े ग्यारह बजे तक महीपाल सोने कमरे से निकला तो दुर्गानन्दन को वहाँ बैठा देख पूछने लगा, "आज इतनी जल्दी कैसे आ गए?"

"हाँ भापा! एक भयंकर घटना हो गई है। मैं कल यहाँ से अपने लॉज में पहुँचा तो नित्य से भिन्न बात यह हुई कि मामी और बच्चे लौटे नहीं थे। बटनसिंह भी नहीं लौटा था। मैं रात-भर उनकी प्रतीक्षा करता रहा। प्रातःकाल तक प्रतीक्षा कर पुलिस में सूचना देने गया तो वहाँ बटनसिंह का शव पड़ा हुआ मिला। उसके सिर पर सख्त चोटें आने से रक्त-प्रवाह होने के कारण उसका प्राणान्त हो गया। बटनसिंह का शव पोस्टमार्टम के लिए गया है। मैं आपको सूचित करने और आपसे परामर्श करने आया था।"

"बाबू साहब को तार दिया है कि नहीं?"

"दे दिया है।"

"चौकीदार का दाह-संस्कार उनके आने पर करोगे?"

"यही आपसे पूछ रहा हूँ।"

"शव कहाँ मिला है?"

"चीना पीक की सड़क पर।"

"हम एक-आध दिन में वापस जा रहे हैं।"

"आप तो अभी काफी दिन यहाँ रहनेवाले थे?"

"तुम्हारी मामी और बच्चों के अपहरण से जी डर गया है। अब यहाँ रहने को जी नहीं करता।"

"तो मैं आपसे कहाँ मिल सकता हूँ?" अभी तक महीपाल ने दुर्गानन्दन को अपना पता तक नहीं बताया था।

"क्या करोगे मिलकर?"

"मैं अपनी माँ को त्रिवेणी की माँ के पास भेजना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सगाई पक्की हो जाए।"

"अभी बहुत समय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, लेकिन मैंने तो अभी तक आपका पता भी नहीं पूछा।"

"तुम अभी यहाँ ठहरोगे ?"

"हाँ, मामाजी की प्रतीक्षा करूँगा।"

"अच्छा, फिर मिलेंगे।"

दुर्गानन्दन बिना किसी प्रकार की राय किए वहाँ से चला आया। मध्याह्नोत्तर बटनसिंह का शव मिला तो उसका दाह-संस्कार करा दिया गया। वहाँ से वह सायंकाल लौटा और लॉज में आकर सो रहा। अगले दिन वह महीपाल से मिलने के लिए गया तो पता चला कि वे पिछली रात ही वहाँ से चले गए हैं।

दुर्गानन्दन को इससे क्रोध आ गया। वह होटल के रजिस्टर में उसका नाम और पता देखने के लिए गया तो देखकर चकित रह गया कि वह तो उसकी मामी की बहन का लड़का था। परन्तु अपना पता देने पर भी उसने दुर्गानन्दन को अपना नाम-धाम नहीं बताया था। वह गम्भीरता से इस सबका कारण विचार करता हुआ होटल के कार्यालय से निकला तो सामने से करीम बैरा आता दिखाई दिया।

दुर्गानन्दन को घटनावाले दिन की बात याद आ गई। करीम ने महीपाल को कहा था, 'वह तो मर गया है।' इस सूचना से दोनों घबराए हुए प्रतीत होते थे। इस विषय में और जानने के लिए उसने करीम का मार्ग रोककर पूछा, "उस मरे के शव का क्या हुआ ?"

करीम यह सुनकर घबरा गया, फिर पूछने लगा, "किसके शव का ?"

"मैं पुलिस में तो बताने के लिए जा नहीं रहा।" दुर्गानन्दन ने उसकी घबराहट मिटाने के लिए कह दिया।

अब करीम बोला, "हमको पता नहीं और न ही हमको जानने की आवश्यकता है। मैंने चीना पीक रोड पर एक मरा हुआ आदमी देखा था। मैं चला आया और फिर उसको भूल गया।"

दुर्गानन्दन को यह गोरखधन्धा समझ में नहीं आ रहा था। इस पर भी त्रिवेणी और उसके चाचा की बात न तो उसने पुलिस को बताई और न ही अपने मामा पद्मजीतसिंह को।

५

उक्त घटना के तीन दिन बाद कुरेड़ी में तार पहुँचा। लिखा था, "होल फैमिली मिसिंग। बटनसिंह फाउण्ड डेड ऑन रोड-साइड।— दुर्गानन्दनसिंह।"

समाचार मिलते ही पद्मजीतसिंह नैनीताल जा पहुँचा। दुर्गानन्दनसिंह पुलिसवालों के साथ मिलकर नर्मदारानी आदि का सुराग लगाने का यत्न कर रहा था।

बटनसिंह की पत्नी और विन्ध्यवासिनी भी पद्मजीतसिंह के साथ आए थे। सब उसी लॉज में ठहरे हुए थे जिसमें नर्मदा इत्यादि ठहरे थे। बटनसिंह का संस्कार तो उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचने से पहले ही कर दिया गया था। उसकी मरणोत्तर शव-परीक्षा की गई थी। उसमें यही लिखा था कि सिर पर किसी सख़्त वस्तु की चोट से खोपड़ी फट गई और तुरन्त उसकी मृत्यु हो गई है।

पुलिस कुछ भी सुराग नहीं पा रही थी। दुर्गानन्दन के बयान और फिर उसपर जाँच-पड़ताल हो रही थी। दुर्गानन्दन का तो यह कहना था कि उसकी परिवार के बच्चों के साथ बनती नहीं थी, इस कारण वह पृथक् घूमने के लिए जाया करता था। सीता, पृथिवीपाल और श्रीपति दिन में दो बार घूमने जाया करते थे। दोनों बार वह उनके साथ नहीं जाता था। प्रातःकाल वे केवल बटनसिंह के साथ जाते थे और मध्याह्नोत्तर मामी भी उनके साथ जाया करती थी। सायंकाल जब वह लौटा करता था तो सब परिवार लॉज में पहुँच चुका होता था। घटना के दिन वह गया तो वे नहीं लौटे थे। रातभर वह उनके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। प्रातः जब वह पुलिस को सूचना देने गया तो वहाँ उसको बटनसिंह का शव मिला।

पद्मजीतसिंह नैनीताल में ख़ोज करने के लिए पुलिसवालों को प्रोत्साहन दे रहा था। उसने बच्चों और पत्नी का पता करनेवालों को दस सहस्र रुपया इना'' की घोषणा की थी। पुलिस सरगरमी से यत्न कर रही थी।

बटनसिंह की अस्थियों का संचय किया गया और उसकी पत्नी अपना लड़का पाने की आशा में वहाँ टिकी हुई थी। उनको नैनीताल में पहुँचे दूसरा दिन था कि रायबरेली से तार आया, "मैं पृथिवी के साथ यहाँ पहुँच गई हूँ।—नर्मदा।"

इस तार को पुलिस को दिखा पद्मजीतसिंह वगैरह वापस कुरेड़ी पहुँच गए। नर्मदा ने अपने बयान रायबरेली-पुलिस में लिखा दिए। उसने लिखाया—

"श्रीपति और सीता कुछ आगे निकल गए थे। बटनसिंह उनके पीछे-पीछे जा रहा था। पृथिवीपाल और मैं पीछे रह गए थे। पहाड़ के मोड़ पर वे हमारी दृष्टि से ओझल हुए तो बटनसिंह की 'मारा! मारा!!' की आवाज़ें आने लगीं। हम भागते हुए मोड़ पर गए तो हमको दस-बारह लाठीधारी लोगों ने घेर लिया। बटनसिंह रक्त से लथपथ औंधे मुख सड़क पर पड़ा था। मैं जान नहीं सकी कि वह जीवित है अथवा मरा हुआ। उन लाठीधारी डाकुओं ने हमको कहा कि हम चुपचाप चल देंगे अथवा हमारे मुख में कपड़ा ठूँसना पड़ेगा? मैंने चुपचाप चलना उचित समझा। उनमें से एक आदमी बटनसिंह के पास ठहर गया। शेष लोग हमको घेरे हुए पगडंडी से पहाड़ की ओर चले। ऊपर एक बँगला था। हमको उसमें बन्द कर बाहर से ताला लगा दिया गया। इसके बाद हमको एक आदमी रात का खाना खिलाने आया और बोला कि हमको भूल से पकड़ा गया है। मैंने उससे जब यह पूछा के वे किसको पकड़ना चाहते थे तो उसने कहा कि यह उसको नहीं बताया गयां। इतनी ही पता चला है कि हमारे चौकीदार की हत्या व्यर्थ में हो गई है।

"मैं बहुत बातें करना नहीं चाहती थी। इसलिए मैंने कहा कि फिर हमको छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाए जिससे हम जाकर बटनसिंह की सुधि ले सकें।

"इसपर उस आदमी ने बताया कि बटनसिंह की मृत्युं हो चुकी है। हमको छोड़ देने का तो निश्चय हो गया है किन्तु कब और कहाँ, यह अभी निश्चय नहीं हुआ।

"मैंने पूछा कि इसका फैसला कौन करेगा? हमें उसके सम्मुख ले चलो।

"वह कहने लगा कि इस समय हम खाना खाकर सो जावें। सवेरे दिन निकलने पर ही कुछ होगा।

"हम तो सो नहीं सके; केवल सीता ही सोई थी। श्रीपति कहता था कि वह भागकर जा सकता है और पुलिस में रिपोर्ट लिखा सकता है, परन्तु मैंने स्वीकृति नहीं दी। पहाड़ों पर बिना भली-भाँति मार्ग से परिचित होने से रात के समय घूमना मैं भयरहित नहीं समझती थी।

"रात के दो बजे के लगभग कोई आया और द्वार खटखटाकर हमको साथ ले पहले चढ़ाई चढ़ता रहा और फिर उतराई पर ले आया। हम एक सड़क पर पहुँच गए। यह सड़क वह नहीं थी जिसपर हमको पकड़ा गया था। यह तो पक्की मोटर चलने लायक सड़क थी। वहाँ एक मोटर खड़ी थी। हमको उसमें बैठाकर मोटर चला दी गई। मार्ग में एक स्थान पर हमको चाय पिलाई गई। उस समय अभी दिन नहीं निकला था। हम चारों चाय पीकर अचेत हो गए। मेरा विचार है कि चाय में कोई मादक द्रव्य मिला हुआ था। इसके बाद मुझे ज्ञान नहीं कि क्या हुआ।

"मैं जब सचेत हुई तो स्वयं को रायबरेली के एक निर्जन स्थान पर पेड़ के नीचे पाया। केवल मैं और पृथिवीपाल वहाँ थे, सीता और श्रीपति वहाँ नहीं थे। मुझसे पहले पृथिवीपाल को चेतना आई। उसने यत्न कर मुझे सचेत किया।

"हम लोग उठे और धीरे-धीरे वहाँ से चलकर एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ पानी निकालते हुए लोगों से उस स्थान के विषय में पूछने लगे। हमने जब उनको अपनी कथा बताई तो उन्होंने कहा कि वे लगभग प्रातः चार बजे से वहाँ पर काम कर रहे हैं और तब से उन्होंने वहाँ किसीको आते-जाते नहीं देखा, अर्थात् उससे पहले ही हमको वहाँ लाकर लिटा दिया गया होगा।

"नैनीताल में पकड़े जाने के समय हमारी जेबों में कुछ रुपये थे। वे सब-के-सब वैसे ही थे। उनको किसीने हाथ नहीं लगाया था।

"कुएँ पर हमने जल से मुँह धोया और फिर रायबरेली पुलिस चौकी में पहुँच अपना नाम-धाम और घटना की रपट लिखा रही हूँ।"

कुरेड़ी जाकर पता चला कि बाबू साहब नैनीताल गए हुए हैं। नर्मदा ने उसी समय एक आदमी को तार देने के लिए भेज दिया।

पुलिस एक बार नर्मदा को नैनीताल ले गई और घटनास्थल से उस बँगले तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें उनको कैद किया गया था और वहाँ से सड़क तक पहुँचने का मार्ग और वह स्थान जहाँ चाय पी गई थी देखा गया और पुलिस पता करने लगी कि घटना के दिन उस बँगले में कौन ठहरा हुआ था।

जाँच करने पर पता चला कि घटना के दिन मध्याह्नोत्तर कुछ आदमी वहाँ आए और चौकीदार को बलपूर्वक पकड़कर उसके हाथ-पाँव बाँध, उसके मुख में कपड़ा ठूँस उसको एक कमरे में बन्द कर दिया गया। उसको तब छोड़ा जब बँगला खाली कर दिया गया था। उसने रिपोर्ट इस कारण नहीं लिखाई कि न तो बँगले में से कोई वस्तु चोरी गई थी और न ही डाका डालनेवालों को नावाजिब कोई कार्य करते देखा था।

बाबू पद्मजीतसिंह जब एकान्त में नर्मदा से पूछने लगा तो उसने अपने मन का संशय बताते हुए कहा, "मुझे तो संदेह है कि यह काम छोटेलाल अथवा उसके पुत्रों का है। वे शायद विन्ध्यवासिनी को पकड़ना चाहते थे। किसीने उसको बताया होगा कि कुरेड़ी की बहुआइन अपने पुत्र के साथ ठहरी हुई है। उन्होंने मुझे विन्ध्यवासिनी समझ पकड़ा था। परन्तु उनमें से मेरे सामने कोई नहीं आया। वे समझते होंगे कि मैं उनको पहचान जाऊँगी।

"अब भी मुझको छोड़ दिया है परन्तु विन्ध्यवासिनी की लड़की सीता को पकड़ रखा है। भगवान जाने सीता की माँ के विवाह के समय के अपमान का बदला उससे ले रहे हैं। मैं समझती हूँ कि श्रीपति को तो पृथिवी के भुलावे में पकड़ रखा है।"

पद्मजीतसिंह शान्तिप्रिय आदमी था और उसमें व्यावहारिक बुद्धि भी थी। उसने नर्मदा के अनुमान को ठीक मान कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अपराधियों को दण्ड दिलाना गौण है, सीता को छुड़ाना मुख्य। और इसके लिए पुलिस और अदालत से बाहर यत्न होना चाहिए।"

इस यत्न के लिए विचार-विनिमय हुआ और फिर नर्मदा के माता-पिता को बुलवाया गया। नर्मदा की माँ यमुना और पिता महेश्वरसिंह आए तो नर्मदा ने अपनी माँ से नैनीताल में हुई घटना का वर्णन कर दिया। उसका कहना था, "मैं जानती हूँ कि यह कर्म जीजाजी ने किया है। यह सब उन्होंने क्रोधवश किया प्रतीत होता है। मगर जो तथ्य मुझको पता चले हैं उनके बताने पर निश्चय ही उनपर मुसीबत आवेगी। एक की तो हत्या हो चुकी है और श्रीपति और सीता के विषय में ज्ञात नहीं कि वे जीवित हैं अथवा नहीं।

"इस कारण बात और बढ़ जाने से पहले पूर्व की भाँति पुनः सुलह हो सकती है। मगर उसके लिए शर्त यह है कि सीता और श्रीपति को तुरन्त वापस भेज दिया जाए और फिर किसी प्रकार दोनों परिवारों में सुलह कराई जाए।"

महेश्वरसिंह कहता था कि पहले तो हम जानते नहीं कि छोटेलाल अथवा उसके पुत्रों ने कुछ किया है, और यदि किया भी है तो वे मानेंगे नहीं। साथ ही उनको यह भी विश्वास नहीं आवेगा कि सीता को भेज देने के बाद मामला रफा-दफा हो जावेगा। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस-केस होगा और पुलिस उसको चलाएगी। पद्मजीतसिंह विवश होकर पुलिस की सहायता करेगा।

नर्मदा ने कहा, "सात वर्ष पूर्व भी तो इसी प्रकार का केस पुलिस के हाथ में था। आगज़नी का केस था और आज से वह मुआमला अधिक साफ था। जब वह रफा-दफा हो गया है तो आज जिसका पुलिस को सुराग भी नहीं मिला, सुगमता से टाला जा सकेगा।"

"परन्तु नर्मदा ! तुम्हारे सन्देह में सचाई है क्या ?"

"यह तो आप देहरा जाकर पता कर लेना।"

"यदि तुम सन्देह का कारण बता दो तो हम कुछ अधिक सहायता कर सकते हैं।"

नर्मदा ने कहा, "मैं वे सब बातें तब बताऊँगी जब सीता और श्रीपति यहाँ पहुँच जावेंगे। पहले बताने पर तो जीजाजी उन प्रमाणों को मिटाने का यत्न करेंगे।

"यदि एक सप्ताह के भीतर-भीतर वे सीता को यहाँ पहुँचा नहीं देते हैं तो फिर मैं अपने प्रमाण पुलिस को दे दूँगी।"

"अपनी बहिन को विधवा बनाने का प्रबन्ध कर दोगी ?"

"एक और बहिन है, वह विधवा हो गई है, उसका लड़का भी लापता है। मैं अपने पति और उस बहिन के पति का पक्ष लूँगी।"

"उस पति का, जिसने तुमपर सौत बिठाई है ?" महेश्वरसिंह का कहना था।

"यह मेरे और उनके भीतर की बात है। इस विषय में हमारा परस्पर समझौता हो चुका है। उस समझौते को हुए आज सात वर्ष हो चुके हैं और मेरे पति उसका सत्य हृदय से पालन कर रहे हैं।"

महेश्वरसिंह निरुत्तर था। नर्मदा समझ गई कि इस विषय में उसके पिता अपने दामाद के अपराध को जानते हैं। इससे वह सतर्क थी और उसने इसलिए पुनः एक सप्ताह की बात दोहरा दी।

महेश्वरसिंह देहरा ताल्लुकेदारी में एक साधारण दर्जे का ज़मींदार था। वह अपनी छोटी लड़की नर्मदा बाबू पद्मजीतसिंह को देकर उसपर बहुत एहसान किया मानता था। पद्मजीत देहरावालों से ज़मींदारी के विचार से बहुत छोटे दर्जे पर था। इस कारण महेश्वरसिंह अपनी बड़ी लड़की सुभद्रा का सदा पक्ष लेता रहता था।

६

दुर्गानन्दन पद्मजीतसिंह के साथ ही नैनीताल से लौट आया था। परन्तु वह लखनऊ में ही उतर गया और अपने घर चला गया।

दुर्गानन्दन बिना सूचना के ही घर पहुँचा तो उसकी माँ मोहिनी ने पूछा, "जल्दी ही लौट आए हो दुर्गा ! तुमने तो लिखा था कि एक महीना और रहने का विचार है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, माँ ! वहाँ एक दुर्धटना हो गई है।"

दुर्गानन्दन ने उस घटना का सविस्तार वर्णन अपनी माँ के सम्मुख कर दिया।

माँ ने पूछा, "तो नर्मदारानी मिल गई है ?"

"हाँ, नैनीताल में तार मिला था कि वह पृथिवी के साथ घर पहुँच गई है। पर माँ ! सीता और चौकीदार का लड़का अभी नहीं मिले। मैं मामाजी के साथ ही चला आया हूँ। तुमको यह वृत्तान्त बताने के लिए यहाँ ठहर गया हूँ।"

"मैं तो आज ही कुरेड़ी जाऊँगी।"

"हाँ माँ ! जाना चाहिए। तुम वहाँ हो आओ तो मैं तुमको एक अपने काम से भेजना चाहता हूँ।"

"किस काम पर और कहाँ ?"

"देहरा। मेरी सगाई के लिए तुमको वहाँ जाना होगा।"

"वे अच्छे आदमी नहीं हैं।"

"उनसे मुझे क्या करना है ? लड़की बहुत अच्छी है। देहरा के बाबू साहब की पोती है।"

"अच्छा, पहले मैं भैया से मिल आऊँ। वहाँ से लौटने पर इस विषय में विचार करूँगी।"

"पिताजी कहाँ हैं ?"

"इलाहाबाद गए हैं, वहाँ कांग्रेस की मीटिंग है।"

"पर माँ ! कांग्रेस तो अब बागियों की जमाअत बन गई है ?"

"तुम्हारे पिता कांग्रेस के पुराने सदस्य हैं। पं० मोतीलालजी का सब पुराने सदस्यों को निमन्त्रण मिला है। सुना है, यहाँ से कुछ और लोग भी गए हैं।"

"पंडितजी ने तो बहुत धन पैदा कर लिया है। इसलिए अब उनको नेता बनने का शौक सवार हो रहा होगा।"

"तुम्हारे पिताजी की भी यही बात है। वे समझते हैं कि उन्होंने भी काफी अर्जन कर लिया है।"

दुर्गानन्दन के मस्तिष्क में अभी लेफ्टिनेंट महीपाल की बातें चक्कर काट रही थीं। वह मन में विचार करता था कि कहीं यू० पी० में भी मार्शल लॉ लग गया और महीपाल जैसों की रेजिमेंट यहाँ तैनात हो गई तो क्या होगा ? उसके वर्णन को स्मरण कर उसके पूर्ण शरीर में कँपकँपी आ गई।

मोहिनी ने उसी समय कुरेड़ी जाने की तैयारी कर दी। दुर्गानन्दन स्नानादि से निवृत्त हो अल्पाहार ले घर के बैठकघर में बैठ सिगरेट के कश खींचता हुआ त्रिवेणी के विषय में विचार करने लगा।

वह विचार कर रहा था कि स्वयं ही देहरा चला जावे और महीपाल से मिल आवे। पिर विचार करता था कि वह वहाँ गाँव में नहीं भी हो सकता। वह अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसीको जानता नहीं, और किसी अन्य से अपनी सगाई की बात करना बहुत लज्जाजनक होगा। इस कारण वह मन मसोसकर रह गया।

दिल बहलाने के लिए वह ज़रा कैसर बाग की सैर करने का विचार करने लगा। उस समय दिन के ग्यारह बजे थे और आकाश पर बादल छाए हुए थे। हल्की-हल्की बूँदाबाँदी होने लगी थी। दुर्गानन्दन विचार कर रहा था कि छाता लेकर जावे अथवा इस फुहार में भीगता हुआ चला जावे।

इस समय मकान के नीचे से चौकीदार आया और कहने लगा, "बिस्मिल साहब आए हैं।"

"किसलिए आए हैं?"

"वे बाबू साहब से मिलना चाहते थे। जब मैंने बताया कि वे इलाहाबाद गए हैं तो बबुआइन से मिलने के लिए कहने लगे। मैंने उन्हें अपने भाई से मिलने के लिए जाने की बात बताई तो फिर आपसे मिलने के लिए कह रहे हैं। कह रहे हैं कि बहुत आवश्यक काम है।"

"अच्छा, ले आओ।"

एक हृष्ट-पुष्ट पाँच फ़ीट सात इंच ऊँचा युवक उसके सामने आकर खड़ा हो गया। वह चूड़ीदार पाजामा, अचकन और लखनवी टोपी धारण किए हुए था। दुर्गानन्दन इस युवक को जानता था। उसको पता था कि वह कभी-कभी उसके पिता को अपने शे'र सुनाया करता था और उसका कुछ इनाम-इकराम ले जाता था। इस कारण उसका विचार था कि वह एक-आध शे'र सुनाने और कुछ रुपये ऐंठने आया होगा।

वह युवक बैठक में आया तो उसको वर्षा में भीगा हुआ देख उसने उसे कुर्सी पर बैठने तथा बिछे हुए कालीन पर चले आने के लिए नहीं कहा। दरवाज़े पर खड़े ही उससे पूछने लगा, "फरमाइए, क्या काम है?"

"दुर्गा भैया! पचास रुपये की सख्त ज़रूरत है, दे दो।"

"क्यों दे दूँ?"

इसपर तो युवक एक क्षण तक मौन रहा, फिर बोला, "इसलिए कि मेरे रुपये बाबू साहब के पास रखे हैं। उनमें से आवश्यकता पड़ने पर मैं लेने आया करता हूँ।"

"कितने रखे हैं?"

इस पर तो बिस्मिल साहब परेशानी अनुभव करने लगे। परन्तु तुरन्त ही सँभलकर कहने लगे, "हिसाब तो बाबू साहब के पास ही होगा। जब खतम हो जाते हैं तो वे बता दिया करते हैं। अभी तो हैं।"

"मैं नहीं जानता। वे आएँगे तो दे देंगे।"

"देखो दुर्गा भैया! बहुत सख्त ज़रूरत है। अभी, अभी ही। अन्यथा तुमको कष्ट नहीं देता।"

"पर मेरे पास हैं ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तुमको बताता हूँ कि बाबू साहब ने मेरे रुपये कहाँ रखे हैं। तुम वहाँ से निकाल दो।"

इससे तो दुर्गानन्दन को भारी विस्मय हुआ। उसने आश्चर्य में पूछ लिया, "भला बताओ तो कहाँ रखे हैं?"

दुर्गानन्दन का विचार था कि वह झूठ बोल रहा है। बिस्मिल ने बताया, "वह देखो, उस दर्पण के चारों किनारों पर फ्रेम में फूल बने हैं, उनमें से दाहिने हाथ के ऊपर वाले फूल को दबाओ तो यह दर्पण आलमारी के पल्ले की भाँति खुल जावेगा। उसके पीछे एक सन्दूकची में, जिसपर काला रोगन किया है, मेरे रुपये रखे हैं।"

यह रहस्य तो दुर्गानन्दन को भी पता नहीं था। इस कारण वह लपककर उठा और दर्पण के साथ लगे फूल को दबाने लगा। दबाते ही दर्पण पल्ले की भाँति खुल गया।

दर्पण के पीछे आलमारी थी। इसमें कई छोटे-मोटे डिब्बे रखे थे। सत्य ही उसमें एक संदूकची थी जिसमें काला रोगन किया हुआ था। दुर्गानन्दन ने सन्दूकची खोली तो उसमें कई सहस्र के नोट दिखाई दिए। यह देख तो दुर्गानन्दन की आँखें फट गईं। वह इस स्थान पर इतने रुपये होने की बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था, परन्तु सामने खड़े युवक को वह रुपया-दो रुपये मूल्य का आदमी समझता था।

इस प्रकार युवक को इस सन्दूकची में रखे धन को अपना कहते सुन विस्मय में उसका मुख देखने लगा। उसने कहा, "बात तो तुम्हारी ठीक है, परन्तु…"

"परन्तु क्या?"

"यह सब तुम्हारा है? तुम्हारा हो सकता है। और…।" वह कहता-कहता रुक गया। वह समझ नहीं पाया कि क्या कहे।

उसे इस प्रकार परेशान देख बिस्मिल ने कहा, "देखो भैया! एक बात तो साबित हो गई कि मुझे इसका ज्ञान है और सत्य ज्ञान है। इससे यह बात तुम समझ सकते हो कि ये मेरे भी हो सकते हैं। अब तुम इसमें से पचास दे दो, मुझे बहुत जल्दी है।"

दुर्गा वे सब रुपये गिन डालना चाहता था, परन्तु इस युवक के सम्मुख वह ऐसा करना नहीं चाहता था। अतः उसने सन्दूकची में से पचास रुपये निकाले और सन्दूकची को अपने स्थान पर रख दर्पणवाले पल्ले को बन्द कर रुपये युवक को देते हुए बोला, "तुम्हारी इस जानकारी से यह अनुमान लगा सकता हूँ कि ये रुपये तुम्हारे हैं। सो तुमको इतने दे रहा हूँ।"

युवक ने उससे रुपये लिये और अचकन के बटन खोल भीतर का कुर्ता ऊपर कर बनियान की जेब से चमड़े का बटुआ निकाला उसमें रुपये रख अचकन के बटन बन्द कर 'जय भवानी!' का घोष किया और वहाँ से चल दिया।

दुर्गानन्दन ने उसके जाते ही बैठक का दरवाज़ा बन्द कर दिया। पुनः दर्पणवाला पल्ला खोला और सन्दूकची निकाल रुपये गिनने लगा। सौ-सौ के नोटं थे। कुछ हज़ार-हज़ार के भी थे, और दस-दस के तो बहुत थे। गिनने पर पता चला कि पचीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार पाँच सौ पचपन अभी भी उसमें विद्यमान थे।

कितने ही समय तक वह रुपयों को थामे विस्मय करता रहा। उसकी समझ में आया कि यह ज़रूर कोई चोर है, पिताजी के पास चोरी का धन रख जाता है। यदि उसके पास इतना रुपया है तो बैंक में हिसाब क्यों नहीं खोल लेता?

उसने सन्दूकची अपने स्थान पर रख आलमारी बन्द कर दी।

७

इस समय वर्षा ज़ोर की होने लगी थी, इस कारण वह घर से गया नहीं। उसने भोजन किया और लेट रहा। तीसरे प्रहर आसमान खुला तो वर्षा थम गई थी। अब उसने कपड़े पहने और घर से निकल गया।

हज़रतगंज में एक नया रेस्तराँ खुला था। वह उसमें चाय पीने के लिए जा बैठा। बैठते ही उसकी दृष्टि अपने सामने मेज़ पर जा पड़ी। महीपाल वहाँ बैठा था। इससे वह लपककर उठा और उसके पास जाकर बोला, "लेफ्टिनेंट साहब! आदाब अर्ज़ है।"

महीपाल गम्भीर विचार में डूबा हुआ था। वह इस प्रकार अपने को सम्बोधित किया जाता सुन चौंका और सामने दुर्गानन्दन को देख सतर्क हो पूछने लगा, "तो तुम भी वहाँ से चले आए हो?"

"मामी के गुम हो जाने के बाद वहाँ रह जाने में कोई भी प्रयोजन नहीं रह गया था। फिर मामाजी भी आ गए थे और अभी पुलिस को कुछ भी पता नहीं चला था कि रायबरेली से एक तार पहुँच गया। वह तार मामी की ओर से था और उसमें लिखा था कि वे और पृथिवीपालसिंह घर पहुँच गए हैं। सीता और साथ के छोकरा श्रीपति का पता नहीं है।"

"यह श्रीपति कौन है?" विस्मय में महीपाल ने पूछा।

"यह उसी चौकीदार का लड़का है, जो मारा गया है।"

"मगर...।" महीपाल कहनेवाला था कि उसकी पोशाक और रूप-राशि से तो वह पृथिवीपाल समझ आया था। परन्तु यह विचार कर कि इतना कहना तो इस मूर्ख को बहुत-कुछ बता देना होगा, वह चुप ही रहा।

दुर्गानन्दन को सन्देह हो रहा था कि चीना पीकवाली घटना के विषय में महीपाल बहुत-कुछ जानता है, परन्तु वह उसको बता नहीं रहा। इस कारण उसको चुप देख पूछने लगा, "मगर क्या?"

"यही कि चौकीदार के लड़के को रोके रखने से तो उसके लिए ही यह डाका डाला गया प्रतीत होता है।"

"मगर सीता भी तो नहीं मिली?"

"डाकू उसको भी उसकी बहिन ही समझते होंगे।"

"मगर लेफ्टिनेंट! डाकुओं को उस गरीब से क्या लेना होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसकी पत्नी से मित्रता होगी।"

"मैंने उसे देखा नहीं, आपका अनुमान ठीक भी हो सकता है।"

दुर्गानन्दन बात को बदलकर त्रिवेणी के विषय में बात करना चाहता था। इसी समय बैरा चाय ले आया। महीपाल ने दुर्गानन्दन के लिए प्याला लगवा लिया और खाने के लिए 'स्नैक्स' मँगवा लिये।

बैरा गया तो दुर्गानन्दन ने पूछा, "त्रिवेणी कहाँ है?"

"अपने माता-पिता के पास चली गई है।"

"देहरा में ?"

महीपाल का विचार था कि दुर्गानन्दन उसका पता नहीं जानता है। उसके इस ज्ञान से वह चौंका, परन्तु शीघ्र ही स्वयं पर नियन्त्रण कर वह बोला, "हाँ।"

"आपने मेरे विषय में उसके माता-पिता से कुछ बात की है?"

"उसके माता-पिता से तो नहीं, मगर त्रिवेणी से ही रेल में आते हुए तुम्हारे विषय में उसके विचार जानने चाहे थे।"

"क्या कहती थी वह?"

"दुर्गानन्दन! बुरा मानने की बात नहीं। वह बच्ची है और हम जैसे सांसारिक जीवों की भाँति अपने मन के भावों को छिपा नहीं सकती। उसका कहना था, 'यू लुक लाइक एन ईडियेट'।"

यह कहता-कहता महीपाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। दुर्गानन्दन का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसने अपने चाय के प्याले में से सुरकी ले स्वयं को नियन्त्रित करते हुए कहा, "मैं भी आपसे एक बात कहना चाहता हूँ। आशा है कि आप नाराज़ नहीं होंगे।"

"हाँ, हाँ, कहो-कहो! मैं नाराज़ क्यों हूँगा? जैसे त्रिवेणी को मैं बच्ची समझता हूँ वैसे ही तुमको भी मैं बच्चा ही मानता हूँ। क्या आयु है तुम्हारी?"

"अठारह वर्ष है। हाँ, तो एक मूर्ख के अनुमान की बात बताता हूँ। वह यह कि आप सरासर झूठ बोल रहे हैं। त्रिवेणी ने ऐसा कुछ नहीं कहा। मेरे पास इसका प्रमाण है, कहें तो बताऊँ।"

"हाँ।" हँसते हुए महीपाल ने कहा।

"मैं वहाँ त्रिवेणी के पास पन्द्रह दिन तक रहा हूँ और एक दिन भी उसने अंग्रेज़ी में बात नहीं की। दूसरे, वह मुझे इतनी बेवकूफ मालूम नहीं होती कि अपने मन की बात एक बेवकूफ के सामने साफ-साफ कह देती। वह बहुत···।"

दुर्गानन्दन अपनी बात पूरी करे इससे पूर्व महीपाल ने उसके गाल पर एक चपत लगाकर कह दिया, "दुर्गा! यह एक बेवकूफ का तुम्हारे लिए उपहार है।"

दुर्गानन्दन तो विचार कर रहा था कि वह उसको चीना पीकवाली घटना में अपना संशय बता दे, किन्तु चपत खाकर उसने विचार त्याग दिया। उसे क्रोध तो बहुत आया परन्तु वह इतनी बुद्धि रखता था कि अपने से अधिक बलवाले और सैनिक पोशाक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजे व्यक्ति से एक रेस्तराँ में न भिड़े। उसने अपने गाल पर हाथ फेरते हुए कहा, "धन्यवाद। अब मुझे अपनी भूल का ज्ञान हो गया है। हाँ, तो यह चाय का बिल मैं दे दूँ?"

"क्यों, तुम क्यों दोगे?"

"आपके प्यार के प्रतिकारस्वरूप।"

"क्षमा करना दुर्गानन्दन! मुझे स्वयं को मूर्ख सुनने का अभ्यास नहीं है।"

"कुछ बात नहीं। यह तो आपको पता लग गया है कि मैं इतना मूर्ख नहीं जितना कि आप समझते थे। मैं आशा करता हूँ कि त्रिवेणी को आप कह देंगे कि आपका ख़याल मेरे विषय में बदल गया है। अच्छा, अब मैं चलता हूँ और आशा करता हूँ कि किसी अच्छी दिशा में अब आपसे भेंट होगी।"

"हाँ, हाँ, भाईजान! फिर मिलेंगे।" महीपाल ने कहा तो दुर्गानन्दन वहाँ से चल दिया।

दुर्गानन्दन रेस्तराँ से बाहर निकला तो फिर बूँदाबाँदी शुरू हो गई थी। वह एक इक्के में सवार हो अपने मकान लाटूश रोड की ओर चल पड़ा।

घर की ओर जाते हुए इक्के में बैठा वह अपने इस अपमान का बदला लेने का विचार करता रहा। उसके मन में यह बात आई कि वह नैनीताल जाकर पुलिस को करीम के विषय में बता दे और अपना सन्देह भी बता दे। पर त्रिवेणी की सूरत जब उसके सामने आती थी तो वह अपना विचार बदल लेता था। वह समझता था कि एक बार वह मुखबिर बना और इसका ज्ञान त्रिवेणी और उसके माता-पिता को हुआ तो फिर उसके साथ विवाह असम्भव हो जावेगा।

इसी उधेड़बुन में वह घर पर पड़ा रहा। सायंकाल उसके पिता दानसिंह इलाहाबाद से लौट आए। उनको उसने अपनी माताजी के कुरेड़ी जाने की सूचना दे दी, साथ ही जाने का कारण भी बता दिया।

उसने देखा कि इस सूचना से उसका पिता गम्भीर हो गया है। वह उनका मुख देखता रह गया। दानसिंह ने पूछा, "तुम उनके साथ कुरेड़ी तक क्यों नहीं गए?"

"मैं समझता था कि आपको सब बात बता दूँ। आप उनकी कुछ तो सहायता कर सकेंगे। मैं क्या कर सकता था?"

दानसिंह ने इसपर कहा, "मैं कल प्रातःकाल कुरेड़ी जा रहा हूँ। तुम भी मेरे साथ चलना। मैं सात बजे की रेलगाड़ी से जा रहा हूँ। उस समय तक तैयार हो जाना।"

"पिताजी! मुझे पाँच बजे जगा देना।"

"तुम्हारा टाइम पीस कहाँ है, उसमें अलार्म लगाकर सोना।"

"फिर भी क्या जाने उससे नींद न खुले!"

इसी समय उसको शीशेवाली आलमारी में रुपयों की बात स्मरण हो आई। उसने कहा, "वह शायर आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन शायर ?"

"वही बिस्मिल।"

दानसिंह सतर्क हो पूछने लगा, "क्या कहता था ?"

"कहता था कि उसके रुपये यहाँ रखे हैं उनमें से मैं पचास रुपये उसको दे दूँ।

"मेरे पास तो रुपये थे नहीं। जब मैंने बताया तो वह कहने लगा कि उसके रुपये उस दर्पण के पीछे रखे हैं। उसने उसको खोलने का ढंग भी बताया। मैंने उसके कहने से उसे खोला और उसको पचास रुपये दे दिए।"

"अच्छी बात है। मगर उन रुपयों में से निकालना नहीं। वे अमानत के रुपये हैं।"

"पिताजी ! वे सब रुपये क्या उसके ही हैं ?"

"तुमने गिने थे क्या ?"

"हाँ, अब उसमें पचीस हज़ार पाँच सौ पचपन रुपये हैं।"

"ठीक है।"

"तो यह रुपये उसके हैं, जिसके पाँव में अक्सर टूटी चप्पल होती है ?"

"वास्तव में वे मेरे दान के लिए रुपये हैं। उस राशि में से मैं कुछ संस्थाओं को दिया करता हूँ। जब वे माँगने के लिए आते हैं तो मैं इसमें दे दिया करता हूँ; यदि तुमने अथवा घर के किसी भी व्यक्ति ने इनमें से रुपये निकाले तो परमात्मा तुम लोगों को क्षमा नहीं करेगा। तुम्हारी माँ को इन रुपयों का ज्ञान है।"

"पर पिताजी ! इतना रुपया इस प्रकार अरक्षित क्यों रखा गया है और क्या इसके लेनेवाले सब लोगों को पता है कि यह रुपया यहाँ रखा है और इसको किस प्रकार निकाला जा सकता है ?"

"हाँ, कभी घर पर जब कोई नहीं होता है तो वे स्वयं भी निकालकर ले जाते हैं।"

"जितनी इच्छा हो ले जाते हैं ?"

"हाँ, वे सब-के-सब बहुत ही ईमानदार आदमी हैं।"

दुर्गानन्दन को यही समझ आया कि उसका पिता उससे किसी प्रकार का लुकाव-छिपाव कर रहा है। कदाचित् यह सत्य ही चोरी का रुपया हो !

इसपर भी वह चुप रहा। अगले दिन उसको समय पर जगाने के लिए दानसिंह को उसके मुख पर ठंडे पानी के छींटे देने पड़े।

जब वे स्टेशन पर पहुँचे तो दुर्गानन्दन के विस्मय की सीमा न रही जब उसने थर्ड क्लास एक के डिब्बे में बिस्मिल को फटे चीथड़ों में बैठे देखा। वह भी उसी गाड़ी से जा रहा था जिसमें बैठकर वे रायबरेली जा रहे थे।

वे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में चढ़ने लगे तो दुर्गानन्दन ने अपने पिता से कहा, "पिताजी ! बिस्मिल भी इसी गाड़ी में बैठा है।"

"देखो, घर के बाहर हम उसको पहचानते नहीं। वह भी तुम्हें कभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचानेगा। याद रखना, नहीं तो फाँसी पर भी लटक सकते हो !"

इस बात ने तो दुर्गानन्दन के विचारों पर एक और रंग चढ़ा दिया। वह गम्भीर हो विचार करता हुआ बैठा रहा।

दुर्गानन्दन की माँ मोहिनी को यह आशा नहीं थी कि उसका पति और लड़का भी वहाँ चले आवेंगे। इससे वह उनके आने का समाचार पर उनके ठहरने के कमरे में जा पहुँची।

उसने अपने पति से कहा, "आपका आना ठीक ही समय पर हुआ है। नैनीताल से पुलिस इंस्पेक्टर भाभी के बयान लेने के लिए आया है।"

"नर्मदा का क्या विचार है ? वह क्या समझती है कि यह सब क्यों हुआ है ?"

"उसका कहना है कि यह धन के लिए तो डाका है नहीं।"

"तो किसलिए है ?"

"उसने अपनी माँ और पिता को बुलवाया है।"

"किस विचार से ?"

"उसका विचार है कि देहरावालों ने सात वर्ष पुरानी अदावत निकालने के लिए यह सब किया है।"

इसी समय उनके लिए अल्पाहार आ गया और जब वे दूध-मिठाई लेने लगे तो सेवक ने कहा, "बाबू साहब कह रहे हैं कि आप अल्पाहार लेकर बैठक में तशरीफ ले आइएगा। बड़ी बबुआइन के बयान होनेवाले हैं।"

८

नर्मदारानी ने नैनीताल से आए हुए पुलिस इंस्पेक्टर को अपना बयान दिया। उसने वह सब बता दिया जो रायबरेली-पुलिस में लिखवाया था। जब बयान लिखे जा चुके तो इंस्पेक्टर ने अपना अनुमान बताते हुए कहा, "हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कोई इधर का आदमी ही यह काम करनेवाला है। वह आपको जानता है। इसपर भी वह पकड़ना किसी और को चाहता था। दो बच्चों को रोकने का मतलब है कि वह शख्स जिसको वह पकड़ना चाहता था, इन दो बच्चों से सम्बन्ध रखता है। आपका कहना है कि लड़की आपकी सौतन की लड़की है और लड़का आपके चौकीदार का। चौकीदार के किसी सम्बन्धी ने इतना बड़ा जुर्म किया हो, समझ में नहीं आता।

"इस कारण इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि आपकी सौतन के बयान ले लिये जाएँ।"

नर्मदा के मन में भी यह सब था और इन्हीं बातों के लिए उसने अपनी माँ से कहा था कि उसको कुछ ऐसी बातें पता हैं जिनसे देहरावाले पकड़े जा सकते हैं। अब पुलिस इंस्पेक्टर को उसी प्रकार युक्ति करते सुन, जैसे वह कह रही थी, चुपचाप बैठी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू पद्मजीतसिंह ने कहा, "पूर्व इसके कि आप मेरी दूसरी पत्नी के बयान लें, मैं आपको कुछ तथ्य बताना चाहता हूँ, जिससे आपको उसके बयान लेने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।"

इसी समय दुर्गानन्दन ने कहा, "और उससे पूर्व मैं अपने नैनीतालवाले बयानों में कुछ वृद्धि करना चाहता हूँ।"

"कुछ नई बात हुई है ?"

"हाँ, मैं इन बातों को, जो अब मैं बतानेवाला हूँ, पहले इस घटना से सम्बन्धित नहीं समझता था।"

"तो पहले तुम ही लिखाओ।"

दुर्गानन्दन ने वह सब बात बता दी जो घटना के दिन महीपाल और करीम में हुई थी। उसने यह भी बताया कि महीपाल ने उसको अपना नाम-धाम तक नहीं बताया था। उसने उसका नाम तो होटल के रजिस्टर से पता किया है।

दुर्गानन्दन ने लखनऊ में महीपाल से पिछले दिन की भेंट में अपने उसके पते के ज्ञान की बात पर उसके गम्भीर हो जाने की बात बताई और जब उसको बताया कि लड़के का नाम श्रीपति है और वह चौकीदार का लड़का है तो उसने कहा था कि उसकी माँ के किसी मित्र ने यह डाका डाला होगा।

इसके पश्चात् जब पद्मजीतसिंह ने विन्ध्यवासिनी के विवाह की घटना का सविस्तार वर्णन किया तो इंस्पेक्टर ने अपना रजिस्टर लपेटा और वह रायबरेली को चल पड़ा।

दानसिंह, जो इस पूर्ण घटना का विवरण पास में बैठा चुपचाप सुन रहा था, पुलिस इंस्पेक्टर के साथ ही बाहर चला आया। उसने उसके साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "क्या समझे हैं इंस्पेक्टर साहब ?"

"इन बयानों से तो महीपाल अपराधी सिद्ध होता है।"

"और वह इस समय अपने विपरीत प्रमाणों को मिटाने के यत्न में लगा हुआ है।"

"हाँ, यह तो है ही।"

"वह बच्चों को मारकर उनको जलाकर उनकी हड्डियों को गोमती में प्रवाहित कर सकता है।"

इंस्पेक्टर विस्मय में अपने साथ चल रहे व्यक्ति का मुख देखने लगा। इसपर दानसिंह ने आगे कहा, "उसको उसके प्रयत्न से रोकने का यत्न किया जा सकता है।"

"क्या ?"

"रायबरेली के मजिस्ट्रेट से मिलकर उसको यह बयान दिखाकर उसके वारण्ट निकलवाने चाहिएँ और उनकी तीनों कोठियों की तलाशी के वारण्ट लेने चाहिएँ—एक लखनऊ की कोठी, दूसरी रायबरेली की और तीसरी देहरा की।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत मुश्किल है बाबू साहब !"

"आपके कष्ट के लिए तो आपकी खिदमत कर दूँगा। एक मजिस्ट्रेट मेरा परिचित है। मैं आपके साथ उसके पास चल सकता हूँ।"

"इस सबके लिए मुझे क्या इनाम मिलेगा ?"

दानसिंह ने पुलिस अधिकारी के मुख पर देखकर कह दिया, "एक सौ रुपया।"

"यह तो कुछ भी नहीं है।"

"अच्छा, तो दो सौ।"

"अजी नहीं।"

"तो स्वयं बता दो।"

"एक हज़ार।"

"नहीं जी, पाँच सौ।"

बात निश्चित हो गई और दो घंटे के भीतर वारण्ट और तलाशी की आज्ञाएँ पुलिस को मिल गईं।

सायंकाल से पूर्व तीनों कोठियों पर पुलिस बैठ गई और महीपाल के विरुद्ध वारण्ट पहले देहरा और पीछे लखनऊ गए। महीपाल पकड़ा नहीं गया। इसपर उसके वारण्ट उसकी रेजिमेंट के कमाण्डर के पास भेज दिए गए।

दानसिंह दिन-भर पुलिस इंस्पेक्टर के साथ रहा और वारण्ट तामील करवाने तथा सीता और श्रीपति की खोज करवाने में संलग्न रहा। इन दोनों कार्यों में वह सफल नहीं हो सका।

जब पुलिस इंस्पेक्टर नैनीताल चला गया और महीपाल और सीता आदि की खोज साधारण रूप से होने लगी तो दानसिंह कुरेड़ी लौट आया। यह अगले दिन दस बजे के लगभग का समय था।

तब तक नर्मदा के माता-पिता भी देहरा से वापस लौट आए थे। वे क्रोध से लाल-पीले हो रहे थे। उनका कहना था कि जब उनको एक काम से भेजा गया तो उस बीच में ही महीपाल आदि के वारण्ट क्यों निकलवाए गए ?

नर्मदा उनको समझा रही थी कि उसने तो बयान देने के अतिरिक्त कुछ किया ही नहीं। यह तो सब पुलिस-इंस्पेक्टर ने स्वयं ही किया है। उसने बयानों से अपने परिणाम निकाले और उनके अनुसार कार्यवाही की प्रतीत होती है। यह हत्या का मुकद्दमा है और दो नाबालिगों के अपहरण की बात है। इसमें हमारे कुछ करने अथवा न करने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

यह सब सफाई यमुना और महेश्वरसिंह को सन्तोष नहीं दे रही थी। वे क्रोध में वापस लौट जाना चाहते थे कि दानसिंह लौट आया। उसने जब महेश्वरसिंह और यमुना के क्रोध की बात सुनी तो उनसे मिलने चल पड़ा।

वे लोग नर्मदा के कमरे में बैठे हुए थे। सम्बन्ध इतने बिगड़ चुके थे कि एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में रहते हुए भी वे पिछली रात से बोल नहीं रहे थे।

दानसिंह ने कमरे के बाहर से आवाज़ दे दी। महेश्वरसिंह ने कहा, "कौन है ? क्या बात है ?"

नर्मदा ने आवाज़ पहचान ली और वह कमरे के बाहर चली आई।

नर्मदा दानसिंह को भीतर ले आई। नर्मदा को तीन कमरे मिले हुए थे। महेश्वरसिंह सपत्नीक सोए तो नर्मदा के कमरे में ही थे, इसपर भी उनका सामान बैठकघर में ही रखा हुआ था। इस समय वे जाने की तैयारी कर रहे थे।

दानसिंह ने बैठकघर में प्रवेश करते हुए महेश्वरसिंह से पूछा, "कहिए, क्या हो रहा है ?"

महेश्वरसिंह ने बैठे-बैठे अपने सूटकेस का सामान ठीक करते हुए कह दिया, "मैं अपनी लड़की से अन्तिम तिनका तोड़ जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"क्यों, क्या बात हुई है ?"

"तो आप नहीं जानते ?"

"जानता हूँ। परन्तु बाबू साहब, तिनका तोड़ना है तो सुभद्रा और उसके परिवारवालों से तोड़िए, न कि इस बेचारी से जो पहले ही शिकार हो रही है उनके अनाचार और क्रूरता का।"

तब तक महेश्वरसिंह अपने सूटकेस का ताला बन्द कर उठ खड़ा हुआ था। दानसिंह के सम्मुख खड़ा होकर वह कहने लगा, "नर्मदा ने हमको सुलह करने के लिए यत्न करने को कहा था। इस विचार से हम देहरा गए थे और महीपाल की प्रतीक्षा कर रहे थे कि पुलिस वहाँ पहुँच गई और लगी कोठी की तलाशी लेने !

"इसमें बाबू साहब इतने नाराज़ हो गए कि हमको वहाँ से निकल जाने का हुक्म हो गया।"

"तो आप उनसे तिनका तोड़ आए हैं ?" दानसिंह ने मुस्कराते हुए पूछा।

"यह तिनका तोड़ना तो नहीं कहा जा सकता। वह तो धक्के दे-देकर वहाँ से निकाला जाना कहलाता है।"

"भाई साहब ! एक ही अर्थ है, इन दोनों बातों का। एक ही तसवीर के दो रुख हैं। प्रश्न तो यह है कि आप क्या चाहते हैं और जो कुछ आप चाहते हैं वह आपके बस का है भी या नहीं।"

"हम यत्न तो कर ही सकते हैं।"

"वह तो आप अब भी कर सकते हैं।"

"वारंट निकल जाने के बाद भी कुछ हो सकेगा क्या ?"

"क्यों नहीं ! जो वारंट निकाल सकता है वह उनको वापस लेने की शक्ति भी तो रखता ही है।"

"तो यह दुष्टता आपने की है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दुष्टता नहीं भाई साहब! सत्कार्य कहिए। यह ठीक है कि उसका अभी तक प्रभाव प्रकट नहीं हुआ, परन्तु यह निश्चय है कि वह अपना प्रभाव दिखाए बिना रहेगा नहीं।

"हाँ, यदि आप यह कर सकें कि महीपाल के पकड़े जाने से पूर्व सीता और श्रीपति को यहाँ ला सकें तो मैं अपने सत्कार्य की दिशा बदलवा भी सकता हूँ।

"जाइए और यह करिए, और यदि नहीं कर सकते तो अपने इस निष्फल क्रोध को प्रकट कर मूर्ख मत बनिए।"

दानसिंह जाने के लिए लौटा तो यमुना ने, जो दानसिंह की डाँट सुन रही थी, कहा, "बाबू साहब! सुनिए।"

दानसिंह घूमकर वहीं पर खड़ा हो गया और पूछने लगा, "कहिए?"

"आप सत्य कहते हैं कि मुकद्दमा उठ सकता है?"

"हाँ, महीपाल के पकड़े जाने से पूर्व यदि बच्चे यहाँ पहुँच गए तो सब कार्यवाही बन्द कराई जा सकती है।"

"तो मैं यत्न करती हूँ।"

९

यमुना और महेश्वरसिंह गए तो फिर कुरेड़ी नहीं लौटे। महीपाल पकड़ा नहीं गया और सीता वापस नहीं आई, परन्तु श्रीपति लौट आया।

जिस दिन महीपाल की दुर्गानन्दन से लखनऊ के रेस्तराँ में भेंट हुई थी, उस दिन उस भेंट से पूर्व महीपाल सीता और श्रीपति से मिलकर आया था। वह अपनी मोटर के ड्राइवर के काम की सफलता देखने के लिए गया था। उसके आदेशानुसार ड्राइवर अचेत नर्मदा और बच्चों को लिये हुए देहरावालों की कोठी पर लखनऊ पहुँचा और दोनों बच्चों को वहाँ के चौकीदार के हवाले कर तथा छोटे सरकार अर्थात् महीपाल की पूर्ण आज्ञा सुना नर्मदा तथा पृथिवीपाल को रायबरेली के पास आमों के पेड़ों के एक झुरमुट में अचेत छोड़ देहरा चला गया था। उससे भूल यह हुई थी कि वह श्रीपति को बाबू साहब, कुरेड़ी का लड़का समझ लखनऊ कोठी छोड़ गया था और पृथिवीपाल को कोई अन्य बालक समझ नर्मदारानी के साथ छोड़ गया था।

जब महीपाल लखनऊ अपनी कोठी पहुँचा तो पहले चौकीदार से ही पूछने लगा, "ड्राइवर यहाँ किसी को छोड़ गया है?"

"जी हुजूर! एक लड़का और एक लड़की।"

"उनको कुछ खाने को भी दिया है कि नहीं?"

"कल तो वे सायंकाल तक अचेत रहे थे। जब उनको चेतना आई तो मैंने खाने के लिए पूछा। लड़की ने पानी माँगा। जब मैंने उसे पानी दिया तो उसने कै कर दी। लड़का पीकर हज़म कर गया। तब मैंने लड़की को आम की चटनी चाटने के लिए दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात बहुत देरी से वह खाना खाकर हज़म कर सकी है। आज भी उन्होंने प्रातः का अल्पाहार लिया है।"

"कहाँ हैं वे ?"

"पिछले कोठरी में बन्द रखे हैं। लड़का तो आज सुबह भाग चला था। मैंने उसे भागकर पकड़ा है, लड़की उस समय सो रही थी।"

"अच्छा, मैं उनको वहीं पर देखता हूँ। ध्यान रखना, कहीं भाग न जावें !"

श्रीपति और सीता जब रात खाना खाने के बाद कमरे में बन्द किए गए तो श्रीपति ने सीता को समझा दिया, "हमें रोना-धोना नहीं चाहिए। हमको अपने पकड़नेवालों के मन में विश्वास बिठाकर एक दिन यहाँ से भाग चलना चाहिए।"

सीता इस बात को समझ नहीं सकी थी। वह साधारण बच्चों की भाँति यह जानती थी कि जब कोई मन की बात न मानी जाए तो रोना-चिल्लाना चाहिए। इस कारण श्रीपति के बहुत समझाने पर भी तब ही उसने रोना बन्द किया था जब उसको नींद आ गई थी।

अगले दिन प्रातःकाल जब वह जगी तो फिर रोने लगी। इस समय वह चिल्ला नहीं रही थी, इसपर भी उसकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे थे। जब उसको अल्पाहार के लिए मिठ़ाई और दूध मिला तो वह चुप हो गई। उसने श्रीपति से पहला प्रश्न यही किया, "बड़ी माँ और पृथिवी भैया कहाँ हैं ?"

"मुझे पता नहीं और तुम इस प्रकार रोती रहोगी तो पता चलना मुश्किल हो जाएगा।"

"मैं नहीं रोती।"

"पर तुम तो अब भी रो रही हो।"

"नहीं, मैं रो नहीं रही।...." फिर कुछ विचार कर कहने लगी, "रोना आता है।"

श्रीपति मुस्कराया और कहने लगा, "मुझको तो रोना नहीं आता।"

सीता इसका कारण नहीं जानती थी कि उसको क्यों रोना आता है और श्रीपति को क्यों नहीं आता।

श्रीपति और सीता एक-दूसरे का मुख देखते रहे। बाहर कमरे पर ताला लगा था। इसी समय बाहर ताला खुला और महीपाल भीतर आ गया। चौकीदार महीपाल के साथ था। श्रीपति और सीता चौकीदार को जानते थे। वह उनको रात खाना दे गया था और फिर सुबह नाश्ता भी।

चौकीदार ने महीपाल की ओर आदर से देखकर कहा, "सरकार! यह लड़की बहुत शोर मचाती रही है। लड़का तो हँसता था।"

महीपाल ने पहले लड़के से ही पूछा, "तुम्हारी माँ कहाँ है ?"

"कौन माँ ?" श्रीपति ने पूछा, "समझ नहीं सका कि किसकी माँ के विषय में क्यों पूछा जा रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नर्मदारानी। वह तुम्हारे साथ थी न?"

श्रीपति को एक बात तुरन्त समझ में आ गई कि जब उनको नैनीताल में पकड़ा गया था तो पकड़नेवाले ने बताया था कि उनको भूल से पकड़ा गया है, अतः यह आदमी रानीजी को उसकी माँ समझ रहा है। इससे वह समझ गया कि कदाचित् उसको पृथिवीपाल समझा जा रहा है।

पहले वह बताने लगा था कि वह तो चौकीदार बटनसिंह का लड़का है, किन्तु फिर कुछ विचार कर चुप हो गया। उसे चुप देख महीपाल ने कहा, "तुम घर जाना चाहते हो?"

"क्या करूँगा जाकर?"

"तो यहाँ क्या करोगे?"

"पहले आप बताइए कि हमको यहाँ पकड़कर किसलिए रखा गया है?"

"इसलिए कि तुम्हारे बाप ने एक घोर अपराध किया था, इस कारण तुमको पकड़कर रखा है।"

"क्या अपराध किया था?"

"विन्ध्यवासिनी देवी से बलपूर्वक विवाह किया था।"

श्रीपति को विश्वास हो गया कि उसको पृथिवीपाल समझा जा रहा है। वह यह जानना चाहता था कि बड़ी माँ और पृथिवीपाल कहाँ हैं। इस कारण उसने पूछ लिया, "बड़ी माँ कहाँ हैं?"

"मैं क्या जानूँ! तुम्हारे ही तो साथ थी।"

"अच्छा, हमें कुरेड़ी पहुँचा दीजिए।"

"पहुँचा दूँगा। अगर तुम लोग चुपचाप यहाँ पर रहोगे तो तुम्हारी माँ को ढूँढकर तुम सबको एकसाथ पहुँचा दूँगा।"

"सीता रोती है, मैं तो रोता नहीं।"

महीपाल मुस्कराया और बहुत प्यार-भरी दृष्टि से सीता की ओर देखकर बोला, "तुम तो छोटी माँ के पास जाना चाहती हो न? तुम्हारी माँ को यहीं बुला लेंगे।"

"पर तुम हो कौन?" सीता ने पूछ लिया।

"तुम्हारा कुछ लगता हूँ, बड़ी होकर तुम जान जाओगी।"

"यह दरवाज़ा बन्द क्यों किया है?"

"बाहर चोर और डाकू घूमते हैं। वे मेरी सीतारानी को पकड़कर ले जावेंगे।"

"हमें टट्टी-पेशाब आवे तो कहाँ करें?" श्रीपति ने पूछा।

"दरवाज़ा खटखटा देना, यह तुमको टट्टी-पेशाब करा देगा।"

"हमारे कपड़े मैले हो रहे हैं।"

"तुम्हारे घर से तुम्हारे कपड़ों का सन्दूक मँगवा दूँगा।····अच्छा देखो पृथिवी!" महीपाल ने श्रीपति की आँखों में देखकर कहा, "मैं तुम्हारी बड़ी माँ को ढूँढने के लिए जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ। तुम दोनों को डाकुओं से बहुत कठिनाई से बचाया है। तुम्हारी माँ के मिलते ही तुम दोनों को हम कुरेड़ी पहुँचा देंगे। अगर तुम शोर नहीं मचाओगे तो तुमको बाहर बाग में घूमने जाने की भी इजाज़त हो सकती है।"

महीपाल चला गया। चौकीदार ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। बाहर ताला लगाने का भी शब्द हुआ।

अपनी योजना को यहाँ तक सफल हो गई समझ महीपाल कोठी से चला आया। अब वह किसी एकान्त स्थान में बैठ विचार करना चाहता था कि इन बच्चों को कहाँ सुरक्षित रखा जा सकता है। उसका विचार सीता और पृथिवी को पृथक्-पृथक् कर देने का था। पृथिवीपाल को तो वह कहीं कुली अथवा बर्तन माँजने के काम पर लगवा देना चाहता था। वह जानता था कि भली-भाँति मारे-पीटे बिना वह ऐसा काम करने के लिए तैयार नहीं होगा। इसके लिए वह इसको कहीं दूर देहात में रखने का विचार रखता था। वह उसको अपने किसी सैनिक साथी के गाँव भेजने का विचार कर रहा था।

सीता के लिए तो उसकी एक योजना थी कि इस लड़की को वेश्या के काम के लिए तैयार करना चाहिए। इसके लिए उसको लखनऊ में रंडियों के दलालों से बातचीत करनी थी।

इसी प्रकार योजनाएँ बनाता हुआ वह रेस्तराँ में जा पहुँचा। इस समय मध्याह्नोत्तर चार बज रहे थे। उसने चाय का अभी ऑर्डर दिया ही था कि दुर्गानन्दन से सामना हो गया।

दुर्गानन्दन से दो बातों का पता चला। एक तो दुर्गा जान गया था कि महीपाल देहरा का रहनेवाला है। दूसरे, उसको इस बात का ज्ञान हो गया था कि जिसको वह पद्मजीतसिंह का लड़का समझ रहा है वह तो चौकीदार का लड़का है। इसपर भी वह विचार करता था। उस लड़के ने इतने सहज भाव से स्वयं को ज़मींदार का लड़का प्रकट किया था कि दुर्गानन्दन के कथन में भूल की सम्भावना होने लगी।

वह जल्दी से कोठी पर पहुँचकर बच्चों को वहाँ से हटाकर किसी ऐसे स्थान पर ले-जाना चाहता था जिसका देहरावालों से किसी प्रकार का सम्बन्ध न हो। वह अभी भी विश्वास करता था कि दुर्गानन्दन को अभी उसका इन बच्चों तथा उनकी माँ के अपहरण के सम्बन्ध का ज्ञान नहीं हो सकता। इसपर भी वह स्वयं को सुरक्षित रखना चाहता था। अतः कुछ दिन के लिए वह अपने घरवालों से दूर रहना चाहता था।

यह भी एक कारण था कि उसने दुर्गानन्दन से झगड़ा कर उसको शीघ्र जाने के लिए विवश कर दिया। ज्योंही वह गया, महीपाल ने रेस्तराँ का बिल चुकाया और अपनी कोठी को चल पड़ा।

ज्यों ही वह कोठी में पहुँचा तो चौकीदार को पीतमुख देख प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा। चौकीदार ने हाथ जोड़ काँपते हुए कहा, "सरकार, लड़का तो भाग गया है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे ?"

"एक घंटा हुआ उसने दरवाज़ा खटखटाया था। मैं वहाँ गया तो कहने लगा कि उसको टट्टी आ रही है।

"कमरे से निकाल और कमरे को ताला लगा उसको संडास में भेज बाहर चौकीदारी करने लगा। पन्द्रह-बीस मिनट प्रतीक्षा करने के बाद जब वह नहीं आया तो मैं उसको आवाज़ देने लगा। जब वह बोला नहीं तो मैंने भीतर जाकर देखना चाहा, किन्तु वह वहाँ पर नहीं था।"

"तो कहाँ गया है ?"

"सरकार ! छत काफी ऊँची है, उसमें हवा के लिए एक सुराख है, उसमें से ही जा सकता है। परन्तु सरकार ! मैं तो क्या, कोई भी विचार नहीं कर सकता कि वह लड़का इतना ऊँचा कैसे चढ़ सका होगा।"

महीपाल संडास को देखने के लिए गया। उसकी छत के सुराख के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं था। छत संडास की भूमि से आठ फ़ीट ऊँची थी। महीपाल ने देखा कि दीवार पर पाँव घिसटने के ताज़ा निशान हैं। इसपर भी वह विस्मय कर रहा था कि वह इतने ऊँचे किस प्रकार गया होगा।

तो भी महीपाल को इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी सीता के भाग जाने पर उसको होती। विशेष रूप में दुर्गानन्दन की इस सूचना के अनन्तर, कि पृथिवीपाल तो अपनी माँ के साथ बच गया है, उसने उसकी चिन्ता नहीं की।

उसने चौकीदार को डाँटकर कहा, "तुम तो बिल्कुल गधे और गँवार हो ! एक बच्चे की भी निगरानी नहीं कर सकते।

"अच्छा चलो, लड़की को देखें, वह भी कहीं पंख लगाकर उड़ न गई हो !"

दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ लड़की थी। दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह सो रही है। महीपाल ने उसको जगाकर पूछा, "वह कहाँ गया है ?"

"टट्टी करने के लिए गया है।"

"मैं तुमको तुम्हारी माँ के पास ले-जाना चाहता हूँ।"

"और भैया श्रीपति ?"

"ओह !" महीपाल को अब दुर्गानन्दन की बात का विश्वास हो गया था।

"वह पीछे आ जाएगा। मैं तुम्हारी माँ के पास जा रहा हूँ, जल्दी करो !"

पुनः मोटर निकाली गई और लड़की को उसमें बिठाया गया। महीपाल स्वयं मोटर चला लखनऊ चौक की ओर ले गया। वहाँ से वह एक घंटे बाद लौटा। लड़की तब मोटर में नहीं थी। मोटर को गैरेज में बन्द कर चौकीदार को पाँच रुपये का एक नोट थमाते हुए कहा, "देखो, इन बच्चों के विषय में किसी को नहीं बताना !"

यह कह कि वह देहरा जा रहा है, महीपाल लखनऊ स्टेशन की ओर चल दिया। उस समय एक पैसेन्जर गाड़ी कानपुर जा रही थी। कानपुर का टिकट ले वह उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवार हो गया। श्रीपति के भाग जाने से वह यह आशा कर रहा था कि वह लड़का अवश्य पुलिस चौकी में जावेगा और पुलिस को लेकर कोठी में पहुँच जाएगा। इसके बाद जाँच-पड़ताल होगी। जब पुलिस को यह पता चलेगा कि यह लड़का नैनीताल से अचेत कर लाया गया है तो सीता के अपहरण का देहरा से सम्बन्ध जोड़ा जाएगा।

इसपर भी वह विचार करता रहा था कि इस सब खोज में कई दिन लग जाएँगे। अतः वह कुछ दिनों के लिए लापता हो जाना चाहता था।

१०

श्रीपति संडास की छत पर बने डेढ़ फ़ीट के रोशनदान में से निकलकर छत पर जा पहुँचा। वहाँ से पिछली ओर को उतर कोठी की चारदीवारी फाँदकर कोठी से बाहर हो भाग निकला। इससे उसको दिशा का ज्ञान तो रहा ही नहीं, वह यह भी नहीं जानता था कि वास्तव में वह है किस शहर में।

कोठी गोमती के किनारे पर थी, किन्तु श्रीपति इससे पूर्व कभी लखनऊ तो आया ही नहीं था, अतः वह वहाँ किसी भी स्थान अथवा वस्तु को पहचान नहीं रहा था। उसको यह जानने तथा पहचानने का अवकाश भी नहीं था। वह अपने और कोठी के बीच अधिक से अधिक अन्तर कर देना चाहता था। पहले प्रातःकाल वह भागता हुआ पकड़ा गया था। इस बार वह पकड़ा जाना नहीं चाहता था।

लगभग दो मील तक दौड़ने के बाद उसने साँस ली और घूमकर पीछे देखने लगा कि कोई उसके पीछे आ तो नहीं रहा? इस बार वह एक वीरान स्थान पर पहुँच गया था। उसको वहाँ दूर-दूर तक कोई आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। जब उसने स्वयं को अकेले पाया तो वह ठहर गया। अब वह थकावट अनुभव करने लगा था। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और विचार करने लगा कि उसको क्या करना चाहिए।

अब उसे सीता को पीछे छोड़ आने का दुःख होने लगा था। इस कारण वह विचार करने लगा कि वह यदि सीता का पता किसी को बताए तो किस प्रकार बताएगा? उसको ज्ञान नहीं रहा था कि वह किधर से आ रहा है। भागते हुए अपना पीछा करनेवालों को धोखा देते हुए वह एक-आध बार दाएँ-बाएँ घूमा भी था। उसको स्मरण नहीं रहा था कि वह कब किधर घूमा है।

कुछ देर विचार कर उसने नाक की सीध पर सीधे सामने की ओर चलते जाने का निश्चय किया और पहले मिलनेवाले आदमी से स्थान का नाम पूछने का विचार कर लिया।

आधा घंटा-भर और चलने पर उसको एक स्थान पर एक ग्वाला गाय चराता हुआ मिला। वह उसके पास जाकर पूछने लगा, "यह रास्ता किधर जाता है?"

बतानेवाले ने कहा, "बछरावाँ को।"

"बछरावाँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, क्यों ? क्या बात है ?"

"कुछ नहीं।" यह कहकर वह उस ओर ही चल दिया। उस समय दिन के चार बज रहे थे। उसने समझा था कि बछरावाँ समीप ही होगा। इस कारण वह चलता गया। उसको एक सन्तोष इस बात का था कि वह अपने घर के समीप ही था।

चलते-चलते रेल का मार्ग आया तो वह रेल की पटरी के सहारे-सहारे चलने लगा। सूर्यास्त हो गया, किन्तु अभी तक कोई स्टेशन दिखाई नहीं दिया। अब उसको परेशानी अनुभव होने लगी थी। अपने विचार से तो वह पूर्व दिशा की ओर जा रहा था। जब वह अँधेरा होने पर एक गाँव के पास पहुँचा तो वह गाँव में चला गया। पूछने पर पता चला कि वह कुन्दनगंज है। उसने एक आदमी से पूछा, "बछरावाँ किधर है ?"

"उस ओर से तो तुम आ ही रहे हो।"

यह सुनकर तो श्रीपति को परेशानी होने लगी। गाँववाले ने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो ?"

"मैं तो बछरावाँ जाना चाहता था, रास्ता भूल गया हूँ।"

"बछरावाँ तो यहाँ से छः मील है। अब रात हो गई है, इसलिए यहीं-कहीं रह जाओ, सवेरे चले जाना।"

"कहाँ रह जाऊँ ?"

"वह शिवालय है, वहाँ जाकर सो रहो।"

"पर मुझे तो भूख लगी है।"

"तो मेरे घर चलो, वहाँ कुछ-न-कुछ मिल ही जाएगा खाने के लिए।"

रात श्रीपति कुन्दनगंज में ही रहा। दिन निकलने पर वह वहाँ की पुलिस चौकी में पहुँचा और वहाँ उसने कुरेड़ी के बाबू साहब की लड़की के बन्दी होने की बात बताई।

वहाँ बैठे पुलिसवाले ने कहा, "थानेदार को आने दो, वह रपट लिखेगा।"

"वह कब आएगा ?"

"जब आ जाए।"

थानेदार मध्याह्न के उपरान्त आया और श्रीपति की बात सुन पूछने लगा, "कहाँ कैद कर रखा है ?"

"मैं बता नहीं सकता। मैं वहाँ से दीवार फाँदकर भागा तो मुझे दिशा का ज्ञान नहीं रहा।"

थानेदार ने हँसते हुए कह दिया, "लड़के! भाग जाओ, इस प्रकार रपट नहीं लिखी जा सकती।"

"मुझे मेरे घर पहुँचा दो।"

"हम तुम्हारे नौकर नहीं हैं। भाग जाओ यहाँ से !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपति को एक बात सूझी। वह रेल के स्टेशन पर पहुँच गया और पश्चिम से आनेवाली गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। उसने निश्चय कर लिया था कि बिना टिकट के गाड़ी में सवार हो रायबरेली को चल देगा। यदि पकड़ा गया, तो भी रायबरेली पहुँच उसके घरवालों को सूचना भेजी जा सकती है।

रात के दस बजे तक केवल दो गाड़ियाँ पश्चिम से आती हुई उधर से निकलीं किन्तु छोटा स्टेशन होने के कारण वे वहाँ पर रुकीं नहीं। रात के दस बजे एक गाड़ी आकर वहाँ पर रुकी। उसमें सवार हो वह ग्यारह बजे रायबरेली जा पहुँचा।

रायबरेली स्टेशन पर पहुँचकर उसने मुख्य द्वार से जाना भयावह समझा, इसलिए वह पटरी-पटरी चल दिया और स्टेशन से बाहर हो गया। स्टेशन से कुछ दूर जाने पर उसको एक बन्द दुकान दिखाई दी। उसके साथ ढासना लगाकर वह बैठ गया और वैसे ही सो गया।

जब उसकी नींद खुली तो दिन निकल चुका था। वहाँ से वह अपने गाँव के लिए चल पड़ा। दस बजे के लगभग गाँव पहुँच वह सीधा बाबू साहब की कोठी पर जा पहुँचा। बाबू साहब के मुंशी ने उसे देखा तो तुरन्त बाबू साहब को इसकी सूचना दी गई।

बाबू साहब भागते हुए आए और आकर उससे पूछने लगे कि वह कहाँ से और किस प्रकार आ पाया है।

इस समय दानसिंह महेश्वर सिंह और उसकी पत्नी को समझा रहा था।

जब पद्मजीतसिंह को श्रीपति की बात का कोई सिर-पैर पता न चल सका तो उसको बैठाया और अल्पाहार आदि करवाया। उसकी माँ को बुलवाया गया और फिर बाबू दानसिंह को भी बुलवाया गया। पृथिवीसिंह और विन्ध्यवासिनी भी उसके लौटने का समाचार सुनकर आ गए थे।

दानसिंह उससे प्रश्न पर प्रश्न पूछ रहा था। उसने उस कोठी के भीतर-बाहर का नक्शा पूछा तो उसने अपना अनुमान बता दिया कि यह देहरावालों की लखनऊ वाली कोठी की बात कर रहा है। एक घंटे श्रीपति को आराम करवा बाद में उसको रायबरेली पुलिस स्टेशन ले-जाया गया। वहाँ उसके बयान लिखवा और थानेदार को साथ लेकर दानसिंह लखनऊ को चल दिया।

जब श्रीपति ने कोठी पहचानी और उसके चौकीदार को पहचाना तो चौकीदार को पकड़ लिया गया और मार-पीटकर उससे स्वीकार करवा लिया गया कि वह लड़का और उसके साथ एक लड़की मोटर में बैठाकर कोठी में लाए गए थे। वे एक रात और अगला आधा दिन कोठी में रहे थे। महीपाल इनसे मिला था और चौकीदार को कहा था कि इनको सुरक्षित रखे। उसने बताया कि लड़का टट्टी करने के बहाने टट्टी में गया और फिर छत के रोशनदान से भाग गया।

उसके बाद महीपाल आया और लड़के के भाग जाने की बात सुन लड़की को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने साथ मोटर में कहीं ले गया था। वह नहीं जानता था कि कहाँ। एक घंटे के उपरान्त महीपाल खाली मोटर लेकर आया। मोटर को गैरेज में रखकर वह स्वयं कहीं पैदल ही चला गया। वह नहीं जानता कि कहाँ।

महीपाल की मोटर का ड्राइवर भी पकड़ा गया और वह भी बक गया। उसने भी बता दिया कि महीपाल के कहने पर वह नर्मदारानी और उसके साथ तीन बच्चों को नैनीताल से लाया था। फिर एक बच्चे और औरत को रायबरेली के समीप वीराने में छोड़ लड़की और एक लड़के को लखनऊ ले गया था।

नैनीताल में करीम पकड़ा गया। उसे मारा-पीटा गया तो उसने मरनेवाले की एक झूठी कहानी बनाकर सुना दी। परन्तु उस बँगले का चौकीदार पकड़ा गया जहाँ नर्मदा आदि को कैद रखा गया था। वह तो मामूली-सी धमकी पर ही सारा बक गया। उसने बताया कि अमुक दिन करीमबख्श पहले मध्याह्न के कुछ बाद आया था और कह गया था कि उसके होटल के एक साहब किसी औरत के साथ रात यहाँ गुज़ारना चाहते हैं। इसके लिए वह एक सौ रुपया देने का निश्चय कर गया। तदनन्तर कई आदमी एक औरत और तीन बच्चों के साथ आए और उनको इस बँगले में बन्द कर गए। रात के आठ बजे करीम एक बाबू साहब को, जो सैनिक पहरावे में था, लेकर आया और उस बाबू ने जब उस औरत को देखा तो बिना उसके सामने हुए कह दिया कि "यह भूल से आ गई है।" इसपर उस सैनिक अधिकारी ने करीम को बहुत-से रुपए दिए और फिर वह मोटर लेकर भुवाली की सड़क पर आया और औरत और बच्चों को मोटर में बैठा दिया और मोटर चली गई। सैनिक अधिकारी मेरे और करीम के साथ बँगले पर लौट आया। फिर वहाँ पर एक ग्लास जल पीकर वह करीम के साथ चला गया।

करीम को रिमांड लेकर बन्दी बना रखा गया और बँगले के चौकीदार को जमानत पर छोड़ दिया गया।

दो मास की प्रतीक्षा के पश्चात् करीम और उसके कुछ साथियों पर मुकद्मा चला। उन पर बटनसिंह चौकीदार की हत्या का आरोप था।

महीपाल की अनुपस्थिति में मुकद्मा चलता रहा और दस-दस वर्ष का कठोर दण्ड करीमबख्श और उसके साथियों को दिया गया।

महीपाल की लखनऊ की कोठी और नैनीताल वाले बँगले के चौकीदारों को फैसला सुनाने तक की कैद का दण्ड पर्याप्त माना गया। महीपाल के विरुद्ध अपहरण, कत्ल के लिए प्रोत्साहन और अनियमित कैद करने के आरोप थे। इनका फैसला महीपाल के आने तक स्थगित रखा गया।

महीपाल सेना की नौकरी से निकाल दिया गया था। करीमबख्श इत्यादि के विपरीत मुकद्मे के निर्णय होने तक एक साल लग गया था। महीपाल फरार घोषित कर दिया गया और उसको सेना से मिलनेवाला वेतन तथा उसकी अन्य सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई। वह कुछ अधिक थी भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Central Library
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167944
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

तृतीय परिच्छेद

दानसिंह सन् १९१० से कांग्रेस में सक्रिय भाग लेता चला आ रहा था। यद्यपि कांग्रेस में सन् १९१० से परिवर्तन आ रहे थे, परन्तु दानसिंह तो एकमात्र देशभक्ति के विचार से इस संस्था में था। उन दिनों वह उन उँगलियों पर गिने जानेवाले कांग्रेस सदस्यों में से था जो क्रान्तिकारियों को भी देशभक्त मानते थे। उसने कभी भी अंग्रेज़ी सरकार को देश का हितैषी नहीं माना था। इसपर भी वह कांग्रेस में था और उन लोगों के साथ कुर्सियों पर बैठता था जो देश का हित अंग्रेज़ों के हाथ में सुरक्षित समझते थे और कांग्रेस अधिवेशन के आरम्भ में 'गॉड सेव दि किंग...' खड़े होकर सुनते थे।

वह अपने इस व्यवहार को नीति मानता था। ज़माना बदला। १९१६ में कांग्रेस तिलक और एनी बेसेण्ट के समर्थकों के हाथ में आ गई। दानसिंह तब भी कांग्रेस में था और वह तिलक के भाषण में भी रुचि लेने लगा था। फिर १९१९ में महात्मा गांधी आए, वह गांधी के साथ था। सन् १९२१ में सत्याग्रह आन्दोलन आया, तब भी वह कांग्रेस के साथ था।

परन्तु अब अन्तर यह आ गया था कि कांग्रेस कुर्सियों पर बैठ केवल प्रस्ताव पास करनेवाली संस्था न रह कार्यकर्ताओं की संस्था हो गई थी। प्रत्येक सदस्य को करने के लिए काम हो गया था।

दानसिंह कार्य तो पहले भी करता था, परन्तु उसका कार्यक्षेत्र कांग्रेस के बाहर था। वह आर्यसमाज का सक्रिय कार्यकर्ता था। वह क्रान्तिकारियों को धन देता था और यथासम्भव उनके मुकद्दमे लड़ता था। इस कारण जब कांग्रेस भी कार्य करने लगी तो वह उसमें भी लग गया। वह भी सत्याग्रह के लिए तैयार हो गया।

दानसिंह समझने लग गया था कि अब उसको पकड़कर जेल में डाल दिया जाएगा। इस सम्भावना के उत्पन्न होने पर उसने लड़के को बुलाया और कहा, "दुर्गा! अब तुमको अपनी आवारागर्दी छोड़ देनी चाहिए।"

"पर पिताजी ! मैं तो अब बहुत ही भले लड़कों की भाँति रहता हूँ।"

"अच्छा, भला कब से ?"

"जब से नर्मदा मामी का अपहरण हुआ था। मुझे जब यह अनुभव हुआ कि मामी के अपहरण किए जाने में मेरा भी दोष है तब से मैंने ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे लोगों से मेल-मुलाकात बन्द कर दी है।"

"यह किस प्रकार पता करते हो कि कोई ऐसा है अथवा नहीं ?"

"यह बात स्वामी सोमदेव जी ने समझाई है। वे कह रहे थे कि जो आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोग-विलास की ही बात करता रहे वह असुर होता है, और एक असुर ही ऐरा-गैरा, नत्थू-खैरा होता है।

"मैंने जब उनसे पूछा कि भोग-विलास भी तो जीवन का ही अंग होते हैं, तो उन्होंने बताया कि वह कोई ऐसी बात नहीं कि जिसकी चर्चा की जाती रहे। जब किसी के पास धन होता है तो वह उससे सुख प्राप्त करता ही है। इसमें हो-हल्ला अथवा चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार जब किसी का विवाह होता है तो स्त्री का भोग भी होता है। परन्तु जो उसकी चर्चा दिन-रात करते हैं और फिर धन न होने पर उससे मिलनेवाले पदार्थों के भोग की इच्छा करते हैं अथवा विवाहित पत्नी न होने पर स्त्री-भोग की इच्छा और यत्न करते हैं वे असुर हैं।

"पण्डितजी का कहना था कि न तो स्वयं असुर बनो और न ही असुरों से सम्बन्ध रखो।

"पिताजी! तब से ही अब अपने मित्रों का चयन इस दृष्टि से करना आरम्भ कर दिया है।"

दानसिंह ने कहा, "तब तो मुझे स्वामी सोमदेव का धन्यवाद करना चाहिए। देखो, मैं तुमको एक बात बताता हूँ। शीघ्र ही मैं कांग्रेस के आन्दोलन में पकड़ा जाऊँगा और बन्दी बना लिया जाऊँगा। तुमको अब घर की सम्पत्ति की देखभाल रखनी चाहिए।

"तुम्हारी माताजी कुरेड़ी के श्रीपति को यहाँ लाने वाली हैं। वह अब डी॰ ए॰ वी॰ स्कूल में भरती होगा और हमारे घर पर रहेगा। मोहिनी ने उसको अपना लड़का बनाकर रखने का निश्चय किया है। तुमको भी उसके साथ अपने छोटे भाई का-सा व्यवहार करना चाहिए।"

इसपर दुर्गानन्दन हँस पड़ा। पिता ने उसके हँसने का कारण पूछा तो उसने कहा, "एक समय वह भी था जब मैं उसको पृथिवीपाल का मित्र होने के योग्य भी नहीं सम- झता था। नैनीताल में मेरा पृथिवी इत्यादि के साथ घूमने के लिए न जाने का एक कारण यह लड़का भी था। मैं उसको चौकीदार का लड़का मान अपने से बहुत ही छोटा समझता था और अब मैं पृथिवीपाल को इस लड़के से मित्रता रखने योग्य नहीं मानता।"

"भला क्यों?"

"इस कारण कि पृथिवी में अब अभिमान की मात्रा बढ़ती जा रही है। वह स्वयं को किसी श्रेष्ठ सृष्टि का जीव मानता है।

"एक दिन वह मुझको भी कहता था कि मैं हूँ तो उसकी प्रजा में से ही, क्या हुआ यदि मैं उसकी बुआ का लड़का हो गया तो।" '

'और यह लड़का पृथिवी से श्रेष्ठ है?"

"हाँ पिताजी! उसने महीपाल की कोठी से भागने और फिर सबको फँसाने में सहायता देने में जिस चतुराई का परिचय दिया है वह चौकीदारों के लड़कों से बहुत ऊँचे दर्जे की बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा देखो, सम्भव है कि तुम्हारी माँ भी पकड़ ली जाए। तब तुम अकेले रह जाओगे। श्रीपति तुम्हारे साथ रहेगा। उससे झगड़ा नहीं करना।"

दुर्गानन्दन के सुधार में एक और भी कारण था। वह उसने अपने पिता को बताया नहीं था। उसका सम्पर्क त्रिवेणी से हो गया था और उसका भी शुभ प्रभाव होने लगा था। दोनों में विवाह करने का वचन हो चुका था और दुर्गानन्दन उसको अपनी पत्नी मान अन्य किसी ओर दृष्टि डालना आसुरी बात मानने लगा था। परन्तु त्रिवेणी का कहना था कि उनका विवाह उनके माता-पिता की स्वीकृति से तो असम्भव है। दोनों परिवारों में बहुत तनातनी हो चुकी है। इस कारण उनको विवाह तो घर से भागकर ही करना होगा। अतः समय से पूर्व इसका हो-हल्ला करना अच्छा नहीं। समय पर देख लिया जाएगा।

यही कारण था कि दुर्गानन्दन ने अपने पिता से न तो पहले कभी और न अभी ही, त्रिवेणी का ज़िक्र किया था।

२

अभी महीपाल के साथियों पर मुकद्दमा चल ही रहा था कि दुर्गानन्दन का अमीनाबाद पार्क में त्रिवेणी से साक्षात्कार हो गया। फैंसी टायलेट्स स्टोर में दुर्गानन्दन जाने लगा तो त्रिवेणी अपनी मैट्रन के साथ दुकान से निकलती दिखाई दी। दुर्गानन्दन ठहर गया। उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया तो त्रिवेणी मुस्कराकर खड़ी हो गई। मैट्रन भी उसके साथ खड़ी हो गई जिससे वह उनकी बात सुन सके।

इस कारण दुर्गानन्दन ने केवल स्वास्थ्य-समाचार ही उस समय त्रिवेणी से पूछा। अपनी मैट्रन की प्रश्न-भरी दृष्टि को देख त्रिवेणी ने कहा, "मदर! ये हैं मेरे बड़े भाई सिद्धेश्वर सिंह।" फिर उसने दुर्गानन्दन को विस्मय करने के लिए समय न देने की दृष्टि से तुरन्त कह दिया, "भैया! तुम मुझको मिलने के लिए कभी नहीं आते। अब तो तुम लखनऊ में ही रहने लग गए हो। कम-से-कम सप्ताह में एक बार तो मिल जाया करो।

"देखो, इस समय मैं जल्दी में हूँ। मिलने आओगे न? ज़रूर आना!" इतना कह त्रह मैट्रन के साथ चल दी। दुर्गानन्दन इस सबका अर्थ समझने लगा। वह दुकान के द्वार पर ही रुका रह गया। कुछ ही विचार करने पर वह समझ गया कि त्रिवेणी की इच्छा उससे भेंट करने की है। वह चाहती है कि उससे भेंट के समय वह उसका भाई सिद्धेश्वर बनकर आवे। इतना तो वह समझ गया, परन्तु वह ऐसी कल्पना नहीं कर सका था कि ऐसी इच्छा वह क्यों कर रही है। उसकी हँसी उड़ाने के लिए अथवा उससे सम्बन्ध बढ़ाने के लिए?

कई दिन तक वह विचार करता रहा कि उससे मिलने के लिए जाए अथवा नहीं। अन्त में वह इस परिणाम पर पहुँचा कि जाना चाहिए। वह उसके चाचा से एक चपत खा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका था। यदि उसने कुछ भी अनुचित बात की तो उसके चाचा की चपत का बदला तो ले ही लेगा। उससे विवाह की इच्छा और आशा, दोनों ही वह अपने मन से निकाल चुका था।

एक दिन वह सेंट मेरी गर्ल्ज़ स्कूल के होस्टल के द्वार पर पहुँचा तो चौकीदार ने पूछ लिया, "किससे मिलना चाहते हो ?"

"त्रिवेणी, सीनियर कैम्ब्रिज क्लास की लड़की है।"

"अपना नाम और लड़की से सम्बन्ध लिखकर दे दीजिए।"

दुर्गानन्दन ने अपना नाम सिद्धेश्वर सिंह और त्रिवेणी से भाई का सम्बन्ध लिखकर चपरासी को दे दिया। चपरासी ने द्वार के अन्दर बैठी एक स्त्री को वह चिट पकड़ा दी।

पाँच मिनट में ही त्रिवेणी बाहर आ गई और आते ही बोली, "तो आप आ गए ? मैं तो दो घंटे की छुट्टी ले आई हूँ। बोलिए, किधर चलें ?"

वे वहाँ से माल की ओर चल पड़े। मार्ग में ही दुर्गानन्दन ने कहा, "मैं तुमको इतना चतुर नहीं समझता था। तुम्हारे चाचा का कहना था कि तुम बिलकुल बुद्धू हो।"

"मैंने कोई नई बात नहीं की। हमारे होस्टल की अनेकों लड़कियाँ इस प्रकार का 'ट्रिक' किया करती हैं। मैं आपसे मिलना चाहती थी और जानती नहीं थी कि किस प्रकार मिला जाए। हमारे होस्टल से जाने और आनेवाले सभी पत्रों को सेंसर किया जाता है। उस दिन आप मिले तो मैं उस अवसर से लाभ उठाना चाहती थी। मुझे लड़कियों का 'ट्रिक' स्मरण हो आया। और इस प्रकार मैंने मैट्रन को मूर्ख बनाया।"

"कहिए, किसलिए मिलना चाहती थीं ?"

"वह तो बताऊँगी ही। पहले आप यह बताइए कि नैनीताल में मेरे प्रति आपकी जो भावना थी, उसका लेश मात्र भी कुछ शेष है अथवा परिवारों के झगड़े में सब विलीन हो गया है ?"

"हमारे विवाह की बात कहती हो ? बात यह है कि मैं जिस काम को असम्भव समझता हूँ उसकी लालसा छोड़ देता हूँ। मुझे आशा नहीं कि तुम्हारे माता-पिता मुझे अपना दामाद स्वीकार कर लेंगे।"

"परन्तु आप बनने की इच्छा रखते हैं क्या ?"

"निराशा के वातावरण में इच्छा जीवित नहीं रह सकती।"

"मैं तो निराशा का कोई कारण नहीं समझती। अधिक-से-अधिक मुझे दो वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। तब तो मैं स्वेच्छा से विवाह कर लूँगी। प्रश्न तो यह है कि क्या आप प्रतीक्षा कर सकेंगे ?"

दुर्गानन्दन यह सुन चलता-चलता रुक गया और सिर से पाँव तक त्रिवेणी को देखने लगा। त्रिवेणी मुस्कराती हुई उसकी तरफ देखती रही। दुर्गानन्दन कहने लगा, "इस डेढ़ वर्ष में तुम्हारा सौन्दर्य निखर आया है। अक्ल में तो तरक्की का प्रमाण तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही दे चुकी हो। मैं दो वर्ष तो क्या दस वर्ष तक भी प्रतीक्षा करने के लिए तैयार हूँ।"

"नहीं, इतनी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। और यदि आप दो वर्ष के लिए निर्वाह-लायक खर्चे का प्रबन्ध कर सकते हैं तो मैं आज ही आपके साथ भाग जाने के लिए तैयार हूँ। दो वर्ष बाद हम अपने माता-पिता से सुलह कर लेंगे।"

"कितना प्रबन्ध करना होगा?"

"कम-से-कम दस हज़ार रुपया।"

"यह एक बड़ी रकम है। अपने पिताजी से पूछे बिना इतनी रकम प्राप्त करना मेरे लिए सम्भव नहीं है।"

"तब दो वर्ष की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"यह विवशता है, मैं तो आज ही विवाह करने के लिए तैयार हूँ।"

त्रिवेणी ने बात बदलते हुए कहा, "आजकल आप क्या कर रहे हैं?"

"मैं पिताजी के साथ सम्पत्ति का प्रबन्ध करता हूँ।"

यह बात दुर्गानन्दन ने गढ़ दी थी। वास्तव में उस समय तक वह कुछ भी नहीं करता था। इस बात के कहते-कहते वह मन में संकल्प बना रहा था कि उसको अपना कथन सत्य करना चाहिए।

दोनों एक रेस्तराँ में गए। उसमें ही, जिसमें दुर्गानन्दन को एक बार महीपाल से चपत खाने का अवसर मिला था। बहुत बातें हुईं। दुर्गानन्दन को पता चला कि त्रिवेणी अंग्रेज़ी के उपन्यास बहुत पढ़ती है और इससे उसको अंग्रेज़ी समाज का बहुत ज्ञान है। वह इतना तो जानती थी कि देहात में ज़मींदारों में तो स्त्रियों पर बहुत प्रतिबन्ध हैं। वह उनको तोड़ डालना चाहती थी।

त्रिवेणी ने यह भी बताया कि उसके पिता, चाचा महीपाल के सख्त खिलाफ हैं। वे महीपाल से बोलते भी नहीं। उनका कहना है कि सीता को वापस कर देना चाहिए। परन्तु चाचा नहीं मानते थे। वे सीता से विवाह करना चाहते हैं और इसके लिए वे उसके सज्ञान होने तक की प्रतीक्षा करेंगे। "

"परन्तु सीता है कहाँ?"

"यह मुझे विदित नहीं है। घर के किसी अन्य व्यक्ति को भी इस विषय में कुछ ज्ञात नहीं है। वे घर पर आते भी बहुत कम हैं। यों सुना है कि उन्हें पुनः कहीं सरकारी नौकरी मिल गई है।"

इस भेंट के बाद प्रतिसप्ताह दुर्गानन्दन त्रिवेणी से मिलने के लिए जाने लगा। इस मेल-मुलाकात को छः मास के लगभग ही हुए थे कि दानसिंह ने सत्याग्रह कर दिया और वह पकड़ लिया गया।

देश में असहयोग आन्दोलन की आँधी चल रही थी। दानसिंह स्वयं को इस आँधी से पृथक् नहीं रख सका। वह पकड़ा गया और छः मास की साधारण कैद का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दण्ड देकर उसको जेल भेज दिया गया। मोहिनी ने भी स्त्रियों के साथ मिलकर सत्याग्रह किया और पकड़ ली गई। घर पर केवल दुर्गानन्दन और श्रीपति रह गए। वे राजनीति के आन्दोलन के समीप भी नहीं फटकते थे। दुर्गानन्दन पिता की आज्ञा से सम्पत्ति का प्रबन्ध करने लग गया था। ये सन् १९२२ के आरम्भ के दिन थे। वह अपने घर की बैठक में बैठा, जमींदारी के एक कारिन्दे से बातचीत कर रहा था कि चौकीदार ने आकर कहा, "छोटे बाबू ! वह शायर आया है।"

"कौन शायर ?"

"नाम तो अपना बिस्मिल बताया करता है लेकिन है शायद हिन्दू ही।"

"ओह !" दुर्गानन्दन को शीशे के पीछे के रुपयों की बात स्मरण हो आई। उसके विषय में तो वह भूल ही गया था। उसने चौकीदार से कहा, "उनको साथवाले कमरे में बैठाओ, मैं इससे बात करके आता हूँ।"

कारिन्दा विदा हुआ तो दुर्गानन्दन ने बिस्मिल को अपने पास बुलवा लिया। जब उसने बिस्मिल की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो वह कहने लगा, "छोटे बाबू ! आज तो एक सौ रुपया चाहिए।"

दुर्गानन्दन उठा और शीशे के कोने के फूल को दबाकर द्वार खोल उसमें रखी सन्दूकची में से एक सौ रुपया निकालकर देते हुए बोला, "इसमें तो अब और नहीं हैं।"

"मेरा विचार था कि इसमें तो अभी बहुत-से होने चाहियें।"

"किन्तु हैं नहीं।" इतना कह दुर्गानन्दन ने सन्दूकची आदि सब बन्द कर दिए।

बिस्मिल नहीं कह सका कि उसमें अभी और रुपये हैं। बात यह थी कि इस कोष में से दुर्गानन्दन का पिता अन्य अनेक संस्थाओं को दान दिया करता था। उस समय की अपनी आवश्यकता पूरी होती देख बिस्मिल चुपचाप सौ रुपया ले और उसको नमस्कार कर चल दिया। बिस्मिल को विदित था कि दानसिंह शीघ्र ही छूटने वाला है, इसलिए भी वह निश्चिन्त था।

उसके जाते ही दुर्गानन्दन पुनः उस आलमारी को खोल सन्दूकची निकाल उसके रुपये गिनने लगा। उसमें अभी भी ग्यारह हजार रुपये रखे हुए थे। दुर्गानन्दन ने एक क्षण विचार किया और रुपयों को अपने कोट की जेब में रख लिया। खाली सन्दूकची को आलमारी में रख उसने आलमारी बन्द कर दी।

उसके मन में कई प्रकार के विचार आ रहे थे। एकाएक उसके मुख से निकल गया, यह चोरी पकड़ी नहीं जा सकती। वह कह देगा कि एक दिन उसकी अनुपस्थिति में बिस्मिल आया था और लगभग एक घंटे तक उस बैठक में अकेला बैठा रहा था।

उसको रुपयों की सख्त आवश्यकता थी। उसके पिता ने उसको यद्यपि पाँच सौ रुपये तक एक-साथ बैंक से निकाल लेने की अनुमति दिलवा रखी थी, किन्तु ये रुपये वह सप्ताह में एक बार ही निकाल सकता था।

इस प्रकार एक मास में दो हज़ार से अधिक रुपया बैंक से निकाला नहीं जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता था। उसके विचार से दो हज़ार रुपया उसकी आवश्यकता पूर्ण नहीं कर सकता था। अगले सप्ताह उसका पिता छूटनेवाला था।

रुपये जेब में रख वह ऊपर आया और नये ढंग के अंग्रेज़ी कपड़े पहन रुपये अपने सूटकेस में रख तथा सूटकेस को यात्रा के लिए तैयार कर घर से हज़रतगंज और वहाँ से सेंट मेरी गर्ल्ज़ स्कूल की ओर चल पड़ा।

स्कूल के बाहर उसने एक चिट पर अपना नाम लिखकर चपरासी के हाथ भीतर भेज दिया।

पन्द्रह मिनट की प्रतीक्षा के बाद ही त्रिवेणी बाहर आ गई।

त्रिवेणी ने बाहर जाने का पास दिखाया और दुर्गानन्दन के साथ चल पड़ी।

कुछ दूर जाकर दुर्गानन्दन ने इक्का किया और दोनों कम्पनी बाग की ओर चल पड़े। मार्ग में दोनों ने कोई बात नहीं की। दुर्गानन्दन समझता था कि इक्केवाले के सम्मुख किसी प्रकार की बात नहीं करनी चाहिए।

कम्पनी बाग में पहुँच इक्केवाले को पैसे दे दोनों बाग के भीतर चले गए। लॉन में एक स्थान पर एकान्त देख दोनों वहाँ जाकर बैठ गए।

बैठने के बाद त्रिवेणी ने पूछा, "आपके पिताजी छूट गए हैं क्या?"

"नहीं।"

"तो आज इस समय आने का क्या प्रयोजन था?.... आज आपके सिद्धेश्वर के हस्ताक्षर पर प्रिंसिपल को सन्देह होने लगा तो मैंने कह दिया—'मैडम, इट इज़ ऑल राइट'।"

"मैं यह कहने के लिए आया हूँ कि आज हम कलकत्ता के लिए जा सकते हैं।"

"रुपया?"

"दस हज़ार एक स्थान से मिल गया है। कुछ मेरे पास पहले का है। कुछ माँ के आभूषण ले जाऊँगा।"

"दस हज़ार! यदि हम ठीक प्रकार रहेंगे तो मेरे वयस्क होने तक इन रुपयों से काम चल सकता है। तब अपना पता अपने पिता को लिखकर भेज दूँगी और आपका मुझसे विवाह हो जाएगा।"

"हाँ, कलकत्ते में यत्न करूँगा कि कुछ कार्य भी कर लूँ जिससे कि निर्वाह और भी भली प्रकार हो जाए।"

"तो कब चलने का विचार है?"

"तुमको अब वापस स्कूल में जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं घर जाऊँगा और अपना सूटकेस तथा बिस्तर ले आऊँगा। तुम मेरे साथ चलो और मकान से कुछ दूर खड़ी मेरी प्रतीक्षा करना। मैं दस मिनट में आ जाऊँगा, वहाँ से सीधे हम स्टेशन को चल देंगे।"

त्रिवेणी थी तो पुराने विचार के रईस की ही लड़की, किन्तु ईसाइयों के स्कूल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने पर स्वतन्त्र जीवन की अभिलाषा करने लगी थी।

दुर्गानन्दन अपने माता-पिता को बहुत धनी प्रकट करता रहता था और माता-पिता का इकलौता लड़का होने के कारण अपनी शेखी बघारा करता था।

आज उसके हाथ रुपया लगा तो वह अविलम्ब उसके स्कूल में जा पहुँचा। उसको एकान्त में बिठाकर भावी जीवन के सुनहरे चित्र बना-बनाकर दिखाने लगा।

आखिर त्रिवेणी ने कहा, "यदि रुपया मिल गया है तो चलने के लिए तैयार हूँ।"

"तो चलो।"

दोनों वहाँ से लाटूश रोड को चल पड़े और त्रिवेणी को ताँगे में ही बैठी छोड़ वह अपने घर पर चला गया। ताँगेवाले को लालच दे वह सामान उठवाने के लिए साथ ले आया।

अपना सूटकेस और बिस्तरा ताँगेवाले को पकड़ाकर उससे कहा कि वह चलकर सामान रखे, तब तक वह आता है।

स्वयं वह मकान को ताला लगा चौकीदार को चाबी देने के लिए रुक गया। इस कार्य में उसको दो मिनट से अधिक नहीं लगे।

वह चौकीदार को कहना चाहता था कि वह एक रात के लिए कुरेड़ी जा रहा है। चौकीदार मकान की सबसे निचली मंज़िल की एक कोठरी में रहता था। वह उसकी कोठरी के बाहर खड़ा हो आवाज़ देने लगा, "बेनी! मैं...." इसके आगे वह कुछ बोले कि बाहर मोटर रुकने का शब्द हुआ और उसके देखते-देखते दानसिंह कोठी के भीतर आ गया।

"ओह पिताजी!" दुर्गानन्दन ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया, "आप कब छूटे हैं?"

"ऊपर चलो, बताता हूँ।"

ड्राइवर उनका बिस्तर और सूटकेस उठाकर ले आया। उसने दुर्गानन्दन के सामने सामान रख दिया और चला गया। चौकीदार ने सामान उठाया और दानसिंह ने अपने पुत्र से पूछा, "माताजी का समाचार आता है कि नहीं?"

"हाँ पिताजी! पिछले शनिवार मैं उनसे मिलने के लिए गया था।"

"अब किधर जा रहे थे?" दानसिंह ने उसको सूट पहने कहीं जाने के लिए तैयार देख पूछ लिया।

"कहीं नहीं पिताजी! ज़रा सिनेमा देखने के लिए जा रहा था।"

"सिनेमा! अभी तो चार बजे हैं, शो तो सायं छः बजे से पहले नहीं होगा?"

दोनों ऊपर चढ़ रहे थे। दुर्गानन्दन बेचैनी अनुभव कर रहा था। दानसिंह ने उसके मुख पर उसके चित्त की चंचलता देखी तो कहने लगा, "बहुत घबराए-से प्रतीत होते हो?"

"नहीं पिताजी! मैंने अपने एक मित्र के साथ समय निश्चित किया हुआ है, हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों साथ ही सिनेमा देखने जानेवाले हैं।"

"ठहरो, मैं भी साथ चलूँगा। पिछले पाँच मास में जीवन सर्वथा नीरस रहा है।"

"तो मैं उस मित्र को कहकर आता हूँ। तब आपके साथ चलूँगा।"

"क्यों, वह मित्र मेरे साथ नहीं जा सकता? क्या कोई लड़की है वह?"

"नहीं पिताजी।...."

"ठीक है, मैं तुम दोनों को अपने साथ ही बॉक्स की सीट ले दूँगा और फिर वहीं से होटल में खाना खाने के लिए चलेंगे।"

दुर्गानन्दन के माथे पर पसीने की बूँदें आने लगी थीं। इस समय वे बैठकघर में पहुँच गए। चौकीदार ने दुर्गानन्दन से चाबी ली, ताला खोला। सामान, जो उसने बैठकघर से बाहर ही रख दिया था, भीतर ले गया।

दानसिंह का हाथ दुर्गानन्दन के कंधे पर था। वह उसी प्रकार बैठक में पहुँचा। बैठक में पहुँच उसने अपनी जेब से सिगरेट की डिब्बी निकाली और उसमें से सिगरेट निकाल, सुलगा, सोफे पर बैठ दुर्गानन्दन को अपने पास बिठाकर कहने लगा, "मेरे छूटने में अभी चार दिन और थे, परन्तु प्रातःकाल मैंने सिरदर्द का बहाना किया और डॉक्टर ने लिख दिया, 'ऐग्ज़ास्टेड, रिकामेंड इमिडियेट रिलीज़'।

"इतना लिखाने के लिए एक सौ रुपया देना पड़ा। साढ़े चार सौ रुपये मेरे जेलर के पास जमा थे। जब छूटा तो डॉक्टर को एक सौ रुपया दे दिया। उसने अपनी गाड़ी दी और मुझे घर तक पहुँचा दिया।"

"पर पिताजी! आपने ऐसा क्यों किया? यह तो एक सच्चे सत्याग्रही का जैसा व्यवहार नहीं है।"

"तुम क्या जानते हो सत्याग्रह के विषय में? सब नेता लोग अंडे, मुर्गी, चाय और पीनेवाले तो, शराब भी पीते थे।"

यह सुन दुर्गानन्दन चुप रहा। दानसिंह फिर कहने लगा, "दुर्गानन्दन! ये बातें कहने की नहीं हैं। एक बात मेरी समझ में नहीं आई, वह यह कि इतने-से कष्ट सहने से क्या स्वराज्य मिल जाएगा?

"महात्माजी का सत्याग्रह तो असफल रहा है। उन्होंने यह स्वयं जेल जाने से पूर्व स्वीकार किया है। वे इस आन्दोलन के लिए जनता को तैयार नहीं मानते थे, अर्थात् उन्होंने इस आन्दोलन को इस समय देश में चलाकर भूल की है।

"अच्छा, छोड़ो इस बात को। कौन-सी पिक्चर देखने के लिए जा रहे हो?"

इससे दुर्गानन्दन को बाहर ताँगे में त्रिवेणी के प्रतीक्षा करने का स्मरण हो आया। उसने कुछ विचार किया और कहा, "पिताजी! आप शौचादि से अवकाश पा लीजिए। मैं चौकीदार को कहकर जलपान का प्रबन्ध करवाता हूँ तथा मैं जाकर अपने मित्र को यहीं बुला लेता हूँ। तब तक आप जलपान करिएगा। मैं आधे घंटे में आ जाऊँगा। फिर पिक्चर देखने के लिए जाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानसिंह समझ नहीं सका कि दुर्गानन्दन का कौन ऐसा घनिष्ठ मित्र बन गया है, जिसके लिए यह परेशान हो रहा है। वह विचार कर रहा था कि दुर्गानन्दन बैठकघर से बाहर निकल गया। उसने चौकीदार को कहा, "पिताजी के लिए चाय बना दो और बाज़ार से मिठाई ले आओ। मैं अभी आता हूँ।"

चौकीदार ने मुस्कराते हुए कह दिया, "छोटे बाबू! वह ताँगे में बैठी लड़की कह गई है कि वह स्टेशन जा रही है।"

दुर्गानन्दन विस्मय में मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर बोला, "चली गई है तो ठीक है।"

इतना कहकर वह मकान के बाहर निकल गया। सड़क पर खड़ा हो वह विचार करने लगा था कि उसने स्टेशन जाने में ठीक ही किया है। वह वहाँ किसी इक्के की प्रतीक्षा करने लगा। जब कोई इक्का-ताँगा आता दिखाई नहीं दिया तो वह अमीनाबाद की ओर चल दिया।

३

दानसिंह शौचादि से निवृत्त हो, स्नान कर, वस्त्र बदल बैठकघर में आया तो चौकीदार ने तश्तरी में मिठाई रख दी और कहने लगा, "चाय अभी दो मिनट में बनाकर लाता हूँ।"

"दुर्गा कहाँ है?"

"वे तो अभी लौटे नहीं।"

"किधर गया है?"

"एक लड़की बाहर ताँगे में बैठी थी, आपको आया देख वह कह गई है कि वह स्टेशन पर जा रही है। परन्तु छोटे बाबू तो अमीनाबाद की ओर गए हैं।"

इससे दानसिंह के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। फिर कुछ विचारकर उसने चौकीदार को चाय लाने के लिए कह दिया।

दानसिंह चाय पी चुका किन्तु तब तक भी दुर्गानन्दन लौटकर नहीं आया। दानसिंह ने कुछ विचार किया और उठकर जूता पहन वह घर से बाहर निकल गया। ताँगा मिला तो वह 'चार बाग' स्टेशन की ओर चल दिया।

स्टेशन पर दुर्गानन्दन दिखाई नहीं दिया। वहाँ से वह घर को लौट आया। सिनेमा जाने का समय तब तक निकल गया था। जब वह घर पहुँचा तो दुर्गानन्दन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसका मुख तो विवर्ण हो रहा था, परन्तु इसपर भी वह मुस्करा रहा था। पिता से पूछा, "पिताजी! किधर गए थे?"

"उस लड़की का पता करने गया था कि वह कौन थी और किसलिए तुमसे स्टेशन पर जाने के लिए कह गई थी।"

"ओह! चौकीदार ने आपको बताया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कौन थी वह ?"

"वह महीपाल के बड़े भाई की लड़की है। वह सेंट मेरी गर्ल्ज़ स्कूल में पढ़ती है। मैं उससे मिलता रहता हूँ जिससे कि किसी प्रकार उससे सीता और महीपाल का पता मिल सके।

"जब आप आए तो वह मुझसे मिलने के लिए आई थी, परन्तु आपको आया देख स्टेशन जाने की बात कह गई। वह आज छुट्टी लेकर घर जा रही थी।"

"पर वह स्टेशन पर दिखाई नहीं दी।"

"देहरा-हावड़ा एक्सप्रेस से वह फ़ैज़ाबाद के लिए गई है।"

"तो तुम उसको स्टेशन पर छोड़ने के लिए गए थे ?"

"जी नहीं, मैं तो अपने मित्र को सिनेमा देखने के लिए यहाँ लाने के लिए गया था। वह आया था, किन्तु सिनेमा का समय हो गया था इसलिए वह चला गया।"

प्रत्यक्ष रूप में दुर्गानन्दन ने अपने पिता को सन्तुष्ट कर दिया था। इसपर भी दानसिंह लड़की के विषय में सन्तुष्ट नहीं था। वह जब स्टेशन पर गया था, तो देहरा-हावड़ा एक्सप्रेस आई भी नहीं थी। उसको कोई लड़की उस प्लेटफॉर्म पर अकेली खड़ी दिखाई भी नहीं दी। इसपर भी वह यह विचार कर कि वह लड़की को पहचानता नहीं था, इस कारण उस-जैसी किसी लड़की के वहाँ न होने के विषय में ज़ोर देकर दुर्गानन्दन को कह नहीं सका।

दानसिंह ने बात बदलकर कहा, "अच्छी बात है। आज रात के शो में पिक्चर देखने के लिए चलेंगे। पहले होटल में खाना खाएँगे और फिर सिनेमा देखने के लिए चलेंगे।"

दुर्गानन्दन रेल के स्टेशन पर गया था। किन्तु त्रिवेणी वहाँ पर नहीं थी। वह उसके स्कूल गया तो उसको वही ताँगा, जिसमें वह उसको बिठाकर अपने घर ले गया था, स्कूल की ओर से आता दिखाई दिया। उसने उससे पूछा, "उनको स्कूल में छोड़ आए हो क्या ?"

"हाँ बाबू साहब !"

दुर्गानन्दन बोर्डिंग हाउस के द्वार पर पहुँचा और नित्य की भाँति उसने चपरासी को अपने नाम-धाम की चिट पकड़ा दी। कुछ ही मिनटों में चपरासी वापस आकर कहने लगा, "बाबू साहब, मैडम कहती हैं कि तुरन्त भाग जाओ यहाँ से, नहीं तो पुलिस के हवाले कर दिए जाओगे।"

"क्यों, मैंने क्या किया है ?"

"साहब, यह तो मैट्रन साहिबा ही जानती होंगी। मैं नहीं जानता।"

दुर्गानन्दन अपना-सा मुख लेकर वहाँ से लौट आया। घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसका पिता घर पर नहीं है। कुछ समय तक प्रतीक्षा करने पर जब उसका पिता लौटकर आया तो उसने लड़की के विषय में अपना ज्ञान बताकर उसके विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गानन्दन से पूछताछ की।

दुर्गानन्दन ने जो बात अपने पिता को बताई थी उसके आगे कोई बात चल नहीं सकी। अगले दिन अपनी पत्नी से मिलने के लिए वह औरतों की जेल में गया। दुर्गानन्दन भी उसके साथ था। उससे भेंट कर उसने कुरेड़ी जाने का निश्चय किया। जेल से लौटते हुए उसने दुर्गानन्दन को अपना प्रोग्राम बताया और उसको भी अपने साथ चलने के लिए कहा। इससे दुर्गानन्दन फिर परेशानी में पड़ गया। वह त्रिवेणी से मिलने के लिए जाना चाहता था, परन्तु दानसिंह ने उसको साथ चलने के लिए विवश कर दिया।

विवश उसी दिन दुर्गानन्दन अपने पिता के साथ रायबरेली पहुँचा और वहाँ से इक्के में बैठ दोनों कुरेड़ी जा पहुँचे। दानसिंह सीता के विषय में जानने के लिए गया था। रात वे वहीं रहे। विन्ध्यवासिनी को सीता के न मिलने का बहुत दुःख था और अब वह इसी दुःख में बीमार रहने लगी थी। पृथिवीपाल को ताल्लुकदारा स्कूल से उठाकर इलाहाबाद में क्षत्रिय स्कूल में भरती करा दिया गया था और वह वहाँ बोर्डिंग हाउस में रहता था। नर्मदा को भी भारी दुःख था कि वह भी अपने माता-पिता द्वारा सीता को दिलाने के प्रयत्न में असफल हुई थी।

एक बात का पता चला था। वह भी नर्मदा के माता-पिता के द्वारा नहीं, अपितु कुरेड़ी के बाबूसाहब छोटेलाल के एक खिदमतगार से। वह यह कि महीपाल विलायत चला गया है और उसके साथ सीता नहीं थी। सीता कभी देहरा में देखी भी नहीं गई।

विन्ध्यवासिनी यह समझती थी कि महीपाल ने सीता की हत्या कर दी है। इससे वह और भी दुःखी रहती थी।

नर्मदा ने दानसिंह से कहा, "जीजाजी! आप तो लखनऊ में बहुत ही रसूखदार माने जाते हैं। मगर आप भी हमारी समस्या का सुझाव नहीं पा सके।"

"मेरा रसूख तो था, किन्तु कांग्रेस और पण्डित मोतीलाल से मेरा सम्बन्ध जुड़ा होने के कारण वह रसूख समाप्त हो गया है।

"अब तो मैं जेल में हो आया हूँ। अब तो सरकारी अफ़सर मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं करेंगे।"

"फिर भी यत्न करना तो आपका कर्तव्य है। सीता आपकी भी तो कुछ लगती है! साथ ही मैं पूछती हूँ कि क्या हिन्दुस्तान का कातिल इंगलैंड में छिप सकता है?"

"इस विषय में मैं चाराजोई करूँगा।"

"और सीता के विषय में?"

"उसका पता तो देहरा में अपनी खुफिया पुलिस लगाने से ही चल सकता है। परन्तु वह जीवित भी है कि नहीं यह कौन बता सकेगा?"

दानसिंह का कुरेड़ी में जाना एक औपचारिकता-मात्र था। मोहिनीदेवी अभी जेल में ही थी, इस कारण बाबू पद्मजीतसिंह के आग्रह पर वे पिता-पुत्र वहाँ एक सप्ताह-भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे। श्रीपति अकेला लखनऊ के मकान में रहता था।

सप्ताह-भर कुरेड़ी में रहकर वे लखनऊ लौट आए। दुर्गानन्दन ने एक बार पुनः त्रिवेणी से सम्पर्क स्थापित करने का यत्न किया। इस बार उसको स्कूल की मैट्रन ने अपने बँगले पर बुला लिया। वह भयभीत-सा वहाँ गया तो मैट्रन ने उसको अपने सामने बैठाकर कहा, "त्रिवेणी अपने गाँव चली गई है। मैं यह जान गई थी कि तुम उसके भाई सिद्धेश्वर नहीं हो। एक दिन तुम उससे मिलने के लिए आए थे जब त्रिवेणी तुम्हारे साथ बाज़ार गई थी। उसी दिन सिद्धेश्वर नाम का एक और लड़का उससे मिलने के लिए आया था। मुझे उसपर सन्देह हुआ तो उसको मैंने अन्दर बुलवा लिया। परन्तु उसकी रूप-रेखा तो अपनी बहन के साथ मिलती थी। मैंने उसको बिठा लिया और त्रिवेणी की प्रतीक्षा करने लगी। लगभग एक घंटे के बाद वह लौटी तो मैंने उसको उसके भाई के सामने बुला लिया। वह उसको बैठा देख विस्मय में मुख देखती रह गई। मैंने उससे पूछा, 'त्रिवेणी, यह कौन है?'

"इसपर वह मुझको पृथक् में ले गई और बताने लगी कि तुम उसके मित्र हो। मैंने उससे पूछा कि मित्र अथवा लवर?

"उसने स्वीकार कर लिया कि तुम उसके लवर हो। इसपर मैंने उसको बहुत समझाया और फिर उसका रहस्य अपने तक सीमित रखने का वचन दे दिया। साथ ही उससे भी वचन ले लिया कि वह तुमसे तब तक नहीं मिलेगी जब तक वह बालिग नहीं हो जाती।

"ठीक उस समय तुम पुनः आए थे और मैंने तुमको पुलिस का भय दिखाकर भगा दिया था। इसके बाद मैंने उसके पिता को यह संकेत भेज दिया कि लड़की का विवाह कर दें। इसपर उसकी माँ आई थी और उसे स्कूल से छुट्टी दिलवा ले गई थी।

"अब तुम यहाँ मत आया करो। मैं यह जान के कि तुम उससे प्रेम करते थे तुमसे सहानुभूति रखती हूँ। परन्तु जब तक वह बालिग नहीं हो जाती तब तक तुम्हें उससे मिलना नहीं चाहिए।"

इसपर एक दिन दुर्गानन्दन ने त्रिवेणी को देहरा के पते पर एक पत्र लिखा और उसमें उसने पुनः मिलने के लिए प्रबन्ध करने के लिए कहा था। पत्र में उसने स्वयं को उसकी सहेली दुर्गारानी लिखा था।

उस पत्र का कोई उत्तर नहीं आया। इसपर दुर्गानन्दन को विश्वास हो गया कि उसका पत्र बीच में ही रोक लिया गया है।

समय व्यतीत होने के साथ-साथ उसकी ओर से उसका ध्यान शिथिल पड़ने लगा।

एक दिन, दानसिंह के छूटने के एक मास बाद, मोहिनीदेवी भी छूटकर आ गई। वह भी जेल से छूटने पर अपने भाई-भाभियों से मिलने के लिए गई। दानसिंह ने उसके हाथ कुरेड़ी में सन्देश भेज दिया कि उसको सीता का एक स्थान पर लखनऊ में ही पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला है। वह उसको पहचानता नहीं, इसलिए श्रीपति को वह उसकी पहचान के लिए प्रयुक्त करेगा। परन्तु वह यह काम कर सकेगा अथवा नहीं, कहना कठिन है।

मोहिनीदेवी इस आशा की किरण को लेकर कुरेड़ी गई तो वहाँ इस विषय पर गोष्ठियाँ होने लगीं। विन्ध्यवासिनी भी रोग-शय्या से उठ इन बातों में उत्साह दिखाने लगी। नर्मदा के कहने पर यह निश्चय हुआ कि श्रीपति को, जो अब लखनऊ में नौवीं श्रेणी में पढ़ता है, सीता का चित्र दिखाकर उसकी सहायता की जाए। श्रीपति ने सीता को अंतिम बार दो वर्ष पहले देखा था। इस कारण वह उसे पहचान सकेगा या नहीं, कहना कठिन था। दूसरे नौकर पर तो इतना भरोसा भी सम्भव नहीं था।

४

श्रीपति यद्यपि तेरह वर्ष का कुमार-मात्र था, परन्तु उसका शरीर सुपुष्ट और ऊँचाई में वह आयु के अनुपात से अधिक ही ऊँचा था, साथ ही वह समझदार भी काफी था।

बाबू दानसिंह ने उसको सीता की तसवीर दिखाकर पूछा, "पहचानते हो यह कौन है?"

"सीता बहिन है।"

"इसको ढूँढना और पहचानना है। कर सकोगे यह कार्य?"

"जी हाँ, मैं पहचान लूँगा।"

"परन्तु वहाँ यह सन्देह हुआ कि तुम उसको भगा ले-जाने के लिए आए हो तो मारे भी जा सकते हो।"

"मैं मरने से नहीं डरता। आप इसकी चिन्ता न करें।"

लगभग पन्द्रह दिन पूर्व लखनऊ का एक आर्यसमाजी नेता, जो हिन्दुओं को मुसलमान होने से बचाने के काम में लगा हुआ था, दानसिंह के पास इस विषय में धन की सहायता माँगने के लिए आया था।

उसको आया देख दानसिंह ने कहा, "आइए तिवारीजी! कहिए, कैसे आना हुआ है?"

"बाबू साहब! आप तो जानते ही हैं कि जब किसी ऐसे काम के लिए रुपयों की आवश्यकता होती है जिसमें हम सार्वजनिक चन्दा नहीं कर सकते, तो आपके पास ही आया करते हैं।"

"कितना चाहिए?"

"आज तो पाँच सौ रुपया चाहिए।"

"अच्छा! कोई बहुत बड़ी मुर्गी है क्या?"

"मुर्गी तो नहीं, एक चूज़ा है। बिलकुल छोटी उमर की एक लड़की है। पता चला है कि किसी हिन्दू रईस की है। मुश्किल से सात-आठ साल की होगी, उसको नाच-गाना सिखाया जा रहा है। अब उसको मजलिसों में भी लाया जाने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस समय तो उसको शबनम कहते हैं, परन्तु यह उसका बचपन का नाम नहीं है। हमारे एक आदमी को सन्देह हुआ कि वह किसी हिन्दू की लड़की है तो उसने उसके नाच-गाने में जाना शुरू कर दिया है। दो-तीन रुपये तक वह नज़र देता रहा है। एक दिन उसके सन्देह का समर्थन हुआ। उसके मुहाफ़िज़ के मुख से निकल गया कि खुदा भी कैसे-कैसे फूल काफ़िरों के घर में पैदा कर देता है!

"हमारे आदमी ने कह दिया कि खुदा ने इसको मोमिनों के पास भेजकर कुछ तो दानिशमन्दी की ही है।

"इसपर सब हँसने लगे और जब वह नाच करती हुई हमारे भेदिये के हाथ से पाँच रुपये का नोट पकड़ने लगी तो उसने पूछ लिया कि उसका नाम क्या है।

"उसने अपना नाम बता दिया, 'शबनम'।

"हमारे आदमी ने सिर हिलाकर पूछ लिया कि उसका काफराना नाम क्या था?

"वह बताने लगी किन्तु बताते-बताते रुक गई। उसके मुख से 'सी····ही' निकला था कि मुहाफ़िज़ खाँसा और वह डरकर चुप हो गई।

"हमारा काम करनेवाला आदमी कहता है कि लड़की अभी आठ-नौ साल की है। मगर उसको भगाकर लाने के लिए कम-से-कम पाँच सौ रुपया चाहिए। वहाँ डाका डालना पड़ेगा।"

'सी····!' 'सी' अक्षर से दानसिंह के मन में सीता का विचार उत्पन्न हो गया। कुछ विचरकर दानसिंह ने कहा, "पाँच सौ मिल जाएगा, मगर उस लड़की को हमारे किसी आदमी को दिखाना पड़ेगा। एक मेरे जान-पहचान की लड़की लापता है और उसका नाम सीता है। आज से दो वर्ष पहले वह लापता हुई थी। तब वह पाँच वर्ष की आयु की थी।"

"वह दिखाई जा सकती है। इसपर भी कुछ रुपये तो वहाँ जाने के वक्त खर्च होते ही हैं। वह कोई भी हो, उसको वहाँ से निकालना है और इस काम के लिए डाका डालना होगा। इस डाके के लिए पाँच सौ रुपया चाहिए।"

दानसिंह उठा और शीशेवाली आलमारी खोल रुपयोंवाली सन्दूकची खोली तो उसको बिलकुल रिक्त देख वह आश्चर्यचकित देखता ही रह गया। फिर यह विचार आया कि कोई सब रुपये निकालकर ले गया है। उसको कांग्रेसी कार्यकर्ताओं पर सन्देह था। उनमें से लखनऊ वालण्टियरों के कप्तान बाबूलाल श्रीवास्तव पर उसको सन्देह हो गया। सत्याग्रह के दिनों में बहुत-से निर्धन स्वयंसेवक बन्दी बना लिए गए थे और उनके घरवालों के निर्वाह के लिए वह सहायता किया करता था। उसको बाबू दानसिंह इसी सन्दूकची में से धन दिया करता था। इसपर बाबू साहब का विचार था कि इतना रुपया व्यय नहीं होना चाहिए था। परन्तु अब वह रुपया लापता देख चुप हो गया।

तिवारी ने पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा विचार था कि इसमें रुपये होंगे, परन्तु अब देखता हूँ तो कुछ नहीं है। खैर, आपको अभी मिल जाते हैं। ठहरिए।"

इतना कह दानसिंह भीतर गया और सौ-सौ रुपये के पाँच नोट निकाल लाया। साथ ही पूछने लगा, "कब तक वह आदमी फिर वहाँ जाएगा?"

"एक-दो सप्ताह में।"

"कहाँ है वह लड़की?"

"फ़ैज़ाबाद में।"

"अच्छा, मैं कोई लड़की को पहचाननेवाला ढूँढूँगा। यदि मिल गया तो उसको आपके आदमी के साथ भेज दूँगा।"

इसके कुछ दिन पीछे मोहिनीदेवी आई तो उसने सीता को पहचानने के लिए श्रीपति को भेजने का प्रबन्ध कर दिया।

श्रीपति की कई प्रकार से परीक्षा ली गई। एक दिन तिवारी आया तो श्रीपति को उसके साथ भेज दिया गया।

तिवारी ने बताया, "हमारा एक व्यक्ति फ़ैज़ाबाद में हवेली किराये पर लेकर रहने लग गया है। इसके लिए दो सौ रुपया तो व्यय हो चुका है। वह वहाँ रईस बनकर रहता है। उसकी ओर से नाच दिखाने के लिए शबनम को उसकी हवेली में बुलवाया जाएगा और जब वह नाच कर रही होगी तो वहाँ डाका डाला जाएगा और इस प्रकार उसका अपहरण कर लिया जाएगा।"

दानसिंह ने कहा, "यदि वह वही लड़की हुई, जो मैं समझ रहा हूँ तो यह सब झगड़ा करने की नौबत नहीं आएगी। आपका रईस उसको गाने के लिए वहाँ बुलवाएगा तो मैं वहाँ बीस-पचीस पुलिसवाले लेकर पहुँच जाऊँगा और उस लड़की को उनकी सहायता से छुड़ा लेंगे।"

"ठीक है। कौन जाएगा पहचानने के लिए?"

श्रीपति को तिवारी के साथ भेज दिया गया। श्रीपति नगर के बालकों के कपड़े पहन एक निरंजन मिश्र नामक आदमी के साथ फ़ैज़ाबाद में एक बैठक पर जा पहुँचा।

"सुनाओ मिश्रजी!" वहाँ बैठे एक मियाँ ने पूछ लिया।

"भाई! आज मजलिस नहीं लगेगी क्या?"

"आज उस लड़की का सरपरस्त आया हुआ है और वह उसको सैर कराने के लिए ले गया है।"

"तो फिर आज नहीं?"

"उम्मीद तो नहीं। मिर्ज़ा साहब भी लड़की के साथ गए हैं। वे ही बता सकते हैं कि आज मुजरा होगा कि नहीं।"

निरंजन ने कहा, "ये लखनऊ के एक बहुत बड़े रईस के साहबज़ादे हैं। मैंने ज़िक्र किया तो ये उसका नाच देखने के लिए चले आए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या नाम है ?"

इसका उत्तर श्रीपति ने देते हुए बताया, "भगवतस्वरूप।"

"ओह ! आपके वालिद शरीफ वहाँ क्या हैं ?"

सब योजना तो मार्ग में ही बनाकर आए थे। लड़के ने बता दिया, "मैं घर से चोरी से आया हूँ। इसलिए मैं समझता हूँ कि न ही बताऊँ तो ठीक रहेगा।"

इसपर निरंजन मिश्र और लड़का दोनों मुस्कराने लगे।

"अच्छा, कल आओगे तो बात बन सकती है। भगवतस्वरूपजी ! कुछ जेब में लेकर भी आए हो कि नहीं ?"

श्रीपति मुस्कराकर ही चुप रहा। वे दोनों नीचे उतरे और जब अपने निवासस्थान पर जाने लगे तो सामने से एक मोटर आती दिखाई दी। वे सड़क के किनारे खड़े हो गए। मोटर फर्र करती हुई निकल गई। श्रीपति ने अनुमान लगाया कि मोटर चलानेवाले के साथ सीता बैठी है। वह मोटर में बैठे किसी अन्य को देख नहीं सका। यह विचारकर कि यह उसकी भूल भी हो सकती है वह चुप रहा।

अगले दिन निरंजन मिश्र के साथ श्रीपति उस बैठक पर पहुँचा। मजलिस जमी हुई थी। शबनम नाचने के लिए निकलकर आई तो श्रीपति ने उसको देखते ही पहचान लिया।

एक नाच के उपरान्त जब लोग भेंट देने लगे तो श्रीपति ने भी दस रुपये का एक नोट निकालकर दिखाया। वह श्रीपति के सामने आकर खड़ी हो गई। उसे देखकर वह स्मरण-सा करने लगी कि उसको उसने कहीं देखा है।

श्रीपति ने धीरे से कहा, "सीता, जानती हो मुझको ?"

सीता को स्मरण हो आया। उसके मुख से श्रीपति का नाम निकलनेवाला था कि उसकी दृष्टि मिर्ज़ा की ओर चली गई और वह भयभीत-सी हो गई। मिर्ज़ा स्वभाववश सीता की प्रत्येक गतिविधि और हाव-भाव पर दृष्टि रखता था। उसने खाँसकर उसे सतर्क कर दिया। इस पर सीता मुस्कराई और बिना उत्तर दिए अगले आदमी से भेंट लेने के लिए चल पड़ी।

एक गाना और हुआ तो निरंजन और श्रीपति बैठक से उतर गए। वे दोनों उसी हवेली में ठहरे हुए थे जिसमें शबनम के गाने का प्रबन्ध किया जा रहा था। वहाँ पहुँच श्रीपति ने बताया कि लड़की सीता ही है। उसने अब देहरा के छोटे बाबू महीपाल के विषय में भी बताया कि वह एक हत्या के अभियोग में फरार है।

श्रीपति को वापस लखनऊ दानसिंह के पास भेज दिया गया। अगले ही दिन दानसिंह महीपाल के वारंट और सीता को पकड़कर लखनऊ लाने की आज्ञा लेकर पहुँच गया। ठीक महफिल के समय वह पुलिस को लेकर वहाँ पहुँचा। निरंजन मिश्र को वहाँ पहले ही भेज दिया गया था और वह मुँह लटकाए बैठक के नीचे खड़ा था। निरंजन ने बताया कि बैठक को ताला लगा है और वहाँ पर कोई भी नहीं है। वहाँ के पड़ोसियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता किया गया तो पता चला कि वे लोग दो वर्ष से वहाँ रह रहे थे। कुछ लड़कियों को गाना-बजाना सिखाने का धन्धा करते मालूम होते थे। आज एकाएक वे लोग वहाँ से विदा हो गए हैं। मकान खाली कर उसको ताला लगा चाबी मकान-मालिक को दे गए हैं।

महीपाल और सीता के फँसते-फँसते बच जाने से दानसिंह को भारी शोक हुआ। दानसिंह का अनुमान था कि महीपाल ने श्रीपति को देखकर पहचान लिया है और सीता को लेकर भाग गया है।

५

इस सब घटना का एक परिणाम यह हुआ कि श्रीपति के विषय में दानसिंह के विचार अच्छे बन गए। उसने उसको कॉलिज में पढ़ाने का विचार बना लिया।

एक दिन श्रीपति ने दानसिंह को बताया, "हमारे स्कूल में एक इतिहास पढ़ानेवाले अध्यापक हैं। उनका नाम है ब्रजभूषण पालीवाल। जब मैं छठी श्रेणी में पढ़ता था तब से ही वे मेरे संरक्षक बने हुए हैं। मेरी फीस भी वे ही देते थे।"

"बाबू साहब कुछ नहीं देते थे ?"

"वे अब मेरी माँ को दस रुपया मासिक देते हैं, किन्तु वह सब तो खाने-पीने में ही व्यय हो जाता है।"

"दसवीं की परीक्षा के उपरान्त क्या करोगे ?"

"पालीवालजी कहते थे कि उनके पास मुझे कॉलेज में पढ़ाने के साधन नहीं हैं। वे बाबू साहब से मेरी सहायता करने के लिए कहेंगे। यदि वहाँ से सहायता मिल गई तो मैं कॉलेज में पढ़ूँगा।"

"पृथिवीपाल तुमसे मिला करता है क्या ?"

"नहीं, वह अब नहीं मिलता।"

"तुम लखनऊ कॉलेज में पढ़ोगे ?"

"माँ से पूछना पड़ेगा, वह वहाँ अकेली रह गई है।"

"माँ से कहना कि वह वहाँ बाबू साहब से सहायता लेकर निर्वाह करे। यहाँ मैं तुम्हारा सब खर्चा दूँगा।"

श्रीपति से सीता के जीवित होने और महीपाल के हिन्दुस्तान में ही होने के समाचार से विन्ध्यवासिनी के जीवन में प्राण-से भर गए। वह पुनः जीवन में रुचि लेने लगी। पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी गई और सन्तोषपूर्वक महीपाल के पकड़े जाने की प्रतीक्षा होने लगी।

पद्मजीतसिंह ने दानसिंह द्वारा सीता को ढूँढकर लानेवाले के लिए दस सहस्र रुपए का इनाम देने की बात कह दी। दानसिंह ने बताया भी कि आर्यसमाज के कार्यकर्ता रुपयों के लोभ में यह कार्य नहीं कर रहे हैं। वे तो धर्म के विचार से काम करते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण इनाम नहीं, अपने कार्य पर खर्च के लिए रुपया लेते हैं।

दानसिंह की शीशे की अलमारी के रुपयों के विषय में दुर्गानन्दन से बात हुई तो उसने बताया, "पिताजी ! इस आलमारी का रहस्य तो कई लोगों को विदित था। वे लोग मेरी अनुपस्थिति में भी यहाँ आते थे और भगवान जाने कुछ ले जाते थे अथवा नहीं। एक दिन बिस्मिल आया था और सौ रुपया माँगता था, मैंने देखा तो इसमें सौ रुपया ही रखा था। वह दे देने के अनन्तर यह खाली हो गई थी।"

दानसिंह को कांग्रेस वालंटियर कोर के कप्तान बाबूलाल श्रीवास्तव पर सन्देह था। वह दानसिंह के बाद में पकड़ा गया था और उसको दो वर्ष का कठोर दण्ड मिला था। इस कारण वह अब रुपए रखने का स्थान बदल देना चाहता था। जहाँ तक बिस्मिल का प्रश्न था उसके विचार बदल गए थे और इस विषय में उसकी बिस्मिल से बात भी हुई थी।

बिस्मिल का दानसिंह से परिचय आर्यसमाज द्वारा ही हुआ था। वह आर्यकुमार सभा, शाहजहाँपुर के सदस्य के नाते दानसिंह से मिला था और फिर धीरे-धीरे परिचय बढ़ता गया। सन् १९१८ की बात है कि एक दिन बिस्मिल लखनऊ आया तो दानसिंह से भी मिलने के लिए आया। दानसिंह ने समझा कि वह आर्यसमाज के किसी कार्य के लिए चन्दा लेने आया है। उसने पूछा, "आओ भाई ! किस प्रकार आना हुआ है ?"

"बाबू साहब, गुड़ पर तो मक्खियाँ रस चूसने के लिए ही आया करती हैं।"

"किस काम के लिए चाहिए ?"

"तो काम बताना होगा ?"

"हाँ।"

"आप आर्यसमाज के अतिरिक्त भी किसी संस्था को धन दे सकते हैं क्या ?"

"मैं आर्यसमाजी नहीं हूँ। मैं शुद्ध-पवित्र हिन्दुस्तानी हूँ। मैं सन् १९११ से कांग्रेस का सदस्य हूँ। कांग्रेस में इस कारण सम्मिलित हुआ था कि मैं इसके द्वारा हिन्दुस्तान के लोगों का कल्याण हो रहा समझता था। १९१६ में मैं तिलकजी के सम्पर्क में आया तो उन्होंने मुझसे एक बात पूछी थी कि क्या हिन्दुस्तान के कल्याण का केवल एक ही उपाय है ?

"मैने नम्रतापूर्वक कह दिया कि कोई दूसरा दिखाई भी तो नहीं देता।

"वे पूछने लगे, 'खुदीराम बोस का नाम सुना है ?'

"मैंने बताया, 'सुना है।'

"वे कहने लगे, 'वह भी देश के कल्याण के लिए बलिदान हो गया है, और उसके गुरु विनायकराव दामोदर सावरकर भी देशकल्याण के लिए ६० वर्ष के कारावास का दण्ड भोग रहे हैं।'

"फिर वे पूछने लगे, 'श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम सुना है ?'

"मैं चुप रहा। इसपर उन्होंने एक बात कही थी, 'देश को स्वतन्त्र करने के कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग हैं। हम कांग्रेसी दाम दे-देकर अपनी आवाज़ को ऊँचा करने का यत्न कर रहे हैं। यहाँ उत्तरी भारत में एक आर्यसमाज है, उसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। वे अपने साथ भाड़े के टट्टू नहीं रखना चाहते। अपने में ही शक्ति संचय कर स्वतन्त्र होने की अभिलाषा रखते थे। इसी प्रकार अन्य मार्ग भी हो सकते हैं। अतः देखने की बात है हृदय की शुद्धता, जिसको अंग्रेज़ी में 'सिंसियरिटी' कहते हैं।'

"बिस्मिलजी ! तब से मैं अपनी शक्ति के अनुसार सबको देता हूँ। आर्यसमाज को देता हूँ तो सनातनधर्म को भी देता हूँ। कांग्रेस को देता हूँ तो कांग्रेस के विपरीत तिलकजी की होमरूल लीग को भी देता हूँ।"

"तो बाबू साहब ! आप मुझको भीं दिया करिए। मैं खुदीराम बोस और सावरकर जी के पद-चिह्नों पर चलनेवाला आदमी हूँ।"

इसपर दानसिंह ने गम्भीर हो बिस्मिल के मुख पर देखा और कह दिया, "एक शर्त पर। वह यह कि अपने दल में से केवल आप ही मुझसे लेने के लिए आया करेंगे, और मेरा नाम आप अपने किसी साथी को बताएँगे भी नहीं। साथ ही इस घर के बाहर हम एक-दूसरे को पहचानेंगे भी नहीं।"

"ऐसा ही होगा।"

"तो इधर आइए।" दानसिंह ने उसको शीशे की आलमारी खोलने का ढंग बता दिया और उसमें रखी काले रंग की संदूकची दिखाकर बताया, "इसमें आपके लिए कुछ न कुछ रखा रहेगा, आप केवल उतना ले जाइए जितना कम से कम ले जाने से आपकी सामयिक समस्या सुलझ जाए। क्योंकि इसमें रखे धन के कुछ अन्य लोग भी अधिकारी हैं।"

बिस्मिल आश्चर्यचकित मुख देखता रह गया। इस प्रकार का दानी उसको अभी तक मिला नहीं था। दानसिंह ने उसको माँगा हुआ धन दिया तो बिस्मिल ने कह दिया, "आपने मेरा बहुत मान किया है। मैं आपकी इस उदारता को कभी नहीं भूलूँगा।"

"यह इसलिए कि तुम आर्यसमाजी हो, और तुम्हारे विषय में स्वामी सोमदेव ने जो शब्द कहे हैं, वे मुझे स्वीकार हैं।"

यह बात सन् १९१८ की थी और तब से बिस्मिल को जब भी आवश्यकता हुई वह इस कोष में से ले जाता था। उसने भी आवश्यकता से अधिक न कभी माँगा और न निकाला ही।

परन्तु अब स्थिति बदल गई थी। दानसिंह के मस्तिष्क में महात्मा गांधी की राजनैतिक मीमांसा घर कर चुकी थी। अतः जब १९२२ में बिस्मिल दानसिंह से मिलने के लिए आया तो उसने कह दिया, "अब मैं सच्चे अर्थों में गांधी जी का शिष्य बन गया हूँ। अब मैं हिंसात्मक कामों में विश्वास नहीं रखता।"

"तो क्या अब आपका विश्वास 'बहुमार्ग एक लक्ष्य' पर नहीं रहा?"

"मार्ग तो एक से अधिक हो सकते हैं, मगर सभी उचित होंगे इसमें सन्देह हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। अहिंसा का मार्ग ही एक ऐसा मार्ग है जिसमें देश का कल्याण हो सकता है।"

"तो क्या यह आपका अन्तिम विचारित मार्ग है?"

"आपको यदि अपने लिए, मेरा अभिप्राय है कि अपनी निजी आवश्यकता के लिए कुछ चाहिए तो मिल सकता है।"

"मेरा अपना-आप और मेरे जीवन-कार्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। इसपर भी आपके सद्व्यवहार और स्पष्टवादिता के लिए आपका कृतज्ञ हूँ।"

बिस्मिल ने नमस्कार किया और उठकर खड़ा हो गया।

ज़माना बदल रहा था और वह भी इसी प्रकार अनुभव करने लगा था।

६

बिस्मिल अभी बैठक में ही खड़ा था कि श्रीपति स्कूल से आ गया। वह बिस्मिल को वहाँ खड़ा देख विस्मय में मुँह देखता रह गया। फिर एकाएक हाथ जोड़ बोला, "भाई साहब, नमस्ते!"

"ओह! श्रीपति! तुम यहाँ क्या करने के लिए आए हो?"

"मैं बाबू जी के पास ही रहता हूँ।"

इस पर दानसिंह ने बताया, "इसको मैंने अपना पुत्र बना लिया है। अब मेरे दो लड़के हैं। किन्तु आप इसको किस प्रकार जानते हैं?"

"यह बहुत ही समझदार लड़का है। यह स्वयं ही आपको मेरे इससे सम्बन्ध के विषय में बता देगा।"

बिस्मिल जो गया तो फिर दुबारा दानसिंह के जीवन में नहीं आया, परन्तु श्रीपति उसके विषय में समय-समय पर दानसिंह को बताता रहता था। श्रीपति का बिस्मिल से सम्पर्क अपने इतिहास के अध्यापक ब्रजभूषण पालीवाल के द्वारा हुआ था। वास्तव में पालीवाल भी तो बिस्मिल की शिक्षा का ही परिणाम था।

यह हिंसा-अहिंसा का गांधीवादी अर्थ दानसिंह पर १९२४ तक ही रहा। सन् १९२४ में लखनऊ में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया। कांग्रेस कहती थी कि उस फसाद में मुसलमानों का दोष नहीं है। दोषी अंग्रेज़ी सरकार है जो हिन्दू-मुसलमान के ऐक्य को भंग करने में रुचि प्रकट करती है।

एक बार तो कांग्रेसियों के इस समाधान ने दानसिंह का मुख बन्द कर दिया, परन्तु दानसिंह को पता चला कि आर्यसमाजी नेता तिवारी हिन्दुओं को मुसलमानों के विपरीत लड़ाने के लिए उनका नेतृत्व कर रहा है तो उसके मन में संशय होने लगा। बलवे के प्रथम दिन मुसलमानों ने हिन्दुओं की दुकानें लूटीं, हिन्दुओं के पेट में छुरे घोंपे और उनकी स्त्रियों का अपहरण किया।

उस दिन श्रीपति भी अपना सिर फुड़वाकर घर लौटा था। वह स्कूल से लौटा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पत्थर कहीं से आया और उसके सिर पर जा लगा। चोट लगते ही वह भागा और घर पहुँचकर ही उसने दम लिया। घर पर उसकी मरहम-पट्टी की गई।

जब मरहम-पट्टी हो गई तो बाबू साहब ने उससे पूछा, "तुम लड़नेवालों में क्यों खड़े हुए थे?"

"पिताजी! मैं तो खड़ा हुआ ही नहीं और जहाँ पत्थर पड़ा था वहाँ कोई लड़नेवाला था भी नहीं। बाज़ार बन्द था। सड़क पर कोई आ-जा भी नहीं रहा था। मैं अभी गणेशगंज से कुछ अन्तर पर ही था कि खट् से एक पत्थर मेरे सिर पर आ लगा। मैंने सिर उठाकर देखा तो कुछ लोग एक मकान की छत पर खड़े मेरे सिर का निशाना ठीक बैठा देख नारे लगाने लगे थे। मैं भागा तो यहाँ आकर ही दम लिया।"

अगले दिन नगर का चित्र ही बदल गया था। मुसलमानों के मुहल्ले खाली हो रहे थे। भागते हुए मुसलमान तिवारी-तिवारी के हउए का हल्ला कर रहे थे। भागते हुए और 'तिवारी आया, तिवारी आया' का हल्ला करते हुए एक मुसलमान को रोककर दानसिंह ने पूछा, "भाई! किस तिवारी की बात कर रहे हो?"

वह कहने लगा, "वही साहब जो आरजा समाजी है।"

दंगा समाप्त हुआ तो दानसिंह को तिवारी केसरबाग बारादरी में नागरिकों की सभा में मिल गया। सभा डिप्टी कमिश्नर ने बुलाई थी। डिप्टी कमिश्नर ने दोनों समुदायों में शान्ति की आवश्यकता पर व्याख्यान झाड़ा तो तिवारी से कहा गया कि वे डिप्टी कमिश्नर साहब की अपील का समर्थन करें।

तिवारी ने खड़े होकर बहुत ही मानयुक्त शब्दों में डिप्टी कमिश्नर साहब के वर्तमान प्रयास की प्रशंसा की और हिन्दुओं की ओर से सरकार और मुसलमानों को आश्वासन दिया कि उनको उनसे डरने की आवश्यकता नहीं। तिवारी ने कहा, "मैं महात्मा गांधी कां शिष्य हूँ। मेरा अहिंसा में विश्वास है। मैं खद्दर पहनता हूँ; देश में मनुष्य तो मनुष्य, पशु की भी हत्या करना पाप मानता हूँ।

"मैं चाहता हूँ कि सरकार हमारे इस विश्वास का प्रभाव हिन्दुओं पर बना रहने दे। कठिनाई यह है कि सरकार हमारी अहिंसा की नीति को पसन्द नहीं करती है।

"सरकार ने कुरबानी की गाय का जुलूस निकालने की स्वीकृति दी और भड़के मुसलमानों ने जुलूस निकाला। भला ये दोनों हमको कहें कि हिन्दू हिंसा न करें तो इनको भी तो चाहिए कि इस किस्म की कुरबानी की इजाज़त न दें। मुसलमान भाई भी इस किस्म की हत्या करने से दूर रहें। हत्या तो हत्या रही, उस हत्या करने की प्रवृत्ति का प्रदर्शन करने की स्वीकृति दी गई और कुछ मुसलमान भाई जो अपनी हत्या नहीं चाहते स्वयं हत्या की नुमाइश करने चल पड़े।

"यह स्वाभाविक है कि हमारा हिन्दुओं पर दबदबा, कि वे अहिंसात्मक रहें, ढीला पड़ गया और यह झगड़ा हुआ।

"मेरा सरकार से निवेदन है कि वह इस प्रकार की हिंसा करने की इजाज़त न दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हत्या होनी ही है तो उसकी नुमाइश की भला क्या ज़रूरत थी ?

"मुसलमानों को गाय की कुरबानी का मज़हबी हक है या नहीं, इसके विषय में वे जानें और उनके उलेमा जानें। मैं तो यह कहता हूँ कि उनको इस हत्या की नुमाइश का हक हासिल नहीं है। न ही सरकार को हक हासिल है कि वह इस प्रकार हिंसात्मक काम की सरेबाज़ार नुमाइश की इजाज़त दे।

"इससे, हमारा लोगों को कहना कि वे किसी प्राणी की भी हत्या न करें, प्रभावहीन हो जाता है।

"हम तो सदा सबको सुख पहुँचाने का व्रत लिये हुए हैं। परन्तु हमारे कहने का प्रभाव तभी हो सकता है जब दूसरे भी हमको अपनी बात प्रभावयुक्त ढंग से कहने की स्वीकृति दें।

"मैं डिप्टी कमिश्नर साहब के वक्तव्य के एक-एक अक्षर का समर्थन करता हूँ।"

सभा के अन्त में डिप्टी कमिश्नर ने कहा, "आइन्दा कुरबानी की गाय के जुलूस का मार्ग निश्चित करने में बहुत सावधानी का प्रयोग किया जाएगा।"

मीटिंग समाप्त हुई, परन्तु इस मीटिंग में एक आवाज़ आई, "आइन्दा हिन्दुओं को भी जुलूस निकालनेवालों की हत्या करने में बहुत सावधानी प्रयोग करनी चाहिए।"

तिवारी को दानसिंह अपनी मोटर में बिठाकर अपने घर ले गया। मार्ग में उसने पूछ लिया, "तिवारीजी, डिप्टी कमिश्नर को तो आपको वक्तव्य देने के आग्रह के लिए खेद हो रहा होगा?"

तिवारी हँस पड़ा और बोला, "यदि वे मेरे वक्तव्य के एक शब्द को भी गलत कहते तो मैं कुछ अन्य तथ्य बताने के लिए विवश हो जाता। इस जुलूस के निकलने से पूर्व हम डिप्टी कमिश्नर से मिले थे और सब बातें उसको समझाई थीं। उसने इसपर कह दिया कि जो हिन्दू किसी भी मुसलमान को तंग करेंगे तो हम उनको फाँसी का हुक्म दे देंगे।

"मैंने कह दिया था कि ऐसा तो होना नहीं चाहिए। फिर मैंने कहा कि वह तो केवल पकड़ ही सकता है, फाँसी की सज़ा तो कोर्ट ही दे सकती है। दुर्भाग्य से हाई कोर्ट और सेशन कोर्ट के जज उसके अधीन नहीं हैं।"

"परन्तु तिवारीजी! सब लोग कह रहे हैं कि आपने भी तो हिंसा का मार्ग अपनाया है।"

"भाई! असली दोष तो हिंसा को आरम्भ करनेवालों का है।"

"परन्तु महात्माजी का कहना तो ऐसा नहीं है?"

"ठीक है, मगर मैं महात्मा जी की सारी बातें नहीं मानता।"

"कब से?"

"सन् १९२२ से, जब से देश में हिन्दू-मुसलमान दंगे आरम्भ हुए हैं।"

दानसिंह ने बात बदल दी। वह तिवारी को अपने घर सीता के विषय में बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए लाया था। उसने तिवारी से चाय आदि के लिए पूछा तो उसने कह दिया, "चाय नहीं, बाबू साहब ! दूध चाहिए।"

दानसिंह ने श्रीपति से कहा, "देखो बेटा ! माताजी से कहो, तीन पाववाला पंजाबी गिलास भरकर दूध भेज दें।"

श्रीपति गया तो दानसिंह ने कहा, "मैं उसी लड़की के विषय में आपसे पुनः बात करना चाहता हूँ। यह लड़का उस लड़की को पहचानता है और यह कहता है कि इसने उसको लखनऊ में देखा है।"

"मैं पता करूँगा। मगर बाबू साहब ! इस प्रकार के काम करने में बहुत रुपया खर्च होता है और उसके लिए हम खुले रूप में दान नहीं माँग सकते।"

"इस लड़की की खोज और उसको निकालने में जो कुछ भी खर्च होगा, वह मैं दूँगा।"

"वह आपकी कोई नज़दीकी नातेदार है क्या ?"

"हाँ, वह मेरे साले की लड़की है।"

"तो ऐसा करिए, अभी पाँच सौ का प्रबन्ध कर दीजिए। मैं कल से ही अपने जासूसों का जाल पूर्ण यू० पी० में फैला दूँगा। सम्भव है कई सहस्र खोज-खोज में ही व्यय हो जावें।"

"मैं सब दूँगा। लड़की छूट जानी चाहिए। इस समय वह ग्यारह वर्ष की होगी। मैं समझता हूँ कि यदि और विलम्ब किया गया तो उसे भ्रष्ट कर दिया जावेगा।"

दूध आया और तिवारी गिलास का विस्तार देख प्रसन्नवदन पीने लगा। जब वह दूध पीने लगा तो दानसिंह भीतर गया और पाँच सौ रुपया निकाल गया। रुपया देते हुए दानसिंह ने कहा, "मैं असीम धनराशि व्यय करने के लिए तैयार हूँ। आप इसके लिए यत्न कीजिए।"

७

इस वार्तालाप के तिवारी एक मास बाद दानसिंह से मिलने के लिए आया और कहने लगा, "लड़की का पता चल गया है। उसके चारों ओर छिप-छिपकर उसकी गतिविधियों की सूचना देनेवालों का जाल बिछा दिया गया है। इसके लिए जब तक यह जाल रहेगा, एक सहस्र रुपया प्रतिमास का खर्च है।

"मेरा विचार है कि आप डिप्टी कमिश्नर से मिलिए और उसको शबनम, ग्यारहवर्षीय रक्कासा, का इतिहास बताकर छुड़ाने की माँग करिए। उसको यह मत बताइए कि आप उसके रहने के स्थान को जानते हैं। यह कहिएगा कि वह लखनऊ में है और उसको ढूँढने में आप उसकी सहायता चाहते हैं।

"आप पहले डिप्टी कमिश्नर का उत्तर ले आइए, फिर मैं आपको अपनी योजना बताऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानसिंह ने टेलीफोन कर डिप्टी कमिश्नर कौल से मिलने के लिए समय ले लिया। मिलने पर डिप्टी कमिश्नर ने छूटते ही कहा, "तो आपको भी हमारी आवश्यकता अनुभव होने लगी है ?"

दानसिंह मुस्कराकर कहने लगा, "हुजूर ! आवश्यकता कब अनुभव नहीं हुई थी ? कभी जेल में पकड़कर डालने के लिए, कभी जेल से निकालने में सहायता के लिए। आपकी तो सदा ही आवश्यकता रहती है।"

"अब फिर जेल जाने की आवश्यकता अनुभव हो रही है क्या ?"

"जी नहीं, अब तो कौंसिल में जाकर मन्त्री बन आपपर हाकिम बनने का विचार कर रहा हूँ।"

दोनों हँस पड़े। डिप्टी कमिश्नर बोला, "परन्तु बाबू साहब ! अभी नॉमिनेशन पेपर फाइल करने का समय तो नहीं आया ?"

"मैं भी तो अभी केवल एप्लीकेशन फाइल करने के लिए आया हूँ।"

इसके उपरान्त दानसिंह ने सीता के अपहरण का पूर्ण इतिहास बताया और कहा, "सुना जा रहा है कि उसके मुहाफ़िज़ आजकल लखनऊ में घूम रहे हैं। इससे हमारा अनुमान है कि लड़की भी यहीं होगी। मैं आपसे यह निवेदन करने के लिए आया हूँ कि आप उसके ढूँढने में कुछ करिए। अपने 'सीक्रेट इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट' को इस विषय में कुछ करने की हिदायत कीजिए।"

"यह हो जावेगा। मगर मैं पूछता हूँ कि हम आपकी सहायता क्यों करें ? आप तो सरकार के शत्रु हैं। आपके साथी कौंसिलों में जाकर सरकारी अफसरों को बदनाम ही तो कर रहे हैं !"

"मैं तो रिस्पोंसिविस्ट पार्टी की ओर से चुनाव लड़ूँगा और यदि वज़ीर बनूँगा तो उस दल की तरफ से ही बनूँगा। तब तो आपको तंग करने का प्रश्न नहीं होगा, अपितु आपसे सहयोग अथवा असहयोग आपके व्यवहार के अनुसार ही निश्चित होगा।"

"यह सब वाग्जाल है। आप सदा सरकार का विरोध करेंगे। इसमें कारण है, और हम आपको अपना शत्रु समझेंगे।

"अच्छा अब बताइए ! क्या आपको उस लड़की के रहने के स्थान के विषय में कुछ ज्ञान है ?"

"जी नहीं। इसीलिए तो इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट की सहायता माँग रहा हूँ।"

"अच्छी बात है ! मैं यत्न करूँगा। हाँ, यह तो बताइए कि उसका मुहाफ़िज़ कौन है ? आपने उसको लखनऊ में पहचाना है ?"

"हाँ, उसको मैं पहचानता हूँ। वह देहरा के बाबू छोटेलाल का छोटा लड़का महीपाल है। वह सेना से भागा हुआ लेफ्टिनेंट है। एक हत्या के मुकद्दमे में लापता अपराधी है और इस नाबालिग लड़की के अपहरण में अभियुक्त है।"

"ओह, ऐसा एक आदमी आजकल सरकारी खुफिया पुलिस में एक्साइज़ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महकमे में नौकर है। मैं उसके पूर्व-चरित्र के विषय में जाँच करवाऊँगा। वह हिन्दुस्तान की केन्द्रीय सरकार का एक अफसर है। सुना है बहुत ही योग्य है। मैं पता करूँगा।"

दानसिंह इस भेंट से असन्तुष्ट लौटा। सायंकाल तिवारी से भेंट हुई तो तिवारी ने कहा, "मैं योजना बनाकर आपको बताऊँगा और फिर आप वैसा ही करिएगा जैसा मैं कहूँ।"

पन्द्रह दिन और व्यतीत हो गए। आखिर एक दिन तिवारी आया और उसके साथ देहाती पोशाक में एक लठैत था। तिवारी ने कहा, "यह आदमी अपनी कार्यवाही करनेवालों का नेता है। इसको आप आज इसी समय दो सहस्र रुपया दे दें।"

जब रुपया दे दिया गया और वह आदमी चला गया तो तिवारी ने बताया, "महीपाल को अपने पूर्व-कार्यों से माफी मिल चुकी है। इस कारण अब उसके खिलाफ कोर्ट में चाराजोई हो सकती है अथवा नहीं, यह बाद में देखा जाएगा।

"जहाँ तक डिप्टी कमिश्नर का सम्बन्ध है, वह महीपाल को केन्द्रीय सरकार की ओर से माफी मिल जाने के बाद कुछ नहीं कर सकता। रही सीता की बात। उसके घर में दो बार लड़की का नृत्य और संगीत का प्रदर्शन हो चुका है। वह इस विषय में कुछ नहीं करेगा।

"मैंने आज रात को ठीक बारह बजे शबनम के मकान पर डाका डालने का प्रबन्ध किया है। डाका धन लूटने के बहाने से किया जाएगा और लड़की तो फोकट में मिली प्रकट की जाएगी। आप लड़की की माँ और कुछ सबल संरक्षकों के साथ लखनऊ स्टेशन के बाहर मोटरगाड़ी में लड़की को कानपुर ले जाने के लिए तैयार रहें। कानपुर से बम्बई और फिर कहीं विदेश में।

"यदि पकड़े गए तो मुकद्दमा होगा और फिर मुकद्दमा लड़ा जाएगा।

"आप ठीक साढ़े ग्यारह बजे हजरतगंज थाने में रपट लिखाने किसीको भेज दीजिए और कहिएगा कि एक अल्पायु अपहृत लड़की नरही में मिर्ज़ा अब्दुल समद के मकान में बन्दी की हुई है।

"वे रिपोर्ट लिखेंगे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। यदि लिख लें तो ठीक है। यदि नहीं लिखेंगे तो रिपोर्ट घर से लिखकर ले जाना और थानेदार के सामने पटककर चले आना चाहिए।

"सम्भव है कि थानेदार रपट लिखवानेवाले के साथ पुलिस भेज दे! कोई पहचान कर सकनेवाला आदमी उस मकान पर जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

दानसिंह स्वयं रपट लिखाने जाना चाहता था। वह अपने साथ श्रीपति को ले जाना चाहता था। दुर्गानन्दन को वह विन्ध्यवासिनी और चार-पाँच अंगरक्षक लाने के लिए कुरेड़ी मोटर में भेजना चाहता था।

दुर्गानन्दन नहीं मिला। उसकी माँ से पता चला कि वह प्रातःकाल से लापता है। विवश मोहिनी को मोटर में कुरेड़ी भेज दिया गया। उसको समझा दिया गया कि उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेल के स्टेशन के बाहर मोटर में ठीक साढ़े बारह बजे रहना चाहिए।

श्रीपति और दानसिंह रात के साढ़े ग्यारह बजे थाने पहुँचे और मुंशी को रपट लिखने के लिए कहा गया। वह बैठा-बैठा ऊँघ रहा था। उसने छूटते ही कहा, "यह भी कोई रपट लिखाने का वक्त है ?"

दानसिंह ने कहा, "हुजूर ! लिख दीजिए।"

"क्यों ?"

"कुछ खिदमत कर सकूँगा।"

"पहले बात करो।"

श्रीपति ने दस रुपये का एक नोट मुंशी की मेज़ पर रखे कलम-दान के नीचे रख दिया। मुंशी ने घूरकर श्रीपति की ओर देखा तो श्रीपति ने कह दिया, "हुजूर ! मेरी बहिन के अपहरण की बात है।"

मुंशी रुपये जेब में रखता हुआ बोला, "लिखाओ।"

दानसिंह ने लिखाया, "अर्सा साढ़े पाँच साल का हुआ कि नैनीताल में एक डाका पड़ा था। उसमें एक छः वर्ष की लड़की सीता का अपहरण हो गया था। उस अपहरण के समय एक हत्या भी हो गई थी। उस डाके का मुख्य अभियुक्त महीपाल लापता हो गया और हत्या के मुकद्दमे का उसकी अनुपस्थिति में ही फैसला हो गया। दूसरे दर्जे के मुलज़िमों को दस-दस वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड मिला था। अब पता चला है कि वही महीपाल सीता के साथ नरही में मियाँ अब्दुल समद के मकान पर रहता है। हमारी अर्ज़ी है क़ि इस लड़की को इस मकान से तुरन्त छुड़ाया जाए। इस समय लड़की और मुलज़िम वहीं पर हैं।"

इस रिपोर्ट से तो मुंशी की कलम चलती-चलती रुक गई। वह बोला, "बहुत संगीन मुआमला है।"

"हाँ हुज़ूर !"

"क्या नाम है ?"

"दानसिंह। लाटूश रोड, १५ नम्बर।"

"दानसिंह !" मुंशी कलम छोड़ आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। दानसिंह अभी भी मुंशी के मेज़ के पास खड़ा-खड़ा लिखा रहा था।

मुंशी ने एकाएक उठकर कहा; "आप बैठ जाइए।"

"मुंशी साहब, आप बैठिए और लड़की को छुड़वाने का यत्न कीजिए।"

मुंशी उठकर साथ के कमरे से एक कुर्सी घसीट लाया। उसपर दानसिंह को बिठाकर वह सब-इंस्पेक्टर, जो ड्यूटी पर था उससे राय करने के लिए चला गया। सब-इंस्पेकटर भी वहाँ आ गया। उसने दानसिंह से कहा, "बिना मैजिस्ट्रेट के हुक्म के हम कुछ कार्यवाही नहीं कर सकते। आपको पहले आना चाहिए था।"

"मुझको अभी-अभी पता चला है। पहले आ नहीं सकता था और विलम्ब करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उचित नहीं था।"

इसपर सब-इंस्पेक्टर ने डिप्टी कमिश्नर के बँगले पर फोन किया। चपरासी ने कह दिया कि साहब सो रहे हैं।

मुंशी ने उसको कहा, "मैं हज़रतगंज थाने से सब-इंस्पेक्टर बोल रहा हूँ, साहब को जल्दी उठाओ!"

इस जल्दी में भी एक घंटा लग गया। जब मुंशी ने मकान को घेरा डालने की स्वीकृति माँगी तो साहब ने पूछ लिया, "रिपोर्ट किसने लिखाई है?"

"दानसिंह रईस, लाटूश रोड ने।"

"वह खुद रिपोर्ट लिखाने के लिए आया है?"

"जी।"

"टेलीफोन से क्यों नहीं बताया? उसे मुझसे कहना चाहिए था।"

"हुज़ूर, हुक्म हो तो उसको टेलीफोन पर बुलाऊँ?"

"हाँ, और देखो, एक सफेदपोश पुलिसमैन मकान पर भेज दो और उनको मकान खाली कर भाग जाने के लिए कह दो। उनको एक घंटे का मौका देकर थाने से बावर्दी पुलिस भेज देना। समझे न?"

"हाँ हज़ूर!"

"दानसिंह को बुलाओ!"

जिस समय दानसिंह ने टेलीफोन उठाया उस समय साढ़े बारह बज गए थे। डिप्टी कमिश्नर ने फोन पर कहा, "बाबू साहब! आप सीधे मेरे पास नहीं आए। फजूल में वक्त खराब किया।"

"मैंने समझा था कि हज़रतगंज थाने में काम जल्दी बन जाएगा। मुझको मालूम नहीं था कि इस प्रकार के मुआमलों में भी मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के बिना पुलिस हिल नहीं सकती।"

"बात यह है, अगर पुलिस को अपने सिपाहियों से पता चलता तब तो वे उसपर कार्यवाही कर सकते थे। एक बाहरी आदमी की इत्तला पर बिना मैजिस्ट्रेट की मंज़ूरी के वे किसी मकान की तलाशी नहीं ले सकते।"

"वे मकान का घेरा तो डाल सकते थे और सुबह के समय मंज़ूरी ले ली जाती।"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता था। यह कायदा नहीं है।"

"खैर, अब तो हुक्म सादरु किया जाए। मुझे यहाँ आए एक घंटे से अधिक हो चुका है।"

"मैं अभी हुक्म लिखकर भेज रहा हूँ। साथ जाने के लिए एक मैजिस्ट्रेट को टेलीफोन कर रहा हूँ।"

"इस सब कार्यवाही में तो देर लग जावेगी।"

"हम मजबूर हैं, कायदे-कानून की तामील लाज़मी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बराय मेहरबानी जल्दी करिए।"

उधर से टेलीफोन बन्द हो गया। दानसिंह श्रीपति को लेकर थाने के बाहर चला गया।

मुंशी ने पूछा, "बाबू साहब ! किधर जा रहे हैं ?"

"डिप्टी साहब के हुक्म का इन्तज़ार कर रहा हूँ।"

"इस रिपोर्ट पर अपने दस्तखत तो कर जाइए !"

दानसिंह ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए।

८

थाने से बाहर निकलकर दानसिंह ने श्रीपति से कहा, "मैं समझता हूँ कि तुम रेल के स्टेशन पर चले जाओ। वे लोग अब तक सीता को लेकर वहाँ पहुँच गए होंगे अथवा पहुँचनेवाले होंगे। उनको विदा कर देना। देखो, माताजी यदि आई हों तो उनको घर ले आना।"

श्रीपति ने देखा कि एक खाली इक्का जा रहा है। उसने भागकर इक्केवाले को रोका और उसमें सवार हो चला गया।

डिप्टी कमिश्नर की आज्ञा आने और उसके साथ मैजिस्ट्रेट भेजने के प्रबन्ध में एक घंटे से अधिक समय लग गया। दानसिंह बाहर सड़क पर खड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। मैजिस्ट्रेट थाने के भीतर गया और एक दर्जन पुलिसमैन लेकर पैदल ही नरही की ओर चल पड़ा। दानसिंह उनके साथ था।

पतेवाले मकान पर पहुँचे तो देखा कि मकान का द्वार खुला है और मकान के सब लैम्प बुझे हैं। बिजली का मेन स्विच ऑफ था। उसको खोला गया तो मकान जगमग करने लगा। सब लैम्प 'ऑन' थे। प्रकाश हुआ तो पुलिसमैन और मैजिस्ट्रेट देखकर चकित रह गए। मकान की एक भी वस्तु साबुत नहीं थी। आलमारियों के शीशे, मेज़-कुर्सियाँ टूटी पड़ी थीं। अनुमान लगाया गया कि वहाँ लड़ाई-फसाद हुआ है। फर्श और दरी पर बहुत-से आदमियों के पाँवों के निशान थे। सब कमरे देखे गए थे। एक-दो सन्दूक टूटे पड़े थे और उनके कपड़े निकालकर बाहर कर दिए गए थे। एक कमरे में लोहे की एक सन्दूकची खुली पड़ी थी। उसमें की सब वस्तुएँ लापता थीं। यह मालूम होता था कि वहाँ पर डाका पड़ा है।

मैजिस्ट्रेट ने जब डाके की बात कही तो दानसिंह ने अर्ज़ की, "हुजूर ! आसपास के मकानवालों से पूछना चाहिए कि उन्होंने इस मकान में किसी प्रकार का हल्ला सुना है ? यदि सुना है तो कब सुना है ?"

पुलिस के आदमी भेजकर कुछ लोगों को बुलाया गया। सबने यही बताया कि रात दस बजे के लगभग वे लोग सोए थे और अब जगाने पर ही उठे हैं। उन्होंने यहाँ किसी प्रकार का शोर नहीं सुना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानसिंह ने कहा, "इनका बयान लिख लिया जाए।"

मगर मैजिस्ट्रेट ने केवल उनके नाम लिखकर उन्हें दूसरे दिन थाने में हाज़िर होने के लिए कह दिया।

दानसिंह स्वयं विस्मय कर रहा था कि इतनी उथल-पुथल हुई और किसी प्रकार का हल्ला-गुल्ला नहीं हुआ? दानसिंह ने फिर कहा, "हुजूर! ज़रा ध्यान से देखा जाए कि यहाँ किसीके खून का निशान तो नहीं है?"

"बाबू साहब!" मैजिस्ट्रेट ने चिढ़कर कहा, "आप चाहते क्या हैं?"

"मुझको कुछ शक हो रहा है।"

"क्या?"

"वह यह कि इनको मेरा पुलिस में जाना किसी प्रकार पता चल गया था और ये लोग चुपचाप लड़की को लेकर भाग गए हैं। यह सब उथल-पुथल उन्होंने पुलिस को धोखा देने के लिए की है, जिससे यह समझा जाए कि यहाँ डाका पड़ा है और अब लड़की उनके पास नहीं है।"

मैजिस्ट्रेट हँस पड़ा और बोला, "कौन ऐसा बेवकूफ होगा जो इतनी-सी बात के लिए हज़ारों का सामान बरबाद कर दे?"

दानसिंह बोला, "मैंने तो अपना शक बता दिया है।"

"हमने सुनकर उसको बेबुनियाद करार दिया है।"

सब लौट गए और दानसिंह भी नरही के अड्डे पर खड़े एक इक्के में बैठ अपने घर आ गया।

घर पहुँच उसने देखा कि उसकी पत्नी उसकी प्रतीक्षा में खिड़की में खड़ी है। दानसिंह भीतर गया तो वह कहने लगी, "बहुत विलम्ब कर दिया आपने तो?"

"हाँ, पुलिस की मदद मिलने में तीन घंटे लग गए और यहाँ पहुँचने पर एक घंटा और लग गया।"

"मैं तो यहाँ डेढ़ बजे पहुँच गई थी।"

"श्रीपति मिला?"

"हाँ, वह उनके साथ ही कानपुर गया है। बाबू साहब के अतिरिक्त कोई विश्वस्त और समझदार आदमी साथ जानेवाला नहीं था। वे आए नहीं। विन्ध्यवासिनी भी कुरेड़ी में ही रही है और नर्मदा मेरे साथ एक विश्वस्त नौकर कमलसिंह को साथ लेकर आई है। उन दोनों को पर्याप्त न समझकर मैं स्वयं उनके साथ जाने की सोच रही थी।"

"सीता के साथ कितने आदमी थे?"

"केवल एक था। वह मोटर में आया था। उसने पूछा, 'यह कुरेड़ी की गाड़ी है?'

"जब मैंने हाँ की तो उसने सीता को बाँह से पकड़ा और हमारी गाड़ी में धकेल दिया। फिर अपने टॉर्च का प्रकाश कर कहने लगा कि हम उसको पहचान लें कि वह सीता है, कोई अन्य तो नहीं? हमने जब कहा कि सीता ही है तो वह अपनी गाड़ी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवार हो दृष्टि से ओझल हो गया। मैं नर्मदा के साथ कानपुर जाने की सोच ही रही थी कि इतने में श्रीपति इक्के में पहुँच गया। उसने जब मुझको सीता के साथ जाते देखा तो कहने लगा मैं तो उसके लाए इक्के में बैठकर घर चली जाऊँ और वह उनके साथ जावेगा।

"मैं भी यही चाहती थी। उनको भेजकर मैं यहाँ चली आई हूँ।"

"हाँ, तुम्हारे जाने से तो श्रीपति का जाना ठीक है। इसपर भी यदि दुर्गानन्दन होता तो और अच्छा था।"

"वह तो अभी तक आया ही नहीं। न जाने कहाँ गया है!"

"खैर, एक बात तो हुई। तिवारीजी ने अपना काम बहुत खूबी से किया है।"

"दुर्गा का पता कैसे लगेगा?"

"अब तो प्रातःकाल ही कुछ किया जा सकेगा।"

पाँच घंटे आराम कर दानसिंह उठा तो उसको पता चला कि एक घंटे से तिवारी उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

तिवारी ने दानसिंह से पुलिस की पूर्ण बात सुनी तो उसने घटनास्थल की बात बता दी।

उसने कहा, "हमारे लोग वहाँ पहुँचे तो अब्दुल समद और उसके सब नौकर-चाकर भाग खड़े हुए। उन्होंने किसी प्रकार का हल्ला नहीं किया। सीता गहरी नींद में सो रही थी। उसको जगाया गया और कपड़े पहनकर चलने के लिए कहा तो वह पूछने लगी कि उसको कहाँ ले-जाया जा रहा है?

"हमारे कप्तान ने कुरेड़ी का नाम बता दिया। उसको विस्मय हुआ। जब उसको विश्वास दिलाया गया तो वह प्रसन्न हुई और कहने लगी कि उसके कुछ आभूषण हैं, उनको ले लिया जाए।

"हमारे आदमी ने ले लेने की स्वीकृति दी।

"वह उसको एक लोहे की सन्दूकची के पास ले गई। उसकी चाबी ढूँढी तो वह मिली नहीं। तब सन्दूकची को तोड़ डाला गया। आभूषण ले सीता मकान के बाहर निकल आई। उसने मोटर में सवार हो पूछा कि अब्दुल समद का क्या होगा?

"हमारे आदमी ने बताया कि वह भाग गया है।

"बस और कुछ बात नहीं हुई। सीता के चले जाने के बाद हमारे आदमियों ने सब सामान ऐसे तोड़-फोड़ दिया कि मानो वहाँ बहुत फसाद हुआ हो। हमारे आदमियों का विचार था कि इसे धन के लिए डाका समझा जाए। सीता के साथ इसका कोई सम्बन्ध न लगाया जाए।"

दानसिंह ने कहा, "मैंने तो यह सुझाव दिया है कि लड़की के मुहाफ़िज़ स्वयं ही सामान तोड़-फोड़ गए हैं जिससे उनको लड़की लेकर भाग जाना न समझा जाए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिवारी हँस पड़ा। उसने कहा, "दो सौ रुपया और चाहिए।"

९

रुपया दिया गया तो तिवारी चला गया। दानसिंह स्नानादि ने निवृत्त हो दुर्गानन्दन के विषय में विचार करने लगा। अब विचार करने पर उसकी समझ में आया कि वह पिछले तीन-चार दिन से बहुत ही चंचल और चिड़चिड़ा प्रतीत हो रहा था। पिता ने पुत्र से इसका कारण भी पूछा था, परन्तु दुर्गानन्दन ने कुछ नहीं बताया।

दानसिंह ने उसके सोने के कमरे की तलाशी ली। उसके पहनने के सब नए कपड़े लापता थे। उसका सूटकेस और बिस्तर भी ग़ायब था। चौकीदार से पूछा गया तो उसने बताया पिछले दिन बहुत सुबह छोटे बाबू बाज़ार से ताँगा पकड़कर लाए थे और उसपर सामान लाद चले गए थे। मैंने पूछा भी था कि वे कहाँ जा रहे हैं तो उन्होंने बताया था कि वे कुरेड़ी जा रहे हैं। कुरेड़ी का नाम सुनकर मैंने समझा कि आपको तो इसका ज्ञान होगा ही, इसलिए मैंने कुछ कहा नहीं।

दानसिंह प्रातःकाल का भोजन कर रहा था कि डिप्टी कमिश्नर का फोन आया। वह उठकर गया तो सुनने पर डिप्टी कमिश्नर ने कहा, "मैंने सुना है कि आप लड़की को छुड़ा नहीं सके?"

"जी! हमारे वहाँ पहुँचने से पहले ही वे लड़की को लेकर भाग गए प्रतीत होते हैं।"

"मगर वहाँ तो डाका पड़ा है?"

"लक्षण तो कुछ ऐसे ही मालूम हो रहे थे कि उनको पुलिस के आने की सूचना मिल गई थी और वे वहाँ पर सब उथल-पुथलकर भाग गए हैं।"

"ऐसा भला क्यों किया होगा?"

"इसलिए कि पुलिस ग़लत सुराग़ पर लग जावे और वे लड़की से फिर रुपया-पैसा पैदा कर सकें।"

"आप मुझसे मिल नहीं सकते क्या?"

"आप हुकुम करिए कि किस समय हाज़िर होऊँ?"

"सायंकाल चाय के वक्त मेरे बँगले पर आ जाइए।"

"मैं हाज़िर हो जाऊँगा।"

सायंकाल जब दानसिंह डिप्टी कमिश्नर के बँगले पर पहुँचा तो एक आदमी अंग्रेज़ी ढंग के बढ़िया कपड़े पहने उसके पास बैठा था। डिप्टी कमिश्नर ने दानसिंह को आया देख कहा, "आइए, आइए, बाबू साहब, आपकी ही प्रतीक्षा हो रही थी।"

दानसिंह ने प्रश्न-भरी दृष्टि से साथवाले आदमी की ओर देखा तो मिस्टर कौल ने कहा, "ये आपसे मुलाकात करने के लिए बैठे हैं।"

"आपका परिचय?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप है मिस्टर एम० सिंह। सीक्रेट इंटेलिजेंस आफिसर, एक्साइज़ डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।"

दानसिंह समझ गया कि यह वही महीपालसिंह होगा। परन्तु वह स्वयं उसके विषय में अपने जान जाने की बात बताना नहीं चाहता था। इसलिए उसने पूछ लिया, "हाँ, बताइए साहब ! मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ ?"

इसी समय डिप्टी कमिश्नर ने घंटी बजाई और बैरा चाय की ट्रे लेकर आ गया। डिप्टी कमिश्नर चाय बनाने लगा तो महीपाल ने कहा, "मैं आपसे सुलह करने के विचार से आया हूँ।"

"मगर मेरी आपसे लड़ाई है क्या ?"

"हाँ, हम दोनों की लड़ाई है।"

"कैसे ? मैं समझा नहीं ?"

"रात डाका आपने डलवाया था ?"

"कहाँ ?"

"अब्दुल समद के मकान में ?"

"किन्तु आपका उससे क्या सम्बन्ध है ?"

"वह मेरा नौकर था।"

"और उस लड़की सीता से आपका क्या सम्बन्ध है ?"

"वह मेरी बीवी है।"

"बीवी ? उसके साथ आपकी शादी किसने की है ?"

"यह तो मैं बाद में बताऊँगा। पहले आप यह मान जाइए कि वह डाका आपने डलवाया था।"

"श्रीमान जी ! यह बात बिलकुल ग़लत है। मैं रात के ग्यारह बजे से पुलिस के थाने में था।"

"यह तो केवल ऐलिवी (अन्यत्र होना) सिद्ध करने के लिए है। वास्तविकता यह है कि आपके आदमी मार-धाड़कर सीता का अपहरण करके ले गए हैं।"

"वास्तविकता यह नहीं है। मैं इस इलज़ाम में पकड़ा जाने के लिए प्रस्तुत हूँ। मगर साहब ! क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ ? मैं आप पर एक नाबालिग़ लड़की को अपनी बीवी बनाकर रखने का दावा करना चाहता हूँ।"

"अच्छा, यह बताइए कि तिवारी आपका आदमी नहीं है ?"

"कौन तिवारी ?"

"वह म्युनिसिपल कमिश्नर।"

"ओह, वह मेरा मित्र है।"

"यह डाका उसने डलवाया है।"

"तो ठीक है, उसको पकड़ लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो होगा ही। मगर मैं चाहता हूँ कि हम आपस में सुलह कर लें।"

"यह तो अब अदालत में जाने के बाद ही होगा। आप जानते हैं कि सीता मेरे साले की लड़की है। मैं उसको छुड़ाने में रुचि रखता हूँ। इसलिए आपके जुर्म की तलाफ़ी (प्रायश्चित्त) तो तभी हो सकती है जब आप सीता को मेरे घर पहुँचवा दें।"

"यही मैं चाहता हूँ। उसमें केवल शर्त यह है कि वयस्क होने पर इसका विवाह मेरे साथ किया जाए।"

"यह तो उसके माता-पिता ही वचन दे सकते हैं; हाँ, आप कहें तो मैं प्रयत्न कर सकता हूँ।"

इसपर महीपाल डिप्टी कमिश्नर का मुख देखने लगा। डिप्टी कमिश्नर ने स्वयं को बिलकुल बाहर रखने के लिए कह दिया, "मेरे पास यदि कोई अर्जी आई तो मैं उस पर कार्यवाही करूँगा। जब तक ऐसी कोई अर्ज़ी नहीं आती, आप घर में कुछ भी फैसला कर सकते हैं।

"देखिए बाबू साहब ! ये मेरे पास कचहरी में इसी मतलब की एक चिट्ठी लेकर आए थे कि इनकी बीवी शबनम का 'अग़वा' हुआ है और उस अग़वा करनेवालों में से आपका तथा तिवारी साहब का नाम बता रहे थे। मैंने आपकी कहानी इनको बताई तो ये सुलह करने के लिए कहने लगे। इसी कारण मैंने आपको चाय पर बुलाया है।"

"कौल साहब ! मैं आपका आभारी हूँ। मैं अब समझ रहा हूँ कि ये महीपालसिंह, सुपुत्र बाबू साहब छोटेलाल हैं। इन्होंने मेरे खिलाफ कुछ नहीं किया। इनके हुक्म से एक बटनसिंह नाम के चौकीदार का कत्ल हुआ था और इन्होंने बाबू साहब कुरेड़ी की लड़की सीता का अपहरण किया था।

"आपने एक दिन बताया था कि इनको वायसराय बहादुर से मुआफी मिल गई है तो ठीक है। मैं यह समाचार लड़की के माता-पिता के पास पहुँचा दूँगा। इसपर वे चाराजोई करेंगे। मगर उनको चाराजोई करने से रोका जा सकता है, यदि उनकी लड़की उनके घर पहुँचा दी जाए।"

"मगर ये तो कहते हैं कि लड़की आपके घर पहुँच गई है।"

"यह बात दुरुस्त नहीं है।"

"बताइए साहब !" कौल ने महीपाल से पूछा।

"ये इस प्रकार स्वीकार नहीं करेंगे। जब पुलिस इनको पकड़कर इनकी तीसरी डिग्री की पिटाई करेगी तो ये सब बक जावेंगे।"

इस समय तक दानसिंह चाय पी रहा था और महीपाल की धमकी सुन रहा था। दानसिंह ने महीपाल को डाँटने के स्थान पर कौल को डाँटना उचित समझा।

वह कहने लगा, "डिप्टी साहब ! मैं तो यह कह रहा हूँ कि आपको कसम दिलाकर इस धमकी के विषय में कोर्ट में पूछूँगा। तब आप झूठ बोलकर इस अपराधी को बचाएँगे क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो दुनिया का एक नियम बता रहा हूँ कि शत्रु का शत्रु मित्र होता है। यदि आप मुझसे ये प्रश्न अदालत में करेंगे तो मैं आपको अपना शत्रु समझूँगा। इस प्रकार के वार्तालाप का, जो दो मित्रों में हो रही है, अदालत में ले-जाना शत्रुता ही मानी जावेगी।

"ये महीपाल भी आपके शत्रु हैं। मैं इनका मित्र बन जाऊँगा। यह स्वाभाविक बात है।"

"हुज़ूर, मैंने उस दिन भी अर्ज़ किया था कि यह सिद्धान्त नहीं है। कारण यह कि यह सिद्धान्त प्रायः असत्य सिद्ध होता है। शत्रु का शत्रु भी शत्रु हो सकता है। केवल इतने मात्र से कोई मित्र नहीं हो सकता। मित्र होने के लिए साँझे विचार, समान आचार और समान स्वभाव होने आवश्यक हैं।

"मैं तो समझता हूँ कि आपमें और महीपाल में न तो स्वभाव में समानता है, न ही आचरण में समानता है। विचार तो समान हो सकते ही नहीं।"

डिप्टी कमिश्नर उसका मुख देखता रह गया। इस समय दानसिंह ने पूछ लिया, "स्वीकृति हो तो चलूँ?"

"क्यों महीपाल?"

"मेरे लिए वायसराय हिन्द के पास जाने के अलावा कोई उपाय नहीं रह जावेगा।"

"मेरा विचार है," कौल कहने लगा, "अभी इनको कुछ दिन विचार करने के लिए दो। मेरी राय है कि एक सप्ताह बाद आप दोनों फिर मेरी कोठी पर मिलें। तब तक आप दोनों अपने सम्बन्धियों से राय कर लें।"

"मुझे भय है कि ये कहीं पहला वार न कर दें। मैं तो रुकने के लिए तैयार हूँ।"

"देखिए जी!" दानसिंह ने कहा, "यदि आप सीता को कुरेड़ी पहुँचाने के लिए एक सप्ताह का समय चाहते हैं तो मैं यह समय उसके माता-पिता को कहकर दिलवा दूँगा। मगर इसपर भी यदि लड़की न आई तो मैं कह नहीं सकता। अब तो मैं इनका सरकारी ओहदा जान गया हूँ। वह मुझको उन्हें बताना पड़ेगा।"

१०

युद्धकाल में देहरावालों ने अपनी शक्ति से अधिक धन 'वार-फ़ण्ड' में दिया था। उनकी ज़मींदारी एक लाख रुपये से कम वसूली की थी और उन्होंने राजा रामपालसिंह के आग्रह पर सवा लाख चुका दिया था और महीपाल को सेना में भरती करवा दिया था।

जब युद्ध समाप्त हुआ तो महीपाल की रेजिमेंट पंजाब में थी और पंजाब में मार्शल लॉ के समय वह फिरोज़पुर की छावनी में नियुक्त था। तब वहाँ के मार्शल लॉ अधिकारी के अधीन महीपाल की रेजिमेंट वहाँ व्यवस्था करने के लिए नियुक्त की गई थी। उस व्यवस्था के नाम पर महीपाल ने अपनी राजभक्ति का ज्वलन्त प्रमाण दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। गाँव पुरुषों से रिक्त कर स्त्रियों का अपने सैनिकों से अपमान कराने में वह सबसे बाज़ी ले गया था। जब मार्शल लॉ हटा तो इसके ज़िले के मार्शल लॉ अधिकारी ने महीपाल को बहुत ही ओजस्वी भाषा में प्रमाणपत्र दिया था। गवर्नर पंजाब ने सैनिक अधिकारियों की प्रशंसा की थी तो उसमें लेफ्टिनेंट महीपाल का विशेष उल्लेख किया गया था।

जब महीपाल के विरुद्ध हत्या और अपहरण का मुकद्दमा चला तो वह लापता हो गया और उसके वारंट उसकी रेजिमेंट के जनरल मिचल स्मिथ के पास पहुँचे तो महीपाल अपने अफ़सर के बँगले में जा पहुँचा और उसको अपने पूर्व की ब्रिटिश राज्य के लिए सेवाएँ बताकर अपनी रक्षा की माँग करने लगा। उसने अपनी सत्य कथा और अपने मन के भाव बताए तो जनरल मिचल ने उसको एक सिफारिशी पत्र देकर कमाण्डर-इन-चीफ के पास भेज दिया। कमाण्डर-इन-चीफ ने उसकी सेवाओं से प्रभावित हो वायसराय से सिफ़ारिश कर दी। वायसराय ने इसको अपनी सत्यकथा लिखकर अपना दोष स्वीकार कर क्षमा-याचना के लिए अर्ज़ी करने को कहा।

महीपाल के ऐसा करने पर वायसराय ने उसको क्षमा कर दोषमुक्त कर दिया और कोर्ट का मुकद्दमा बन्द करने की आज्ञा दे दी।

इसके बाद उसने सेना की नौकरी छोड़ एक्साइज़ विभाग के सीक्रेट इंटेलिजेंस में नौकरी कर ली। इस विभाग में उसने कुछ सोने की तस्करी करनेवाले अति जटिल केस पकड़े और उनमें तस्करों को दण्ड दिलवाया। इससे उसकी इस विभाग में भी प्रतिष्ठा बढ़ गई।

इससे स्वयं को सुरक्षित समझ वह सीता से मेल-मुलाकात बढ़ाने लगा। तब तक वह नृत्य और संगीत में अच्छी प्रवीणता प्राप्त कर चुकी थी। उसके संरक्षक उसे वेश्या के कार्य के लिए तैयार करने लग गए थे।

महीपाल ने अभी तक विवाह नहीं किया था और वह लड़की के सज्ञान होने की प्रतीक्षा कर रहा था। तब उसका विचार सीता को अपनी रखैल के रूप में रखने का था।

महीपाल अभी बत्तीस वर्ष की आयु का था और वह चार वर्ष में सीता को अपने साथ ले-जाने लायक समझ रहा था। इन दिनों में वह लखनऊ में सोने की तस्करी करनेवाली एक मण्डली की जाँच के लिए आया हुआ था। सीता फ़ैज़ाबाद से निकाल लखनऊ में लाई जा चुकी थी। यहाँ सीता के नृत्य-संगीत के प्रदर्शन से वह डिप्टी कमिश्नर मिस्टर कौल के सम्पर्क में आया था। इसके बाद वह उसका हमप्याला हो गया।

सीता के विषय में महीपाल का अनुमान था कि वह दानसिंह के आदमियों ने चुराई है। फ़ैज़ाबाद में उसने श्रीपति को सीता का नाच देखने के लिए आते देखा था और उसी श्रीपति को उसने दानसिंह के घर में रहते भी देखा था।

डिप्टी कमिश्नर वैसे दानसिंह को इतना चतुर नहीं समझता था कि इतने आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकट्ठे कर इतनी शान्ति से डाका डाल सकता है। पूर्ण डाके का विवरण वह सीता के संरक्षकों के मुख से सुन चुका था।

तिवारी का नाम तो वैसे ही अनुमान से लिया गया था। तिवारी के विषय में यह विख्यात हो गया था कि नगर के हिन्दू गुंडे उसके अधीन कार्य करते हैं।

जब दानसिंह चुनौती दे चला गया तो कौल ने कहा, "यह आदमी तो पाँव पर पानी भी नहीं पड़ने देता।"

महीपाल कहने लगा, "मेरी राय यह है कि मैं इसको सोने की तस्करी के अभियोग में फँसा देता हूँ। साक्षी और प्रमाण बना लूँगा। इसमें कुछ सहायता आप कर दीजिए, बस काम बन जाएगा।"

"मुझसे क्या सहायता चाहते हो?"

"यही कि पकड़ने का हुक्म आते ही इसकी पूर्ण सम्पत्ति को मुहरबन्द कर उसपर रिसीवर बिठा दें, जिससे यह अपना मुकद्दमा भलीभाँति न लड़ सके।"

"रिसीवर तो बिठा दूँगा, परन्तु यहाँ असेम्बली में प्रश्न होने लगेंगे और गवर्नर सम्पत्ति छोड़ने के लिए विवश हो जाएगा।"

"मेरा अभियोग यह होगा कि इसकी पूर्ण सम्पत्ति ही तस्करी से बनी है।"

"मुझे सन्देह है कि तुम सिद्ध कर सकोगे।"

"एक बार तो हम इसको जेल की हवा खिला ही सकते हैं।"

"मेरा तो यह विचार है कि पहले तुम यह पता करो कि सीता है कहाँ? यदि वह कुरेड़ी में है तो गवर्नर से कहकर इनसे सुलह का यत्न किया जा सकता है।"

बात अनिश्चित ही रही। कौल डरता था कि कही कौंसिल में सवाल पूछे गए तो वह उत्तर नहीं दे सकेगा। महीपाल काम और क्रोधवश सीता को प्राप्त करने की लालसा कर रहा था।

आखिर उसको अवसर मिला। काकोरी डकैती के मुकद्दमे में इकबाली गवाह बनवारीलाल ने अपने बयान में बताया, "बिस्मिल साहब लखनऊ के एक रईस से कारतूस-पिस्तौल खरीदने के लिए रुपया लाया करते थे।"

बनवारीलाल उस रईस का नाम तो नहीं बता सका, परन्तु इतना ही कह सका था कि कदाचित् वह रईस लखनऊ लाटूश रोड पर रहता है।

एक खुफिया पुलिस के अफसर ने यह बात महीपाल को बताई थी। महीपाल उससे जाँच-पड़ताल के विषय में पूछताछ कर रहा था।

महीपाल ने लाटूश रोड का नाम सुना तो उसने दानसिंह का नाम बता दिया। कांग्रेस के आन्दोलन में दानसिंह छः मास का कारावास भोग चुका था। अन्य कोई रईस लाटूश रोड पर था नहीं जिसपर किसी प्रकार का सन्देह किया जा सके। अतः एक केस तैयार किया गया और दानसिंह को १८१८ के बंगाल रेग्युलेशन तीन के अधीन पकड़ने का यत्न आरम्भ हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन पुलिस का दस्ता आया और दानसिंह को पकड़कर ले गया। यद्यपि दानसिंह अब कांग्रेस में नहीं था, इसपर भी उसको एक नेशनलिस्ट माना जाता था और उसके पण्डित मोतीलाल के साथ के पुराने सम्बन्ध रंग लाए।

लखनऊ की यू० पी० कौंसिल में और दिल्ली की केन्द्रीय कौंसिल में प्रश्नों की बौछार आरम्भ हो गई। महीपाल के दुर्भाग्य से इस समय दोनों विधानसभाएँ बैठी हुई थीं।

पण्डित मोतीलाल ने वायसराय से भेंट की और वायसराय ने काकोरी केस के इकबाली गवाह के बयान मँगवाए। उनको पढ़ा और फिर लॉ मेम्बर से राय की।

इस सब प्रयत्न का पहला फल तो यह हुआ कि लखनऊ के डिप्टी कमिश्नर द्वारा दानसिंह की पूर्ण सम्पति के समापहरण करने की आज्ञा स्थगित हो गई। दूसरा परिणाम यह हुआ कि वायसराय ने जाँच-पड़ताल आरम्भ कर दी। लॉ मेम्बर की सम्मति प्राप्त करते-करते तीन मास लग गए।

लॉ मेम्बर की राय थी कि काकोरी केस के इकबाली गवाह के बयान का यह भाग किसी प्रकार भी सम्पुष्ट नहीं हुआ, इस कारण उसपर किसी प्रकार की कार्यवाही न्यायसंगत नहीं। साक्षी ने नाम भी नहीं लिया। रईस का अर्थ तो एक सरकारी उच्च पदाधिकारी भी हो सकता है। पुलिस ने काकोरी केस के किसी भी अभियुक्त का बाबू दानसिंह से साधारण सम्पर्क सिद्ध करने का भी यत्न नहीं किया।

परिणामस्वरूप १९२५ के सितम्बर में पकड़ा गया दानसिंह मार्च १९२६ में मुक्त कर दिया गया।

बाबू दानसिंह के पकड़े जाने के समाचार पर बाबू पद्मजीतसिंह पण्डित मोतीलाल के पास पहुँचा और उसने महीपाल के विषय में पूर्ण वृत्तान्त, जैसा अदालत में आ चुका था और जैसा दानसिंह ने डिप्टी कमिश्नर के मुख से सुना था, बता दिया। साथ ही सीता और श्रीपति के बम्बई में छिपकर रहने का कारण भी बता दिया।

अन्त में उसने कहा, "हमको भय है कि पुलिस की सहायता से लड़की का पुनः अपहरण कराने का यत्न किया जावेगा और हम ऐसे आदमी से स्वयं को सुरक्षित नहीं पाते जिसकी पहुँच वायसराय हिन्द तक हो।"

पण्डित मोतीलाल की सम्मति थी कि पहले दानसिंह की बात का निश्चय हो जाए, फिर यह दूसरा मामला हाथ में लिया जा सकता है। तब तक लड़की का किसीको भी पता न लगने दिया जाए।

ऐसा ही किया गया। श्रीपति, नर्मदा, सीता और एक विश्वस्त नौकर बम्बई में एक मकान भाड़े पर लेकर रहने लगे।

जब दानसिंह छूट गया तो वह प्रान्त के गवर्नर से मिला और पहली बार उसने महीपाल के एक घोर अपराधी होने की कथा सुनाई और उसके विपरीत चुपचाप मुकद्दमा वापस ले लेने की बात तथा उसकी एक उच्च सरकारी अधिकारयुक्त स्थान पर नियुक्ति का उल्लेख कर रक्षा माँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नर बहादुर ने कह दिया, "मैं इस विषय में कुछ नहीं कर सकता। यह विषय न्यायालय से सम्बन्ध रखता है। तुम न्यायालय का द्वार खटखटाओ।"

इसपर पद्मजीतसिंह ने नर्मदा की ओर से बम्बई के प्रेज़िडेंसी मैजिस्ट्रेट के न्यायालय में प्रार्थनापत्र दिलवा दिया।

प्रार्थना में पृथिवीपाल, श्रीपति, सीता तथा नर्मदा के नैनीताल से अपहरण और फिर नर्मदा और पृथिवीपाल के रायबरेली के पास छोड़ दिए जाने और श्रीपति के लखनऊ-स्थित देहरा की कोठी से भाग जाने की बात लिखकर नैनीताल के करीम बैरे और उसके साथियों के विपरीत मुकद्दमे तथा उनको दण्ड और महीपाल के वारंट की बाद लिख दी।

इसके साथ सीता का एक मियाँ अब्दुल समद के पास रहने और वहाँ उसको नाच-गाना सिखाने का प्रबन्ध और फिर फ़ैज़ाबाद से लखनऊ और वहाँ उसका महीपाल से मिलना और उसको अपनी भावी रखैल घोषित करने की बात का वर्णन कर दिया। लखनऊ के अब्दुल समद का एक रात को घबराहट में सीता को जगाना और मकान का सब सामान तोड़-फोड़कर उसे ले भागने का वर्णन था।

यह लिखा गया कि अब्दुल समद उसको लेकर कानपुर और कानपुर से बम्बई की गाड़ी की प्रतीक्षा में स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर प्रतीक्षा कर रहा था कि सीता भागने में सफल हो गई। स्टेशन के द्वार पर श्रीपति से भेंट की बात और दोनों का कुरेड़ी जाना, वहाँ उसको सुरक्षित न देख बम्बई में आकर रहने की बात लिखकर यह प्रार्थना की गई कि नर्मदा को अपने ननदोई से पता चला है कि महीपाल इस समय सरकारी अफ़सर है और बम्बई में कहीं रहता है। इस कारण उससे रक्षा की प्रार्थना की गई और उसके पिछले अपराधों पर दण्ड देने के लिए कहा गया।

नर्मदारानी ने अपने बयानों की पुष्टि में नैनीताल और फिर बरेली में मुकद्दमे का हवाला दिया। साथ ही बाबू पद्मजीतसिंह तथा बाबू दानसिंह के शपथ-पत्र प्रस्तुत किए गए। सीता और श्रीपति के बयान हुए। इसपर महीपाल के बिना ज़मानत के वारण्ट निकल गए।

महीपाल न्यायालय में उपस्थित हुआ और उसने अपना बयान दिया और उसके पक्ष में वायसराय द्वारा क्षमा किए जाने का प्रमाण-पत्र उपस्थित कर दिया।

इसपर सीता के वकील मिस्टर बोमनजी ने यह कहा कि यह क्षमा अवैधानिक है। साथ ही वह वायसराय बहादुर को धोखा देकर प्राप्त की गई है। इसमें एक नाबालिग़ लड़की के अपहरण की बात बताई नहीं गई है और अपहरण का वह अपराध क्षमा प्राप्त करने के बाद भी चालू रहा है।

मुकद्दमे में इतने कठिन प्रश्न उपस्थित हो गए कि इनके निर्णय में वर्षों लगनेवाले थे। इस कारण सवा लाख रुपये की ज़मानत पर महीपाल को स्वतन्त्र कर दिया गया और मुकद्दमा बम्बई में चलने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

सेंट मेरी गर्ल्ज़ स्कूल की मैट्रन को जब यह पता चला कि वह युवक जो त्रिवेणी को अमीनाबाद पार्क में मिला था, उसका भाई नहीं अपितु प्रेमी है तो उसे स्कूल की बदनामी के भय से त्रिवेणी के माता-पिता को लिख दिया, "हिन्दुस्तानी रीति-रिवाज के अनुसार उनकी लड़की विवाह के योग्य हो गई है। अतः वह अब स्कूल की कुमारी कन्याओं में रखने योग्य नहीं। उसको घर ले जाइए और उसके विवाह का प्रबन्ध कर दीजिए।"

इसपर भी ऐंग्लो-इंडियन होने के नाते उसकी सहानुभूति प्रेमियों के लिए थी। उसने दुर्गानन्दन को बुलाकर समझा दिया था कि उसको विवाह के लिए अपने बड़ों द्वारा यत्न करना चाहिए। वह नहीं जानती थी कि दोनों परिवारों में इतना वैमनस्य बढ़ चुका है कि इस प्रकार की बात सम्भव नहीं। दुर्गानन्दन ने मैट्रन को अपनी वास्तविक स्थिति के ज्ञान कराने में लाभ नहीं समझा। वह चुपचाप वहाँ से चला आया। उसने त्रिवेणी को देहरा के पते पर एक पत्र भी डाला परन्तु उसका कोई उत्तर नहीं आया।

त्रिवेणी की माँ लड़की को देहरा ले-जाने के लिए आई। जब त्रिवेणी लखनऊ से चलने लगी तो उसकी माँ ने देखा कि त्रिवेणी की पुस्तकों और बिस्तरे के अतिरिक्त भी एक सूटकेस और एक बिस्तरा उसके पास है। इसपर उसने पूछ लिया, "ये दो बिस्तरे और सूटकेस कैसे हैं?"

"माँ! ये मेरी एक सहेली के हैं। वह कभी देहरा आकर इनको ले जाएगी।"

इससे माँ का मुख बन्द हो गया। परन्तु समाधान नहीं हुआ। उसके सन्देह का कारण थी मैट्रन की चिट्ठी। देहरा चलकर उसने पुनः बात चलाई।

"त्रिवेणी! यह तुम जिस लड़की का बिस्तरा और सूटकेस उठा लाई हो, वह कहाँ रहती है?"

"माँ! वह आ जाएगी, चिन्ता की बात नहीं।"

"परन्तु यह सामान चोरी का भी तो हो सकता है?"

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है।"

त्रिवेणी टालमटोल करती रही, परन्तु माँ को शान्ति नहीं हुई। एक दिन माँ ने त्रिवेणी की अनुपस्थिति में सामान देखने का निश्चय कर लिया।

सूटकेस को ताला लगा था। बिस्तर सुगमता से खुल गया। बिस्तर के वस्त्रों के अतिरिक्त उसने देखा कि उसमें मर्दाना स्लीपिंग सूट और होलडाल की जेबों में नेकटाई-कॉलर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ को विश्वास हो गया कि यह बिस्तर किसी लड़की का नहीं है। यह किसी पुरुष का है। यह देखते ही माँ को मैट्रन के पत्र का अर्थ समझ आ गया।

अतः उसका सूटकेस खोलकर देखने का विचार बन गया। उसने घर की चाबियाँ सूटकेस के ताले को खोलने के लिए प्रयोग कीं, एक चाबी लग गई। सामान देखकर तो बात स्पष्ट हो गई। वह बिस्तर और सूटकेस किसी लड़के का था। उसमें कमीज़ें, पतलूनें और लड़कों के पहनने के अन्य वस्त्र तथा उपयोग की वस्तुएँ थीं। सबसे बड़ी बात यह थी कि सूटों के नीचे एक बड़े रूमाल में छोटे-बड़े नोट बँधे हुए थे। माँ ने उनको गिना तो पूरे ग्यारह हज़ार एक सौ पचपन रुपये निकले।

त्रिवेणी की माँ राधा के मन में विचार आया कि लड़की ने किसीसे सम्बन्ध बना लिया है और वह स्कूल से भागने का प्रबन्ध कर चुकी थी। मैट्रन ने ठीक समय पर ही बुलाकर उसकी लड़की को न जाने किस मुसीबत में पड़ने से बचा लिया है।

वह सूटकेस और बिस्तर का सामान खोल सामने रखे विचार ही कर रही थी कि त्रिवेणी आ गई। माँ के सब-कुछ जान लेने का विचार आते ही पहले तो वह घबराई, फिर साहस कर माँ को सब-कुछ बता देने के लिए मन को तैयार कर लिया। उसने कहा, "माँ, यह सब किसलिए देख रही हो?"

"तुमसे पूछने के लिए कि यह किसका है।"

"माँ! मैंने तुम्हें बताया तो था कि अपनी एक सहेली का है।"

"सहेली? यह पतलून, कोट, टाई, कॉलर, ये सब तुम्हारी सहेली पहनती है? बकवास बन्द करो, और बताओ यह सब तुम्हारे पास कहाँ से आए हैं या फिर यह कहाँ से पा गई हो?" उसने कपड़ों के नीचे रूमाल में बँधे नोटों का बण्डल दिखा दिया।

"माँ! ये भी अपने ही हैं। जैसे तुम्हारे पास पिताजी के दिए हुए रुपये अपने ही होते हैं, इसी प्रकार ये हैं।"

"तो तुमने विवाह कर लिया है और ये तुम्हारे पति के हैं?"

"नहीं माँ! विवाह नहीं किया। कर नहीं सकती थी। मैं अभी सोलह वर्ष की हूँ। कहते थे कि जब मैं अठारह वर्ष की हो जाऊँगी तब विवाह होगा।"

"और उससे तुम कहाँ मिलती रही हो?"

"पर माँ! नाराज़ क्यों हो रही हो? धीरज से सुनोगी तो सब सुना दूँगी।"

"सुना देती हूँ की बच्ची! बैठ, बता कौन है वह?"

"ये चाचा महीपाल के एक मित्र हैं। हमको नैनीताल में मिले थे और फिर लखनऊ में स्कूल में मिलने के लिए आया करते थे। हम प्रायः गोमती के किनारे घूमते हुए बातचीत करते थे।"

"तो उसने तुम्हें विवाह के लिए कहा और फिर यह रुपया दिखाकर लालच दिया। यही बात है न?"

"माँ, तुम सुनती तो हो नहीं। सब बातें बताती हूँ। एक दिन उन्होंने नैनीताल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा था कि उन्होंने चाचाजी से विवाह की बात कही है और चाचाजी ने कहा था कि वे अपनी माँजी को तुम्हारे पास भेंजेगे तो विवाह की बातचीत हो जावेगी। बाद में जब वे मुझे लखनऊ में मिले तो मैंने पूछा था कि उन्होंने अपनी माताजी को क्यों नहीं भेजा तो उन्होंने बताया कि उनके परिवार और हमारे परिवार में चाचाजी की करतूत के कारण घोर वैमनस्य उत्पन्न हो गया है। इस कारण वे माताजी को नहीं भेंज सके।

"उनकी मामा और मामी की लड़की तथा लड़के का चाचाजी ने बलपूर्वक अपहरण किया था। उसमें एक चौकीदार की हत्या भी हो गई थी। अब चाचाजी लापता तो हैं, परन्तु अभी भी उनके अधिकार में उनके मामा की लड़की है। इससे वे अपनी माँ को तुम्हारे पास नहीं भेज सके।

"माँ! इसपर भी मैं उनसे विवाह की इच्छा करती हूँ। हम परस्पर मिलते थे और विवाह की प्रतीक्षा करते थे।

"एक दिन वे सूटकेस और बिस्तर लेकर मुझे भगा ले-जाने के लिए आए, परन्तु हम भाग नहीं सके। कारण विदित नहीं। वे उस स्थान पर पहुँच नहीं सके, जहाँ आने को कह गए थे। उनका बिस्तर और सूटकेस मेरे पास ही रह गया।

"मेरे उनसे प्रेम की बात मैट्रन को पता चल गई थी और उसने पुनः उन्हें मुझसे मिलने नहीं दिया। तुम मुझको यहाँ लाने लगी तो मैं उनकी यह अमानत भी यहाँ ले आई।"

"अब इसको अपने पास रखकर क्या करोगी?"

"उनको वापस कर दूँगी।"

"कब और किस प्रकार?"

"विवाह तो होगा ही, तब यह सब उनको दे दूँगी।"

"तुम्हारा विवाह उसके साथ नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"क्यों की बच्ची!" माँ का क्रोध सीमा पार कर गया था। उसने लड़की को एक चपत जड़ दी।

त्रिवेणी को कभी माता-पिता से अथवा स्कूल में भी मार नहीं पड़ी थी, इससे जीवन में पहली बार पीटे जाने से वह भौंचक्की हो माँ का मुख देखती रह गई। मन के आवेश से उसकी आँखों में अश्रु भर आए, इसपर भी वह चुपचाप माँ के सामने बैठी रही।

माँ ने सूटकेस का सब सामान उसमें भर और रुपये भी उसीमें पटक सूटकेस को बन्द कर दिया। फिर उसने होलडाल बन्द किया और सारा सामान उठाकर सामान रखनेवाली कोठरी में बन्द कर दिया।

फिर वह त्रिवेणी से बोली, "यदि इस विषय में एक भी शब्द तुमने किसीसे कहा और बात तुम्हारे बाबा के पास पहुँची तो वे तुमको गोली मार देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो घर-भर को बहुत प्रसन्नता होगी?" त्रिवेणी जो चुपचाप माँ को सामान बाँधते और सूटकेस इत्यादि बन्द करते देख रही थी, माँ से पूछने लगी।

"मालूम होता है बहुत बातें करना सीख गई हो। हाँ, बदमाश लड़की को मारकर घर-भर पवित्र हो जावेगा और प्रसन्न जावेगा।"

"तो माँ, जल्दी करो! बुलाओ बाबाजी को! चाचा तो हत्या कर भागे फिरते हैं और बाबा भी उनके साथ ही जावेंगे।"

राधा अवाक् मुख देखती रह गई। फिर बोली, "उठो, चलो अपने कमरे में। मैं एक सप्ताह के भीतर ही तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर देती हूँ।"

"माँ! तुम कर नहीं सकोगी। 'मैरिजेज़ आर अरेन्ज्ड इन हैवन'। कुछ समझी हो माँ?"

माँ अंग्रेज़ी नहीं पढ़ी थी। वह टुकर-टुकर लड़की का मुख देखती रह गई। त्रिवेणी ने यह बात स्कूल के गिरजाघर में पादरी को अपने सरमन में कहते सुनी थी। उसने माँ को बात न समझते हुए देखा तो उक्त वाक्य का अर्थ बता दिया।

"माँ! तुम विवाह नहीं कर सकोगी। विवाह तो ईश्वर के घर में निश्चय होकर आते हैं।"

"परन्तु यह कौन कहता है कि इस लफंगे के साथ तुम्हारा विवाह परमात्मा ने निश्चय किया है?"

"मेरा मन कहता है। और करके देख लो, तुम्हारे किए कुछ होगा नहीं।"

माँ ने कहा, "देख लूँगी। मगर याद रखना, तुमने इस बदमाश के बच्चे की बात किसीके सामने की तो तुम्हारी टाँगें चीर डालूँगी।"

त्रिवेणी के आँसू अब सूख गए थे। वह उठी और अपने सोने के कमरे में चली गई।

अब त्रिवेणी के विवाह की बातचीत होने लगी। पहले तो त्रिवेणी के पिता शिवलालसिंह ने कहा, "लड़की की आयु अभी सोलह वर्ष की है। अभी दो वर्ष तक इसका विवाह नहीं होना चाहिए।" पर लड़की की दादी नहीं मानी तो पिता ने लड़का ढूँढने की बात कहनी आरम्भ कर दी। इसपर भी राधा ने बार-बार कहना जारी रखा। बात छोटेलाल तक पहुँची। उसने अपने लड़के को बुलाकर पूछा, "क्यों जी, क्या बात है, त्रिवेणी के विवाह के लिए इतना हो-हल्ला क्यों किया जा रहा है?"

"पिताजी! उसकी माँ कह तो मुझको भी रही है। मैंने उसको लड़का ढूँढने की बात कह दी है।"

"शिव! आज तुम्हारी माँ ने कहा है कि बहू के मायके में एक लड़का है। मिरज़ापुर के राजा त्रिलोचनसिंह का लड़का सुमनसिंह इस समय सोलह वर्ष का कुमार है। वह ज़मींदारी का वारिस है और ज़मींदारी दस लाख की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उस लड़के को देखा है, परन्तु वह परिवार बहुत ही अभिमानियों का है। ज़रा-सी बात पर सम्बन्धियों की पगड़ी उछाल देते हैं।"

"तुम जाओ और लड़के के बाप से लेन-देन की बात कर आओ।"

"माँ को साथ भेज दीजिए।"

"हाँ-हाँ, माँ को ले जाओ और बहू को भी।"

जब शिवलाल ने राधा से बात की तो उसने कह दिया, "आप माँ को साथ ले जाइए, मैं नहीं जाऊँगी।"

"क्यों?"

"मैं लड़की को अकेली छोड़कर नहीं जाना चाहती।"

"क्या मतलब?"

"मुझको भय है कि वह भाग जावेगी।"

"क्यों भाग जावेगी?"

"वह किसी अपने मनपसन्द लड़के से विवाह करेगी।"

"तो उसको भी साथ ले चलो। आखिर ईसाइयों के स्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ी है। वह भी देखकर पसन्द कर सकती है।"

इसपर राधा ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कह दिया, "आपने अपने भाई के साथ उसको नैनीताल भेजा था न! और जैसे वह अपनी बीवी पसन्द कर आया था वैसे ही यह लड़की अपना पति पसन्द कर आई है। वह भी बड़ों के पद-चिह्नों पर चलने लगी है।"

शिवलाल एक क्षण के लिए बितर-बितर मुख देखने लग गया। फिर कुछ विचारकर बोला, "वह कौन है?"

"कुरेड़ीवालों का भांजा है।"

"उसको बता दो, यह विवाह नहीं हो सकेगा।"

"बताया है, परन्तु वह कहती है कि ईश्वर ने उसका विवाह निश्चित किया हुआ है। उसीसे होगा।"

शिवलाल हँस पड़ा। उसने कहा, "अच्छा, तुम उसकी रखवाली करो और मैं मिरज़ापुर जा रहा हूँ। देखें, ईश्वर को क्या मंजूर है!"

२

छोटेलाल के तीन लड़के थे। सबसे बड़ा शिवलाल था, मँझला कृष्णलाल और सबसे छोटा महीपाल। कृष्णलाल तो घर-भर से रूठकर कलकत्ता चला गया था। जाते समय वह अपनी पत्नी और बच्चों को भी साथ ही ले गया था। सुना गया था कि वह वहाँ पर कोई दुकान कर रहा है और बहुत मज़े में है।

जब महीपाल की सगाई विन्ध्यवासिनी देवी से टूटी थी, उस समय कृष्णलाल घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ही था। उसने और महीपाल ने विजयबहादुर के घर पर डाका डाला था, और विन्ध्यवासिनी के अपहरण के लिए कुरेड़ी पर भी धावा बोला था। इसपर दोनों भाई इलाहाबाद में पकड़े गए थे। उनको छुड़ाने में ज़मींदारी का बीस हजार रुपया व्यय हो गया था। इससे बड़ा लड़का जो अपने पिता और भाइयों के उजड्ड व्यवहार से ज़मींदारी पर ऋण बढ़ रहा देख रहा था, वह उनसे रुष्ट था।

कृष्णलाल भी कुछ दिन ही हवालात में रहकर परिवार में रहने का विचार छोड़ कलकत्ता जाने की तैयारी करने लगा था। उसने अपने बड़े भाई से कहा और उससे कुछ सहायता ले तथा अपने श्वसुर से सहायता ले कलकत्ता में शृंगार के सामान की दुकान खोल बैठा और सदा के लिए घर को नमस्कार करके चल दिया।

शिवलाल भी अपने पिता और महीपाल के व्यवहार से घर का कल्याण नहीं मानता था। पहले तो महीपाल सेना में भरती हो उन्नति करता समझ आता था, परन्तु नैनीताल की घटना से तो शिवलाल ने भी महीपाल को परिवार से पृथक् करने का विचार उपस्थित कर दिया। पिता नहीं माना और निरन्तर महीपाल की आर्थिक तथा नैतिक सहायता करता रहा।

इस समय तक महीपाल पुनः अपनी टाँगों पर खड़ा हो गया प्रतीत होता था। यद्यपि सीता का प्रश्न अभी सिर पर था, परन्तु बात पुरानी होती जाती थी और यह समझा जाने लगा था कि समय पर सीता महीपाल की पत्नी बन जावेगी।

शिवलाल तो उस समय भी झगड़े की आशंका करता था, परन्तु सब ओर शान्ति देख चुप था। अब त्रिवेणी का एक नया झगड़ा उपस्थित हो गया था। उसने दुर्गानन्दन को देखा नहीं था। वह दुर्गानन्दन के पिता दानसिंह के विषय में भी अधिक जानता नहीं था। इसपर भी अपनी पत्नी से सुनकर कि लड़की उसको प्रेम करने लगी है, उसके मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ कि उस लड़के की जाँच क्यों न की जाए?

परन्तु इस समय तो वह पिता के कहने पर मिरज़ापुर जा रहा था। यद्यपि उस लड़के और उसके पिता को वह अभिमान का पुंज समझता था, परन्तु पिता ने कह दिया था कि उनके अभिमान को धन के बल पर मोम किया जा सकता है। शिवलाल इस विधि को ठीक नहीं समझता था, किन्तु इसपर भी वह पिता की बात को टाल नहीं सका।

शिवलाल माँ के साथ मिरज़ापुर गया। वहाँ उसने माँ को सुमनसिंह को दिखाया। लड़का साधारण रूपरेखा और साधारण बुद्धि का दिखाई देता था। लड़के के पिता राजा त्रिलोचनसिंह से भेंट हुई और बातचीत हुई। शिवलाल की माँ स्त्रियों से मिलने के लिए चली गई। सबसे बातचीत कर दोनों मुख लटकाए हुए देहरा आ गए।

बाबू छोटेलाल ने कारण पूछा तो उसने बता दिया, "पिताजी ! मैंने तो कहा था कि वे लोग बड़े अभिमानी हैं। पहले तो मेरी बात सुन नाक-भौं चढ़ाते रहे। आखिर बोले, 'बेटा ! तुम कहाँ से आए हो ? तुमको कहीं देखा तो है, परन्तु याद नहीं आ रहा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उनको अपना परिचय दिया तो कहने लगे, 'तो तुम छोटेलाल के लड़के हो और उनकी पोती की बात कर रहे हो?'

"जी, मेरा निवेदन है कि आप अपना आशीर्वाद का हाथ लड़की के सिर पर रखिए।'

"इसपर वे गम्भीर हो गए और कितनी ही देर तक चुपचाप बैठे मुख देखते रहे। फिर फ़रमाने लगे, 'देख लो, बराबरवालों से सम्बन्ध करना चाहिए। यदि सामर्थ्य हो तो बात आगे चल सकती है।'

"आप आज्ञा करिए, हम यथाशक्ति सेवा करने के लिए तैयार हैं।

"इसपर कहने लगे, 'सवा लाख टीके के समय और पाँच लाख नकद सोना अथवा चाँदी के विवाह के अवसर पर। फिर इतना ही गौने के साथ। मुझको भय है कि कहीं ज़मींदारी ही न बिक जाए।'

"मैं निरुत्तर बैठा रह गया। इसपर उन्होंने सामान्य रूप में आकाश की ओर देखते हुए कह दिया, 'इतने कुछ का तो प्रस्ताव बस्तरवालों की ओर से आ चुका है। यह तो छोटेलाल से पूर्व-परिचय के कारण ही है कि कुछ अधिक नहीं माँगा जा रहा।'

"मैंने उठकर झुकके नमस्कार किया और कह दिया, 'महाराज! आपकी कृपा को मैं अनुभव करता हूँ। अपने पिताजी से आपकी इतनी उदारता का परिचय दे दूँगा और उनके निर्णय के विषय में एक सप्ताह के भीतर निवेदन कर दूँगा। आप बुजुर्गों की कृपा बनी रहनी चाहिए। लेन-देन तो इस संसार की बातें हैं।'

"इतना कह मैंने माताजी को भीतर से बुलवा लिया। भीतर जो कुछ हुआ, उसका वृत्तान्त वे स्वयं बता देंगी।"

"तो एक प्रकार से तुम उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर आए हो?"

"पिताजी! प्रस्ताव तो हमारा था। हाँ, उस प्रस्ताव की स्वीकृति का मूल्य देने से इन्कार कर आया हूँ। यदि वे समझदार होंगे तो समझ जावेंगे। मुझे भय है कि अभिमानी जीव बुद्धिहीन भी हुआ करते हैं।"

"तो अब तुम्हारी बहू क्या कहती है?"

"उससे अभी पूछा नहीं। अब भीतर जाकर उसको सारा वृत्तान्त सुना देता हूँ। उसके बाद उसके मन की प्रतिक्रिया आपको बता दूँगा।"

"देखो शिव! लड़की अभी सोलह वर्ष की है। कुछ अधिक चिन्ता की बात नहीं। भगवान उसका घर बना देगा।"

राधा से बात हुई तो वह गम्भीर हो बोली, "और यह देखो, यह उसके निर्वाचित का पत्र आया है।"

चिट्ठी देखके शिवलाल ने कहा, "यह तो किसी दुर्गारानी की है।"

"कुरेड़ीवालों के भांजे का नाम दुर्गानन्दनसिंह है। मैंने माताजी से पता किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था।"

यह सुन शिवलाल हँस पड़ा। उसने पूछा, "त्रिवेणी को यह पत्र दिखाया है?"

"नहीं, मैं चाहती हूँ कि वह इसको भूल जावे।"

"तुम ऐसा क्यों चाहती हो?"

इस प्रश्न से राधा आश्चर्य से पति का मुख देखने लगी। इसपर शिवलाल ने पूछा, "तुमने लड़के को देखा है?"

"नहीं, मैं कैसे देख सकती थी? कभी कुरेड़ी या लखनऊ भी तो नहीं गई!"

"मैं समझता हूँ कि मैं पहले लड़के को देख लूँ, फिर बात करूँगा।"

"पहले अपने माता-पिता से बात कर लीजिए।"

"वह मैं बाद में करूँगा। यदि लड़का अच्छा हुआ तो फिर पिताजी से राय कर लूँगा।"

"मैं समझती हूँ कि उसके माता-पिता राज़ी नहीं होंगे। महीपाल ने उनके मन में भी विष घोल दिया होगा।"

शिवलाल चुप रहा। उसके मस्तिष्क को पाँच लाख विवाह पर और उतने ही गौने के समय की बात परेशान कर रही थी। वह मन में विचार कर रहा था कि त्रिवेणी-जैसी सुन्दर और समझदार लड़की के विवाह के अवसर पर दस लाख! तौबा-तौबा!

एक दिन वह लखनऊ गया और दानसिंह के मकान के आसपास चक्कर काटने लगा। वह देखना चाहता था कि उसके मकान में कौन-कौन आते-जाते हैं। दानसिंह के लखनऊ में एक सौ से अधिक मकान थे। उनके किरायेदारों के आने-जाने का ताँता लगा रहता था। इस कारण वह जान नहीं सका कि घर के आदमी कौन हैं और बाहर के कौन। उसने दानसिंह को तो दूर से देखा था, परन्तु उसका विश्वास था कि दानसिंह उसको पहचान नहीं सकेगा।

कई दिन तक वह समय-समय पर दानसिंह के मकान के बाहर घूमने पर भी दुर्गानन्दन को पहचान नहीं सका। एक दिन बिस्मिल आया था और बाबू साहब को बताने लगा, "आपके मकान के बाहर एक सन्देहात्मक व्यक्ति घूमता दिखाई देने लगा है।"

"क्या सन्देह करते हो उसके विषय में?"

"यही कि वह खुफिया पुलिस का आदमी है।"

दानसिंह ने परेशानी अनुभव करते हुए पूछा, "वह कहाँ खड़ा रहता है?"

"किसी एक स्थान पर नहीं। इसपर भी उसकी दृष्टि आपके मकान के द्वार पर लगी रहती है।"

"मैं उससे मिलना चाहता हूँ। उसका कुछ हुलिया बताओ!"

"यदि आप ऊपर की मंज़िल पर चढ़कर खिड़की से देखेंगे तो वह अभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने पेड़ के नीचे खड़ा दिखाई देगा।"

"अच्छी बात है, तुम ज़रा यहीं ठहरो।" दानसिंह भागा-भागा ऊपर की छत पर गया। अपने सोने के कमरे की खिड़की के परदे की ओट में खड़े हो एक सफेद पोशाक में शिवलाल को खड़ा देख आया। वह था तो देहातियों की-सी पोशाक में, परन्तु उसके वस्त्र धोबी से धुले प्रतीत होते थे। दानसिंह की दृष्टि उसके जूते पर गई तो वह समझ गया कि यह कोई रईसज़ादा है। उसको सन्देह हुआ कि वह कहीं कोई दुर्गानन्दन का मित्र न हो।

दानसिंह ने नीचे आकर कहा, "बिस्मिलजी! मुझे तो वह कोई आवारा युवक प्रतीत होता है। सम्भवतया वह कोई दुर्गानन्दन का मित्र होगा। इसपर भी मैं नहीं चाहता कि वह तुम्हारे विषय में कुछ जान सके। तुम चौकीदार की कोठरी में चले जाओ। मैं अभी जाकर उसको भीतर ले आता हूँ। जब वह बैठक में चला जाए तो तुम खिसक जाना।"

दानसिंह ने कपड़े पहने, मानो वह कहीं बाहर जा रहा हो। बिस्मिल को चौकीदार की कोठरी में भेज वह हाथ में छड़ी ले घर से निकल पड़ा और सड़क के किनारे खड़ा हो ऊपर-नीचे देखने लगा, मानो कोई सवारी देख रहा हो। वहाँ खड़ा वह शिवलाल के पास सड़क के किनारे मकान के सामने पेड़ के नीचे जा खड़ा हुआ और एक-दो मिनट तक सड़क के दोनों ओर देखता रहा। फिर एकाएक वह शिवलाल से पूछने लगा, "क्षमा करना! मैं कई दिन से आपको इस सड़क पर देख रहा हूँ। आप कोई नये यहाँ आए प्रतीत होते हैं। किस मकान में ठहरे हैं?"

"मैं रहता तो दूसरे स्थान पर हूँ।" शिवलाल इस प्रकार के प्रश्न की आशा नहीं करता था, इस कारण वह कोई उत्तर नहीं बना सका।

"तो आप किसीको ढूँढ रहे हैं?"

"जी, कुछ बात ऐसी ही है।"

"वह यहाँ सड़क के किसी मकान में ही रहता है क्या?"

"जी नहीं।" शिवलाल सतर्क हो गया। वह समझ गया था कि वह पहले ही ज़रूरत से अधिक बता गया है। उसने बात बनाने के लिए कह दिया, "एक दिन मैंने उस आदमी को इस सड़क पर कई बार आते-जाते देखा था। वह आपके घर में भी प्रायः जाया करता है।"

"ओह! आप तो कोई रईस प्रतीत होते हैं।"

"आज रईसी कहाँ है साहब!"

"अगर हमारे घर में वह आने-जानेवाला है तो आप भीतर आ जाइए। सड़क पर प्रतीक्षा करने से तो यह ज़्यादा अच्छा रहेगा।"

शिवलाल ने विचार किया और कहने लगा, "मगर आप तो कहीं बाहर जा रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, मगर किसी काम से नहीं। ऐसे ही घूमने की तबीयत कर आई थी। आइए, मैं अब नहीं जाऊँगा।"

शिवलाल का विचार था कि घर में तो लड़के को बहुत अच्छी तरह देखा जा सकेगा। इसपर भी वह अभी अपना परिचय देने का विचार नहीं रखता था।

वे भीतर बैठक में गए तो बिस्मिल चौकीदार की कोठी से निकलकर बाहर चला गया। दानसिंह ने चौकीदार को बुलाकर कहा, "जाओ, ऊपर जाकर माताजी से चाय बनवाकर ले आओ।"

"आप यह तकलीफ क्यों कर रहे हैं ?"

"मैं आपका घर के सब प्राणियों से परिचय करा देना चाहता हूँ, जिससे आप कभी मेरी अनुपस्थिति में भी आएँ तो निश्चिन्त हो उस प्राणी की प्रतीक्षा कर सकें जिससे आप मिलना चाहते हैं।"

शिवलाल को सन्देह होने लगा था कि दानसिंह उसको पहचान गया है। इसपर भी उसने निश्चय कर लिया था कि वह अपने-आप न तो अनपा नाम-धाम बताएगा और न ही अपने वहाँ आने का प्रयोजन।

जब चपरासी चाय के लिए कहने चला गया तो दानसिंह ने पूछ लिया, "क्या मैं आपका शुभनाम जान सकता हूँ ?"

"मेरे माता-पिता मुझे कमलापति कहा करते हैं।"

"अच्छा कमलापतिजी ! आप इत्मीनान से इस बैठक में बैठकर कभी भी अपने शिकार की प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

दोनों हँसने लगे। दानसिंह ने आगे कहा, "मैं अपने चौकीदार से आपका परिचय करा दूँगा और अपने लड़के से भी। मेरी पत्नी तो आपको स्वयमेव ही देख लेगी। आपके आने-जाने की बात मैं उनसे कह रखूँगा। यों तो यह बैठक मुझसे मिलने आनेवालों के लिए सदा खुली रहती है, क्योंकि मैं कारोबारी आदमी हूँ और यह बैठक एक पब्लिक प्लेस है।"

दानसिंह फिर हँसा। इसपर शिवलाल केवल मुस्कराया ही। वह विचार कर रहा था कि दानसिंह का अगला प्रश्न उसके निवास-स्थान के विषय में होगा। और वह एक नकली पता बताने के लिए विचार करने लगा था।

चाय लेकर दुर्गानन्दन ही आया, "ओह ! तो तुम आ गए हो ? बैठो दुर्गा ! अपने लिए भी चाय बना लो।"

दुर्गानन्दन बैठकर चाय बनाने लगा तो दानसिंह ने कह दिया, "दुर्गा ! ये मेरे एक नये मित्र हैं। नाम है कमलापतिजी ! ये यहाँ किसीकी खोज में आते हैं। मैंने इनसे कहा है कि मेरे यहाँ तो सैकड़ों परिचित-अपरिचित आते रहते हैं। ये भी शौक से यहाँ बैठकर प्रतीक्षा करें।"

दुर्गानन्दन ने छद्म कमलापति को हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। कमलापति बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान से दुर्गानन्दन को देख रहा था।

चाय बनी। पीकर दानसिंह ने कहा, "अब यह लड़का यहाँ रहेगा। यदि कभी यह न भी हो तो मैं चौकीदार से कह रखूँगा। आप यहाँ आकर बैठ सकते हैं। अब इजाज़त हो तो मैं घूमने जाऊँ?"

"हाँ, हाँ। आप जाइए। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।"

३

दानसिंह के चले जाने पर शिवलाल ने दुर्गानन्दन से पूछा, "आप किस श्रेणी में पढ़ते हैं?"

"मैंने पढ़ना छोड़ दिया है। अब मैं अपनी एस्टेट का प्रबन्ध देखता हूँ। पिताजी के कार्य में उनका हाथ बँटाता हूँ।"

"कहीं विवाह इत्यादि का प्रबन्ध हो गया है क्या?"

"जी, अभी नहीं। माताजी कहती हैं कि पच्चीस वर्ष की आयु से पहले नहीं होगा। पिताजी कट्टर आर्यसमाजी हैं।"

"पर इक्कीस वर्ष की आयु के बाद तो आप स्वयं भी विवाह कर सकते हैं?"

"हाँ, माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए कोई भारी प्रयोजन हो, तभी तो न?"

"ओह!" शिवलाल ने विषय बदलकर कहा, "यदि विवाह ही नहीं करना था तो फिर पढ़ाई क्यों छोड़ दी? कुछ अक्ल में तरक्की हो जाती?"

"मेरे एक मित्र हैं, उनका कहना है कि बुद्धि तो माता-पिता की देन है। स्कूल-कॉलेज में तो विद्यार्थी ज्ञान का संचय करते हैं। यह ज्ञान-संचय स्कूल-कॉलेज की अपेक्षा बाहर भली प्रकार हो सकता है। शर्त यह है कि आँखें और कान खोलकर रखे जाएँ।"

"और बुद्धि में वृद्धि नहीं होती है वहाँ?"

"बुद्धि तो वहाँ पर कुण्ठित ही होती है। माता-पिता तथा ईश्वर की कृपा से मिली बुद्धि पर अध्यापक अपनी छाप लगाना चाहते हैं और ऐसा करने में वे प्रायः स्वाभाविक बुद्धि को भी कुण्ठित कर देते हैं।"

शिवलाल स्वयं कुछ अधिक पढ़ा नहीं था। वह यह जानता था कि कम-से-कम ज़मींदारी करने के योग्य बुद्धि तो उसको स्कूल में नहीं मिली थी। वह उसने घर पर पिताजी के पास बैठकर सीखी थी। हाँ, धन व्यय करने का ढंग वह स्कूल में अवश्य सीख आया था।

इस कारण वह समझता था कि दुर्गानन्दन भी ठीक ही बात कह रहा है। उसने पूछ लिया, "परन्तु जो बच्चे बाहर दुनिया में अपनी आयु के संगी-साथियों में नहीं घूमते, वे बुद्धू क्यों रह जाते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे वही मित्र बताते थे कि जिनको माता-पिता से जन्म से अच्छी बुद्धि मिली होती है और उनकी आँखों और कानों में पट्टी नहीं बाँध दी जाती, वे स्वयमेव अपने मित्र बनाने में और ज्ञान संचय करने में लग जाते हैं और उनके ज्ञान-भण्डार के बढ़ जाने के बाद उनकी ईश्वरप्रदत्त बुद्धि चमक उठती है। प्रायः महापुरुष किसी स्कूल-कॉलेज की उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं किए होते। यह तो देखा गया है कि स्कूलों और कॉलेजों से पास हुए अधिकांश मूर्ख होते हैं।"

"सत्य ? किसी ऐसे को जानते हो ?"

"कम-से-कम एक को तो जानता ही हूँ। देहरा के ठाकुर का एक लड़का महीपाल है। उसने ऐसी महान् मूर्खता की है कि जीवन-भर उसका प्रतिकार चुकाते रहेंगे।"

शिवलाल हँस पड़ा। हँसकर पूछने लगा, "उसने क्या किया है ?"

दुर्गानन्दन ने संक्षेप में नैनीतालवाली घटना बताकर कहा, "यदि मुझसे वह लुकाव-छिपाव न रखता तो मैं उसको बता देता कि वह उसकी मौसी है, जिसका वह अपहरण करने जा रहा है।"

"तुम ऐसी स्थिति में होते तो क्या करते ?"

"किसी स्त्री के अपहरण में मैं कोई लाभ नहीं समझता। मैं उस औरत से मिलकर अपने गुणों का बखान करता और उसको स्वेच्छा से अपने साथ चलने के लिए आमन्त्रित करता।"

"और यदि वह जाना पसन्द नहीं करती तो ?"

"तो क्या ! मैं यह समझता कि उसने मुझे अपने योग्य नहीं समझा। फिर मैं स्वयं को उसके योग्य बनाने का यत्न करता।"

"मगर तुमको अपने योग्य मानने पर भी उसके मार्ग में कुछ बन्धन ऐसे हो सकते थे कि जिनके कारण वह तुम्हारे साथ जाने में असमर्थ होती। ऐसी स्थिति में तुम क्या करते ?"

"बाबू साहब ! इसका अर्थ तो यह हुआ कि मेरा उसके प्रति आकर्षण इतना प्रबल नहीं हुआ जो उसके बन्धन तोड़ देता। मैं अपनी अयोग्यता पर सन्तोष कर लूँगा।"

शिवलाल ने एकाएक घड़ी देखी और कह दिया, "अब तो मुझको एक काम से जाना पड़ रहा है। फिर किसी दिन अवसर मिला तो इस विषय पर बात करूँगा। एक बात तो मैं समझ गया हूँ कि स्कूल-कॉलेज छोड़कर भी बुद्धि में वृद्धि हो सकती है।"

इसके बाद भी शिवलाल पन्द्रह दिन तक लखनऊ में रहा और दूसरे-तीसरे दिन दुर्गानन्दन से मिलता रहा। उसको कुछ ऐसा समझ आया कि लखनऊ के सभ्य समाज में वह कुछ मूर्ख कहा जा सकता है। दुनियादारी की बातों में वह एक बागी माना जा सकता है। वह अपनी बात कहने के लिए बिना संकोच लग जाता था। साथ ही जिसको जैसा समझता था उसको वैसा कह देने के लिए सदा तत्पर रहता था। दुर्गानन्दन ने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन बताया, "मैं यह समझता हूँ कि मनुष्य का ज्ञान कभी भी पूर्ण नहीं होता। इस कारण मुझको नया ज्ञान प्राप्त करने और पूर्व-संचित ज्ञान में संशोधन करने में सदा तत्पर रहना चाहिए। यदि मुझको ऐसा करना है तो दुनियादारी और सभ्यता के पॉलिश में अपने को छिपाकर रखने से तो मैं नवीन ज्ञान-प्राप्ति और प्राचीन मिथ्या ज्ञान के त्यागने में अपने को अभेद्य बना दूँगा।

"इससे जो मन में समझता हूँ, कह देता हूँ। और जब अपनी भूल समझता हूँ तो क्षमा माँग लेता हूँ।

"देखिए, एक देहाती चौकीदार का लड़का था। मैंने उसको अनपढ़, देहाती, गँवार और अपने से छोटी आयु का समझकर एक बार छोकरा कहा था। अब मुझको विदित हुआ कि वह बहुत ही अधिक सामान्य बुद्धि रखता है। मैं उससे क्षमा माँगनेवाला हूँ।"

"कहाँ है वह लड़का?"

"हमारे घर पर ही रहता है। जब से मेरे इस ज्ञान में वृद्धि हुई है तब से मैं उसको अपना भाई मानता हूँ।"

शिवलाल पिता के किसी ज़मींदारी के कार्य पर बुलाने के कारण देहरा लौट गया। वह अनुभव करता था कि वह कुछ नई बातें सीखकर आया है। अब वह अपनी सीखी हुई बातों की परीक्षा करना चाहता था और इसके लिए अवसर ढूँढ रहा था।

एक दिन बाबू छोटेलाल ने उससे कहा, "बेटा! मुद्दई को ज़मीन से बेदखल करना चाहिए।"

"क्यों पिताजी?"

"उसने मुझको बड़े बाप का बेटा होने से धनी होना कहा है।"

"तो क्या यह उसने असत्य कहा है?"

"सत्य-असत्य की बात नहीं है शिव! यह दुनियादारी की बात नहीं, यह सभ्यता की बात नहीं।"

शिव को दुर्गानन्दन की बात स्मरण हो आई कि दुनियादारी और सभ्यता पालिश है जो मनुष्य को ज्ञान-संचय करने में अयोग्य बना देता है।

अब वह अपने पिता की बात पर विचार करने लगा। उसको यही समझ आया कि उसके पिता अधिक ज्ञान-संचय नहीं कर रहे हैं।

एक दिन वह अपनी पत्नी की परीक्षा करने लगा। वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ बैठा मन बहलाने के लिए ताश खेल रहा था। उसके दोनों लड़के स्कूल में छुट्टी होने के कारण आजकल घर पर ही थे। खेलते-खेलते उसको दुर्गानन्दन का विचार आया तो उसने ताश रख दिए और कहने लगा, "अब और नहीं खेलूँगा।"

"क्यों, कहीं जाना है क्या?"

"नहीं, जाना तो कहीं नहीं। मैं इस खेल को व्यर्थ की बात समझता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसलिए ?"

"इससे किसी नई बात का ज्ञान तो होता नहीं। मैं समझता हूँ कि मैं इन बच्चों का समय व्यर्थ गँवा रहा हूँ।"

"ज्ञान तो ये स्कूल में जाकर प्राप्त करेंगे। यहाँ तो इनको छुट्टी मनाने दीजिए।"

"स्कूलों में और स्कूलों से बाहर भी ज्ञान प्राप्त होता है। केवल आँखें और कान खोलकर रखने पड़ते हैं। मैं यह देख रहा था कि एक घंटे से आँखें तो इन पत्तों को देख रही थीं और कान बन्द थे।"

इस पर राधा चिढ़ गई और बोली, "मालूम नहीं कि क्या हुआ है आपको ? जब से लखनऊ से आए हैं तब से ही ज्ञान, चक्षु, कान, सभ्यता, मुलम्मा इत्यादि बातें करने लगे हैं। किससे मेल-जोल रहा है वहाँ ?"

"तो बता दूँ ?"

"क्यों, क्या कोई चोरी की बात है, जो आप बताने में संकोच कर रहे हैं ?"

"नहीं, सुनो ! मैं वहाँ एक दुर्गानन्दन से मिला था। उससे बहुत बातें हुईं। मैं समझा हूँ कि वह एक बहुत ही समझदार लड़का है।"

राधा के माथे पर त्यौरी चढ़ गई। उसने त्रिवेणी की ओर देखकर कहा, "जाओ त्रिवेणी ! अपने कमरे में जाकर कुछ पढ़ो-लिखो।"

"तुम बैठो, त्रिवेणी ! तुम भी कुछ अक्ल की बात सीख सकोगी।"

त्रिवेणी भी जाना नहीं चाहती थी। वह समझ गई थी कि किसकी बात होने लगी है और क्यों माँ उसको वहाँ से उठा देना चाहती थी। शिवलाल के प्रोत्साहन पर वह वहीं बैठी रही।

शिवलाल ने अनेकानेक बातें बताईं और अन्त में कह दिया, "यदि मेरा बस चले तो मैं त्रिवेणी का उससे विवाह कर दूँ। क्यों त्रिवेणी ?"

त्रिवेणी मन से प्रसन्न परन्तु ऊपर से संकोचवश आँखें नीची किए बैठी थी। उसके मुख पर रह-रहकर लाली छा जाती थी। राधा देख रही थी और पति के उस वर्णन का अर्थ समझ नहीं पा रही थी। वह चुप थी, परन्तु अन्त में त्रिवेणी के विवाह और उससे प्रश्न सुन के तो उससे रहा नहीं गया। उसने कहा, "शर्म नहीं आती, इस प्रकार की बातें कुँवारी लड़कियों से पूछते हुए ?"

माँ की बात समाप्त होने से पहले ही त्रिवेणी उठकर अपने कमरे में चली गई। वह अपने मन की प्रसन्नता चादर और तकियों में गुत्थमगुत्था होकर प्रकट करने लगी।

शिवलाल ने पत्नी के प्रश्न के उत्तर में कहना जारी रखा, "उस दिन मैंने दुर्गानन्दन के विषय में पिताजी से बात की थी। और उन्होंने मुझे कुलद्रोही कहकर बात समाप्त कर दी है।"

"यही तो मैं भी कह रही हूँ कि आपने यह बात लड़की के सामने क्यों कही है ?"

"उसके ज्ञान की वृद्धि के लिए। साथ ही यह बात भी कहना चाहता था जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिताजी ने कही थी। तब दुर्गानन्दन के विषय में उसका ज्ञान पूर्ण हो जाता, और वह उससे नेह रखने अथवा तोड़ने का निर्णय सुगमता से कर सकती। परन्तु तुमने दुनियादारी के पालिश के कारण उसको पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से वंचित कर दिया है।"

"मैं तो उसको इस विषय पर कुछ भी कहना नहीं चाहती। एक दिन उसको डोले में बिठाकर ससुराल विदा कर देना ही ठीक है।"

"परन्तु कहाँ, यही तो विचार कर रहा था। एक स्थान तुमने पहले बताया था और वे दस लाख रुपया माँगते थे। क्या किया जाए?"

"अब एक अन्य रिश्ते का पता चला है, कहो तो बताऊँ?"

"हाँ, बता दो। मगर राधा! अब मैं दुर्गानन्दन को देख आया हूँ। अगर उससे कोई अच्छा बताओगी, तब ही बात करूँगा।"

"प्रतापगढ़ ताल्लुके के लाल साहब सुरेशकुमार हैं। विलायत में तीन वर्ष तक रहकर आए हैं। मैंने माँजी से कहा है। उन्होंने पंडिताइन के द्वारा सन्देश भेजा है।"

"कब भेजा है?"

"कल गई है। पहले घर की औरतों को ज्ञान हो जाए तो फिर मर्दों से बात चलवा दूँगी।"

"लड़के को किसी ने देखा है?"

"सुना है गौरवर्ण है, सुडौल है और खूब बन-ठनकर रहता है।"

"अच्छी बात है। पण्डिताइन को आ लेने दो। फिर विचार करेंगे।"

विलायत में रहे लड़के के विषय में त्रिवेणी के राज़ी हो जाने की सम्भावना पर शिवलाल चुप रहा।

तीन दिन प्रतापगढ़ में रहकर पण्डिताइन लौटी। उसने बताया, "लड़के की माँ और भाभी तो लेन-देन की बात पूछते थे और लड़का लड़की की पढ़ाई के विषय में पूछ रहा था। मैंने बताया है कि यह मैं नहीं जानती कि वह कौन-से दर्जे तक पढ़ी है। हाँ, यह जानती हूँ कि लड़की लखनऊ में एक अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ी थी। अब पाँच-छः मास से घर पर ही है।

"इसपर लड़के ने कहा कि यदि लड़की को लखनऊ में ले आवें और वहाँ मुझे उससे पृथक् बातचीत करने का अवसर दें तो मैं बता सकता हूँ कि मेरा वहाँ विवाह होगा अथवा नहीं।"

इस वृत्तान्त को सुनकर शिवलाल ने राधा से कहा, "अब क्या करोगी?"

"अब आप मर्द लोग निश्चय करो।"

"माताजी से कहो कि पिताजी से बात कर लें।"

"तो आप नहीं करेंगे बात?"

"मैं अपने-आप तो नहीं करूँगा। वे मुझसे पूछेंगे तो फिर अपने मन की बात बताऊँगा। पहले ही बात करके डाँट खा चुका हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है, माताजी द्वारा कहाऊँगी।"

बात छोटेलाल तक पहुँची। उसने कह दिया, "पहले लेन-देन की बात हो जाए। उसके बाद ही देखा-देखी की बात हो सकती है।"

परिणाम यह हुआ कि अब पण्डिताइन के स्थान पर पण्डितजी गए। वे तो एक ही दिन रहकर लौट आए। पण्डितजी ने बताया, "राजा साहब कहते थे कि लड़के की पढ़ाई पर और परवरिश पर राज्य का सवा लाख रुपया खर्च हुआ है। अतः ढाई लाख नकद तो मिलना ही चाहिए। पचास हज़ार टीके पर और दो लाख विवाह के समय।

"इस सब-कुछ पर भी लड़का लड़की को देखकर पसन्द करेगा।"

"क्यों शिव! क्या कहते हो? मैं समझता हूँ कि रुपया तो मैं इतना दे दूँगा, परन्तु देखनी-दिखानी करनी तुम्हारी बात है। यह मेरे मान की बात नहीं।"

"पिताजी! त्रिवेणी से पूछ लूँ। वह मान जावेगी तो ठीक है। ज़बरदस्ती तो मैं उसकी देखनी कराने ले नहीं जाऊँगा।"

"मगर उसको क्या आपत्ति है? लखनऊ में पढ़ते हुए तो घुटनों तक फ्रॉक पहने और सिर से नंगी घूमती रही है।"

"मैं पूछ लूँ, फिर बताऊँगा। वैसे तो मैं भी ऐसे ही समझता हूँ जैसे आप कह रहे हैं।"

त्रिवेणी से बात हुई। यह बात राधा ने पिता-पुत्री में पृथक् नहीं होने दी। वह समझती थी कि लड़की के पिता पर इस विषय में विश्वास नहीं किया जा सकता। वह समझती थी कि वह भी लड़की का दुर्गानन्दन से सम्बन्ध पसन्द करता है। इसमें वह लड़की का कल्याण नहीं समझती थी।

जब त्रिवेणी के सामने प्रतापगढ़ के राजा के लड़के के विषय में बात हुई तो लड़की ने पूछ लिया, "उसके पिता दहेज में क्या माँगते हैं?"

"देखो त्रिवेणी! देना-लेना तुम्हारे बड़ों की बात है। उनके पास होगा तो देंगे, नहीं होगा तो नहीं देंगे।"

"परन्तु यदि ऋण लेकर दिया तो?"

"ऋण तब लेंगे जब उस ऋण को उतारने की सामर्थ्य हममें होगी। यह तो ऐसे ही है जैसे घर में कोई बीमार हो जाए और डॉक्टर की फीस के लिए रुपए जेब में न हों। इस पर भी हम ऋण लेकर चिकित्सा करें और रोगी के ठीक हो जाने पर ऋण उतार दें—यह कोई बुरी बात नहीं है।"

त्रिवेणी हँस पड़ी। उसने कहा, "पिताजी! भला इन दोनों बातों में परस्पर कोई तुलना है क्या? मैं बिना विवाह के मरी नहीं जा रही। और फिर जो डॉक्टर की फीस देने की बात हो रही है, वह डॉक्टरी पढ़ा भी है कि नहीं?"

शिवलाल यह तो समझ गया कि त्रिवेणी और दुर्गानन्दन में पर्याप्त बातचीत हो चुकी है। वह दुर्गानन्दन की भाँति युक्ति करती थी। इसपर भी शिवलाल ने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो बेटा! रोगी नहीं भी जान सकता कि वह बीमार है, और बीमारी का ज़ोर होने पर वह जीवित रह सकेगा अथवा नहीं। इसके लिए तो दूसरों की राय, जिन्होंने संसार देखा है, उनकी बात माननी पड़ेगी। साथ ही डॉक्टर की योग्यता भी रोगी के निर्णय करने की बात नहीं होती। डॉक्टर अच्छा या बुरा, जैसा भी है, यह रोगी के देखने की बात नहीं, उसके संरक्षकों के देखने की बात है।"

युक्ति में त्रिवेणी बात आगे नहीं चला सकी। उसने कह दिया, "पिताजी! मैं नहीं कह सकती कि आपका निर्णय ग़लत है। इसपर भी मैं पूछ रही हूँ कि फिर मुझको लखनऊ ले चलकर उसके नियत स्थान पर ले-जाने में प्रयोजन क्या है?

"चिकित्सा यहाँ ही आरम्भ करवा दीजिए।"

"डॉक्टर रोगी का निरीक्षण करने के बाद ही बताएगा कि वह रोगी की चिकित्सा कर सकेगा अथवा नहीं।"

"ओह! तो वह देखना चाहता है कि रोग चिकित्सा करने योग्य है भी कि नहीं।"

इसपर तो शिव समझ गया कि युक्ति में वह परास्त हो गया है। कारण यह कि डॉक्टर रोगी का रोग देखने का विचार नहीं रखता। वह तो रोगी की रूप-रेखा देखने के लिए लालायित है। परन्तु बात बढ़ती देख उसने रोगी और डॉक्टर के अलंकार को और आगे ले-जाने का विचार छोड़ कह दिया, "भला एक व्यक्ति को, जो पर्दे में नहीं रहता और न ही रहना चाहता है—उसको किसी भी स्थान पर चलकर एक प्याला चाय पीने में क्या आपत्ति हो सकती है?"

"मैं चलूँगी। परन्तु यदि मुझको अनुभव हुआ कि डॉक्टर नालायक है तो फिर क्या होगा?"

"तुम अपनी बात उनसे कहना, जिन्होंने डॉक्टर से चिकित्सा की राय दी है।"

"कब चलना होगा?"

"मैं निश्चय करके बताऊँगा।"

राधा इस वार्तालाप से सन्तुष्ट थी। वह यह समझी थी कि त्रिवेणी अब ठीक मार्ग पर आ रही है। इसपर भी वह उसकी वाक्-पटुता पर आश्चर्य करती थी। वह समझ नहीं सकी थी कि एक सोलह वर्ष की बालिका-मात्र कैसे अपने बड़ों से युक्ति कर सकती है? यद्यपि वह यह पसन्द नहीं करती थी कि इस प्रकार से बातचीत हो, इसपर भी जब बातचीत सभ्यतापूर्ण ढंग से हुई थी और वह इच्छित परिणामों पर जाकर समाप्त हो गई तो वह लड़की के बात करने पर असन्तुष्ट नहीं रही थी।

४

भेंट का प्रबन्ध प्रतापगढ़वालों की कोठी पर हुआ। सुरेशकुमार ने ऐसा ही नियत किया था। निश्चित दिन त्रिवेणी को सामयिक फैशन के तथा कीमती वस्त्र पहना माँ के कहने पर थोड़ा-सा अधरों पर रंग और हल्का-सा छींटा पाउडर का कपोलों और गर्दन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लगा नियत समय पर प्रतापगढ़वालों की कोठी पर ले-जाया गया।

सुरेश ने चाय का सब सामान कोठी के ड्राइँगरूम में लगवा रखा था। केवल चाय का पानी ही आना शेष था। त्रिवेणी अपने माता-पिता के साथ नियत समय पर वहाँ पहुँच गई। सुरेश अपनी माता के साथ वहाँ उनके स्वागत के लिए उपस्थित था। वह उनके आने पर उनको सीधे ड्राइँगरूम में ले गया। वहाँ बैठ त्रिवेणी को सुरेश के पास बैठा दिया गया। दोनों पक्षों के बड़ों का विचार था कि सुरेश उससे कुछ पूछना चाहेगा। लड़की की दूसरी तरफ सुरेश की माँ बैठी थी और सामने शिवलाल तथा राधा थे।

शिवलाल और राधा ने तो कुछ खाया-पीया नहीं। जब सुरेश की माँ ने मिठाई की तश्तरी त्रिवेणी के सामने रखी तो उसने उसमें से एक पेस्ट्री का टुकड़ा लेकर अपने सामने की खाली प्लेट पर रख लिया और छुरी से उसमें से थोड़ा-सा काटकर खाने लगी। सुरेश उसको यह सब-कुछ करते देख रहा था। सुरेश की माँ ने लड़की से उसकी पढ़ाई, उसके स्कूल और उसके वहाँ के अध्यापकों के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। त्रिवेणी ने आदरयुक्त भाषा में सब-कुछ सविस्तार बता दिया।

"तो तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ दी ?"

"मैंने नहीं छोड़ी। एक दिन माताजी गईं और मुझे वहाँ से घर ले आईं। मैं अपनी श्रेणी में सर्वप्रथम रहा करती थी। स्कूल की हॉकी टीम की कप्तान थी और वहाँ यूरोपियन म्यूज़िक में स्कूल में इनाम पा चुकी थी।"

"क्यों बहिनजी !" सुरेश की माँ ने राधा से पूछ लिया, "आपने इतनी योग्य लड़की की पढ़ाई क्यों बन्द कर दी ?"

"हम लोग इसके ईसाई हो जाने से डर गए थे। यह गिरजाघर में जाकर उनकी प्रार्थना के गीत गाने लग गई थी।"

"ओह !" सुरेश के मुख से यह पहला शब्द निकला था।

त्रिवेणी ने बातों से अवकाश पा चाय बनानी आरम्भ कर दी थी। सुरेश की माताजी राधा से कह रही थीं, "आप कुछ खाती क्यों नहीं ?"

"हम देखना चाहते हैं कि हमको खिलाना चाहिए अथवा कि खाना।"

"जब तक निश्चय नहीं हो जाता तब तक तो खा ही सकते हैं।"

"जी नहीं। यह कोई पराया माल तो है नहीं जो अवसर पाते ही उस पर टूट पड़ा जाए। अब आप लोग अपना निर्णय बतावेंगे तो फिर हम भी अपने मन की बात बता सकेंगे।"

"क्यों सुरेश !" उसकी माँ ने पूछ लिया, "तुम क्या कहते हो ?"

इस समय तक बातचीत होते आधा घंटा हो चुका था। सुरेश के मुख से एक बार ही 'ओह' का शब्द निकला था, अन्यथा उसने वार्तालाप में कोई भाग नहीं लिया था। वह चुपचाप त्रिवेणी का मुख देख रहा था। अब माँ के इस प्रकार प्रश्न किए जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको कहने पर विवश होना पड़ा। उसने कहा, "माँ ! मैं तो इनसे पृथक् में एक-दो बात पूछना चाहता हूँ।"

"क्या हानि है !" सुरेश की माँ ने कहा।

सुरेश उठा और त्रिवेणी की ओर देखकर बोला, "आइए !"

त्रिवेणी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से अपने पिता की ओर देखा। पिता ने कह दिया, "डॉक्टर मुआयना करना चाहता है।"

त्रिवेणी उठी और सुरेश के पीछे ड्राइँगरूम के पिछले कमरे में चली गई। वहाँ पर भी सोफा और कुर्सियाँ लगी थीं। मेज़ थी, फूलदान था और प्राकृतिक दृश्यों के चित्र थे।

सुरेश ने त्रिवेणी को सोफे पर बिठाकर स्वयं उसके पास बैठते हुए कहा, "क्यों जी ! हमारा विवाह होना चाहिए न ?"

त्रिवेणी इस प्रकार सीधे प्रश्न की आशा नहीं करती थी। वह तो समझी थी कि दुर्गानन्दन की भाँति अन्य विषयों पर यथा—खानपान, वस्त्राभूषण, सैर-सपाटे, पर्दा, बिना पर्दा, इत्यादि विषयों पर बात होगी। वह यह भी आशा करती थी कि खर्चा और नौकर-चाकरों पर तथा रहने के स्थायी स्थान पर बात होगी। पीछे विवाह की बात तो बड़ों पर छोड़ दी जाएगी।

इस प्रकार सीधे प्रश्न पूछे जाने पर एक क्षण के लिए वह घबराई। फिर साहस पकड़कर बोली, "मैंने अभी निर्णय नहीं किया। निर्णय कर भी नहीं सकती।"

"क्यों ?"

"मैं अभी नाबालिग़ हूँ। मेरी आयु सोलह वर्ष की है।"

"यह कुछ नहीं। तुम्हारे माता-पिता तुमको यहाँ विवाह के लिए ही तो लाए हैं। इसलिए तुम्हारे नाबालिग़ होने की बाधा नहीं रही।"

"मुझको उन्होंने यह बताया नहीं।"

"ठीक है। उनका विचार विवाह का है। अब तुम बताओ···" इतना कहते-कहते उसने अपना हाथ उसकी कमर में डाल दिया।

त्रिवेणी ने हाथ हटाते हुए कहा, "आप तो मुझको यहाँ···"

वह आगे कह नहीं सकी। सुरेश ने अपने होंठ उसके होंठों पर रख त्रिवेणी के मुख को बन्द कर दिया। त्रिवेणी 'आ आ' ही कर सकी।

कुछ हाथापाई हुई और सुरेश ने अपना मुख पीछे किया तो त्रिवेणी ने अपने दाहिने हाथ से उसके मुख पर चट से चपत लगा दी और सोफे से उठ सामने खड़ी हो बोली, "बहुत बदतमीज हो !"

"हाँ, मैंने तुमको पसन्द कर लिया है।"

त्रिवेणी कमरे से निकल ड्राइँगरूम में पहुँच गई। उसका मुख क्रोध से लाल हो रहा था। उसके गालों पर छूट-छुटाव करते हुए सुरेश के नाखुनों की खरोंच आ गई थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मुख के अगले दाँत पर थोड़ा-सा रक्त का निशान था। शिवलाल समझ गया कि क्या हुआ है। राधा ने पूछा, "क्यों, चली क्यों आई हो?"

"माँ! घर चलने के लिए।"

"हाँ चलो।" उठते हुए शिवलाल ने कहा।

इसी समय सुरेश मुस्कराता हुआ बाहर आ गया और कहने लगा, "आप शकुन भेज सकते हैं। मैंने त्रिवेणीजी को अपनी पत्नी बनाने की स्वीकृति दे दी है।"

सुरेश की माँ भी सब बात समझ रही थी, परन्तु वह इसको एक स्वाभाविक बात समझी थी। उसने मुस्कराते हुए कहा, "तो शेष कार्यक्रम कब और कहाँ निश्चय होगा?"

"हम इसके दादा-दादी से पूछकर पण्डितजी के हाथ सन्देश भेज देंगे।" राधा ने कहा।

शिवलाल और त्रिवेणी तो द्वार की ओर चल पड़े थे। एकाएक शिवलाल घूमा और सुरेश से बोला, "अच्छा भैया, नमस्कार!"

बस, सब चल दिए। जब ये लोग चले गए तो माँ ने सुरेश से कहा, "यह तुमने क्या किया सुरेश?"

"क्या किया है माँ?"

"तुमने कली को पेड़ से उखाड़ने का यत्न किया है।"

"तो यह सब स्वाभाविक नहीं था?"

"कली को उखाड़, दोनों हाथों में भरकर भेंट करने का अधिकार तो माली को है। बिना उसकी स्वीकृति के तुमको कली को तोड़ना नहीं चाहिए था।"

"पर माँ! विलायत में तो इस बात पर आपत्ति नहीं की जाती?"

"बेटा! वहाँ भी खिले हुए और पेड़ से गिरे हुए फूलों के साथ यह व्यवहार पसन्द किया जाता है। वहाँ भी कली को माली के बिना हाथ लगाना जुर्म है।"

"नहीं माँ! तुम नहीं जानतीं। तुम सुनी-सुनाई बातें करती हो। मैं तो वहाँ सब-कुछ देख आया हूँ।"

"इसपर भी बेटा! यह हिन्दुस्तान है और वह हिन्दू लड़की है।"

"मैं समझा था कि वह ईसाई स्कूल में पढ़ी है।"

उधर त्रिवेणी ने अपनी कोठी में पहुँचकर ही बात की। उसने कहा, "पिताजी! मेरा विवाह यहाँ नहीं होगा।"

"बस, चुप रहो!" राधा ने डाँटते हुए कहा।

"माँ। तुम कुछ समझती तो हो नहीं और बस निर्णय पहले ही दे दिया करती हो।"

"सब समझती हूँ। उसने तुम्हारा मुख चूमने का यत्न किया होगा। तुमने उसको ऐसा करने से रोका होगा। इस रोका-रोकी में यह खरोंच आ गई है और दाँत से एक बूँद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त निकला है। मैं समझती हूँ कि यह तो होता ही है। यहाँ न होता तो जब उसके घर जाती तब होता।

"तुम अभी बच्ची हो, और कुछ जानती-समझती नहीं हो।"

"पर पिताजी!" उसने अपनी बात का समर्थन करने के लिए कहा, "डेढ़ वर्ष के लगभग वे मिलते रहे थे। वही, जिनसे आप लखनऊ में मिलकर आए हैं। उन्होंने विवाह करने के लिए तो कहा था, परन्तु ऐसा तो कभी नहीं किया था।"

"यह इस कारण कि उसके साथ विवाह को हमने स्वीकृति नहीं दी थी।"

"और यहाँ विवाह की स्वीकृति हो चुकी है?"

"हाँ, हमारी तरफ से हो चुकी है। यहाँ तो उसे अन्तिम स्वीकृति देनी थी और स्वीकृति के अनुरूप हीं उसका यह व्यवहार था।"

"परन्तु माँ! पिताजी ने तो कहा था कि मुझे यदि वह अयोग्य प्रतीत हुआ तो मैं अपने बड़ों के सम्मुख बता सकूँगी?"

"तो बता दो।"

"यही तो कहती हूँ कि मेरा विवाह यहाँ नहीं होगा।"

"पर क्यों?"

"इसलिए कि इससे अत्यन्त श्रेष्ठ और सभ्य व्यक्ति एक अन्य है। पिताजी उनको देख चुके हैं। वे बताएँगे कि मेरा अनुमान ग़लत है अथवा ठीक।"

"क्यों जी! क्या कहते हैं आप?"

"मैं अपनी सम्मति देहरा चलकर दूँगा।"

"कब चलेंगे?"

"बस, एक घंटे में।"

बात समाप्त हो गई। इसपर भी त्रिवेणी पिता के बात टालने से सन्तुष्ट नहीं थी। वे रात की गाड़ी से रायबरेली पहुँचे। वहाँ उनकी घोड़ागाड़ी उनको गाँव तक ले चलने के लिए आई हुई थी।

वे रात के बाररह बजे घर पहुँचे और जाते ही सोने के लिए चले गए।

जब पति-पत्नी पृथक् कमरे में पहुँचे तो राधा ने पूछ लिया, "आप अब बताइए कि यह विवाह होगा या नहीं?"

"नहीं।"

"तो आपने वहीं पर लड़की को क्यों नहीं बताया? मैं तो समझी थी कि आप मुझसे और अपने माता-पिता से राय करने के लिए चुप हैं।"

"तुम लोगों से नहीं। मैं त्रिवेणी से पृथक् में एक-दो बातें पूछकर उसको अपनी राय बताना चाहता था।"

"उससे अब क्या पूछना है? उसने तो बता दिया है कि वह विवाह नहीं करेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फिर भी उससे कुछ पूछना है।"

"क्या पूछना है, यही तो मैं आपसे पूछ रही हूँ!"

"तुमसे पूछने की बात होती तो तुमसे पूछता। त्रिवेणी से पूछ लूँ। उसने कह दिया तो तुम्हें भी बता दूँगा।"

"इस छोकरी के लिए आप मुझसे भी लड़ना चाहते हैं?"

"नहीं, मेरी रानी! तुमसे कभी नहीं लड़ सकता। हमारे हिन्दुओं में विवाह के बाद लड़ना वर्जित है। हम एक-दूसरे से रूठ सकते हैं पर लड़ नहीं सकते।"

इससे तो राधा को विस्मय हुआ और उसने पूछ लिया, "क्या अन्तर है दोनों बातों में?"

"रूठने के बाद तो सुलह हो जाती है। लड़ने के बाद सुलह के लिए स्थान नहीं रह जाता।"

"कैसे सुलह हो सकती है जब…"

शिवलाल ने उसको आगे कुछ कहने नहीं दिया। उसने कहा, "वह तो कई बार हो चुकी है। आज भी हो जावेगी।"

५

त्रिवेणी भी अपने पिता से बात करना चाहती थी। घर में उसको वही अपने अनुकूल दिखाई देता था। रात को वह सो नहीं सकी। मन में वह अनेकानेक योजनाएँ बनाती रही। परन्तु अपने उत्तेजित मस्तिष्क में वह किसी भी योजना को अन्तिम रूप देने में असमर्थ ही रही।

प्रातः के चार बजे थे। हवेली की ड्योढ़ी में घड़ियाल ने चार की गजर बजाई थी। सब घर गहरी नींद में सो रहा था परन्तु वह अपने कमरे में पलँग पर करवटें लेती हुई योजना के पश्चात् योजना विचारकर बिना किसी अन्तिम परिणाम पर पहुँचे उनको छोड़ती जाती थी।

वह उठी। उसने दियासलाई ली और अपने मेज़ पर रखे मिट्टी के तेल के टेबल-लैंप को जला कुर्सी पर बैठ गई। वह अपने मस्तिष्क के अनिश्चितपन का कारण कमरे का अन्धकार ही समझती थी। अब वह मेज़ के सामने कुर्सी पर बैठ विचार करने लगी। अभी भी उसका चित्त स्थिर नहीं था।

इस समय उसके द्वार पर धीरे से दो-तीन बार दस्तक हुई। वह समझ गई कि उसका पिता उससे बात करने के लिए आया है। वह लपककर उठी और उसने भीतर से द्वार खोल दिया। सामने उसका पिता खड़ा था। त्रिवेणी के मुख से निकल गया, "तो आप आ गए हैं?"

"हाँ। क्यों, तुम मेरे आने की प्रतीक्षा कर रही थीं?"

"मुझे लगता था कि आप मुझसे कुछ जानना चाहते हैं। इसीलिए आपने कल माँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को प्रतापगढ़वाले के विषय में कुछ नहीं बताया था।"

"हाँ, तुम ठीक समझी हो। मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि तुम यहाँ विवाह क्यों पसन्द नहीं करतीं? क्या यह उसकी अधीरता के कारण है?"

"नहीं पिताजी! मैंने तो बाहर चाय पीते हुए ही निर्णय कर लिया था कि वे लखनऊवाले, जिनको आप मिल चुके हैं, इस प्रतापगढ़वाले से अतिश्रेष्ठ हैं। इसकी अधीरता का ज्ञान तो बाद में हुआ है। इस अधीरता ने मेरे अनुमान की पुष्टि ही की थी कि वह अच्छा मनुष्य नहीं है।"

"मनुष्य में अच्छाई के क्या लक्षण हैं, जो तुमने एक में देखे हैं और दूसरे में नहीं देख पाई हो?"

"पिताजी! बता नहीं सकती। परन्तु मेरा मन कह रहा है कि जो सब बड़ों के सम्मुख भी आधे घंटे तक मेरे मुख की ओर ही निहारता रहा था, वह बहुत ही छोटे विचार का आदमी हो सकता है। मैं लखनऊवाले से मिली हूँ। उनसे बहुत बातें की हैं। उन्होंने मुझको बताया था कि उनकी इन्द्रियाँ मुझसे प्यार करने को कहती हैं। मन विचारकर कहता है कि इसमें अभी बाधा है—आयु की और बड़ों की स्वीकृति की। दोनों के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए। आत्मा मन और इन्द्रियों पर काबू रखती है। हम अनेक बार निर्जन स्थान पर मिले थे, परन्तु उन्होंने कभी मुझे छुआ तक नहीं है। 'यह तो पशु है, मानव है ही नहीं।"

"तो क्या तुम्हारा मन तुम्हारी आत्मा के अधीन है?"

"मेरी इन्द्रियाँ अभी बगावत नहीं कर रहीं। इस कारण मुझमें मन, इन्द्रियाँ और आत्मा का संघर्ष नहीं चलता। हमारी मुख्याध्यापिका एक दिन कहती थी कि परमात्मा का चिन्तन करने से और उससे शक्ति माँगने से आत्मा मज़बूत होती है। जब वह मज़बूत हो जाती है तो वह मन और इन्द्रियों को काबू में रख सकती है।

"इस कारण मैं नित्य परमात्मा से आत्मा के बलिष्ठ होने की प्रार्थना किया करती हूँ।"

"कैसे करती हो?"

"हमारी पुस्तक में एक प्रार्थना लिखी है। वह प्रार्थना है—ओ गॉड! गिव अस स्ट्रेंग्थ, ऐण्ड प्रोटेक्ट अस फ्रॉम टैम्पटेशन्स। मैं नित्य इसका जाप किया करती हूँ। वे लखनऊवाले कहा करते थे कि यदि हम कर सके तो यह बहुत बड़ी बात है।"

"अच्छा सुनो!" शिवलाल ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा विवाह प्रतापगढ़वाले लड़के से हो। मैं तो दुर्गानन्दन को पसन्द करता हूँ। मगर घर में कोई मानेगा नहीं। मैं तुम्हारा विवाह स्थगित करने का यत्न करूँगा, परन्तु कह नहीं सकता कि सफल हो सकूँगा कि नहीं।

"यदि मैं अपने प्रयत्न में असफल हो गया तो फिर तुम क्या करोगी?"

"मैं कोठे की छत से छलाँग लगा आत्महत्या कर लूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मूर्खता होगी।"

"तो फिर क्या करूँ? मैं इतनी दुर्बल हूँ कि भागकर जाने पर अपनी रक्षा नहीं कर सकूँगी।"

"देखो, मैं बताता हूँ। तुम विवाह से इनकार करती रहना। मैं विवाह को स्थगित करने का यत्न करता रहूँगा। यदि हम दो वर्ष तक विवाह रोकने में सफल हो गए तो तब तक तुम वयस्क हो जाओगी और फिर मैं तुमको घर से भाग जाने में और दुर्गानन्दन से विवाह करने में सहायता कर दूँगा।"

"परन्तु उनको भी तो मेरे इस विचार का पता चलना चाहिए। कहीं वे मेरे चुप रहने का ग़लत अर्थ न लगा लें! एक बात और है....।"

"क्या?"

इसपर त्रिवेणी ने रुपए की और भागने के यत्न की कथा बता दी। और फिर दुर्गानन्दन के न आ सकने पर उसके वस्त्र तथा रुपयों के देहरा में आने और माँ के उन पर अधिकार कर लेने की बात बता दी। उसने कहा, "इससे तो वे मन में मुझको चोर भी समझ सकते हैं।"

"अच्छा, मैं उससे मिलकर पूर्ण परिस्थिति का वर्णन कर दूँगा। और उसके रुपए उसको वापस करने की बात कह दूँगा।"

"आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूँगी।"

शिवलाल अपने कमरे में आया तो राधा अभी भी गहरी नींद में खुर्राटे भर रही थी। वह चुपचाप अपने पलँग पर लेटकर सो गया।

जब छोटेलाल ने मुलाकात का परिणाम जानना चाहा तो शिवलाल ने जो कुछ देखा था और फिर त्रिवेणी से सुना था, अपने पिता को सुना दिया। इसपर तो छोटेलाल का सोया हुआ अभिमान जाग पड़ा। उसने कहा, "तो क्या उसने हमारी लड़की को वेश्या समझ लिया था?"

शिवलाल समझता था कि युक्ति करने में उसका पिता शिथिल है। भला इसमें वेश्या और साधु होने की बात कहाँ से आ गई? हाँ, इसमें पशु और मनुष्य की बात तो थी। परन्तु वह चुप रहा। घर में दो पक्ष हो गए। एक पक्ष पुरुषों का बन गया और दूसरा स्त्रियों का। स्त्रियाँ कहती थीं कि सुरेश ने लड़की का मुख चूम लिया है इससे लड़की दूषित हो गई है, इसलिए उसका विवाह अब अन्यत्र नहीं हो सकता।

पुरुष इस प्रकार बलपूर्वक लिये चुम्बन का बदला गोली मारकर लेने की बात करते थे, परन्तु इसका परिणाम विवाह नहीं मानते थे। इस झगड़े में न तो किसी ने त्रिवेणी से पूछा कि वह क्या चाहती है और न ही शिवलाल से राधा ने पूछा कि उसने अपनी लड़की से जो कुछ पूछना था वह पूछ लिया है अथवा नहीं, यदि पूछ लिया है तो उसने क्या कहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय व्यतीत होता गया। प्रतापगढ़वालों को कुछ भी उत्तर नहीं भेजा गया। जब सुरेश का विवाह रीवाँ की लड़की से हो गया, तब यह मामला शान्त हो गया।

इस बीच में शिवलाल ने राधा से कहा, "दुर्गानन्दन के वस्त्र और रुपए दे दो।"

"क्यों ?"

"मैं उसको वापस कर देना चाहता हूँ।"

"क्या आवश्यकता है ? दस हज़ार से अधिक रकम है।"

"तो क्या हम इतने कंगले हो गए हैं कि दस हज़ार के लिए अमानत में खयानत करेंगे ? देखो राधा ! यह रुपया उसका वापस करना चाहिए। नहीं तो त्रिवेणी चोर, ठग या कंगलों की लड़की समझी जावेगी।"

इस पारिवारिक मान-प्रतिष्ठा ने राधा का मुख बन्द कर दिया और उसने होलडाल तथा सूटकेस सब सामान के साथ अपने पति के हवाले कर दिया। एक दिन उस सब सामान को लेकर शिवलाल लखनऊ जा पहुँचा और सामान अपनी कोठी पर रख स्वयं दानसिंह के मकान पर जा पहुँचा।

दानसिंह उन दिनों लखनऊ में नहीं था। वह अपनी सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिए इलाहाबाद गया हुआ था। दुर्गानन्दन लखनऊ का काम देख रहा था। जब वह बैठक में पहुँचा तो चौकीदार उसके पास आ गया। उसने बताया, "घर पर छोटे बाबू के अलावा और कोई नहीं है।"

"उनसे कह दो कि कोई उनसे मिलने के लिए आया है।"

"क्या नाम बताऊँ ?"

"नाम उनको ज्ञात नहीं। उनसे इतना ही कहना कि उनका कोई पूर्व-परिचित, जिसका नाम वे जानते नहीं, उनसे मिलने के लिए आया है।"

दुर्गानन्दन आया और उसे, जिसको उसका पिता खुफिया पुलिस का व्यक्ति समझते थे, विद्यमान देख घबराया। इस समय तक काकोरी का डाका पड़ चुका था और बिस्मिल के पकड़े जाने की बात ज्ञात हो चुकी थी। दानसिंह ने अपनी पत्नी, पुत्र और चौकीदार को सतर्क कर दिया था कि किसीसे घर पर आनेवाले किसी व्यक्ति के विषय में कुछ बात नहीं करनी।

दानसिंह शिवलाल को भी खुफिया पुलिस का आदमी समझता था और उसने दुर्गानन्दन को सतर्क कर रखा था। परन्तु उस समय काकोरी के डाके की दुर्घटना नहीं हुई थी और एकाएक उसका आना बन्द हो जाने से यह समझा गया था कि उसको कुछ पता न चलने से उसका आना बन्द हुआ है।

आज इस आदमी को पुनः बैठक में बैठा देख दुर्गानन्दन एक बार तो घबराया, परन्तु साहस पकड़ आगे बढ़ उससे हाथ मिला, बिठाकर पूछने लगा, "बहुत दिनों बाद दर्शन हुए हैं।"

"हाँ, जिस कारण से मैं उन दिनों आता था वह पूरा हो गया था। इससे आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द कर दिया था। अब एक अन्य आवश्यक कार्य से आया हूँ।"

"फ़रमाइए, पिताजी तो यहाँ हैं नहीं, मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मुझे आपसे ही काम है।"

"आज्ञा कीजिए।"

"आप किसी त्रिवेणी को जानते हैं?"

दुर्गानन्दन अवाक् बैठा रह गया। शिवलाल ने कहा, "मैं उसका पिता हूँ। उसने मुझको आपसे सम्पर्क की कथा बताई है, साथ ही आपके साथ भाग जाने के यत्न की कहानी भी सुनाई है।"

दुर्गान्दन विचार करने लगा था कि कदाचित् यह त्रिवेणी के विवाह किए जाने की बात बताने के लिए आया है, अथवा वह उससे उसके सम्बन्ध के विषय में पूछने आया होगा। इस वार्ता का उद्देश्य न समझते हुए, आगे सुनने की प्रतीक्षा में वह प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा।

शिवलाल ने उसको चुप देख आगे कहा, "मैं उसकी स्वीकृति से आपका सूटकेस और बिस्तर आपको वापस करने के लिए आया हूँ।"

"तो वे दोनों ज्यों-के-त्यों बन्द ही हैं?"

"नहीं, देखा गया था कि उनमें क्या है। एक पुरुष के कपड़े देख त्रिवेणी से पूछा गया था। उसमें ग्यारह हज़ार के लगभग रुपए भी हैं। मैं वे सब वस्तुएँ ले आया हूँ।"

"वह रुपया तो मेरी ओर से उसको भेंट थी। उसका विवाह हो गया है कहीं?"

"नहीं, अभी विवाह नहीं हुआ। कह नहीं सकता कहाँ होगा। वह आपसे विवाह का हठ कर रही है परन्तु मेरे माता-पिता, भाई और भाभियाँ स्वीकार नहीं करतीं। मैं विवाह में ढील कर रहा हूँ। इस पर भी वह और मैं सफल हो सकेंगे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता।"

"तो ऐसा करिए, उन रुपयों को तो आप रख लीजिए। जब उसका विवाह होगा तो उसको मेरी ओर से भेंट दे दीजिएगा। कपड़े वापस कर दीजिए। इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करूँगा।"

"नहीं, दुर्गानन्दनजी! इस प्रकार नहीं। अभी तो वह सब-कुछ आपको दे जाता हूँ। त्रिवेणी की यही इच्छा है। फिर जब कभी कहीं उसका विवाह होगा उस समय आप जो कुछ भी उसको भेंट देना चाहें दे दीजिएगा। तब वह लेगी अथवा नहीं लेगी, उस समय की परिस्थिति के अनुसार निश्चय करेगी। परन्तु यदि मेरे और त्रिवेणी के यत्न सफल हो गए तो फिर आप स्वयं यह भेंट और कदाचित् इससे भी अधिक देने की स्थिति में होंगे।"

दुर्गानन्दन इस परिवर्तित परिस्थिति से इतनी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था कि उसके मुख से बात नहीं निकल रही थी। उसकी आँखों में प्रसन्नता के आँसू डबडबाने लगे थे। शिवलाल उसकी इस अवस्था को देख रहा था। उसने कहा, "पिछली बार मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ आपसे मिलने के लिए ही आया था। मैं आपसे मिला और बातचीत करता रहा। मैंने तब ही आपको अपनी लड़की के लिए निर्वाचित कर लिया था। परन्तु हमारा घर-भर इसके विपरीत है। कारण तुम जानते हो। महीपालवाला मामला है! महीपाल अभी तक विन्ध्यवासिनी देवी को भूला नहीं और परिवार महीपाल के दुःख को भूल नहीं सकता।

"मैं समझता हूँ कि तुमको भी यहाँ अपने माता-पिता की ओर से विवाह के लिए कठिनाई ही होगी। इस कारण तुम दोनों का विवाह तुम दोनों के वयस्क होने तक हो नहीं सकता। तब तक दोनों खाली हुए तो फिर कुछ कर दूँगा।"

"मेरा विवाह तो मेरे पच्चीस वर्ष के होने तक कोई नहीं करेगा। आप त्रिवेणी की बात विचार कर लीजिए। एक बात मैं आपसे चाहूँगा कि यदि इस बीच में त्रिवेणी का विवाह कहीं अन्यत्र हो गया तो मुझको बता दीजिएगा जिससे मैं उसको अपनी ओर से भेंट भेज सकूँ।"

अगले दिन शिवलाल दुर्गानन्दन को उसका बिस्तरा और सूटकेस दे गया। इस प्रकार चोरी के ग्यारह हज़ार रुपए मिल जाने पर वह विचार करने लगा कि वह चोरी का धन वापस उसी स्थान पर रख दे अथवा त्रिवेणी को देने के लिए रख छोड़े?

६

इन चार वर्षों में उसके मन में भी भारी परिवर्तन हुआ था। अब श्रीपति उनके घर में आकर रहने लगा था और वह दुर्गानन्दन को राजनीति की बातें, जो वह अपने इतिहास के अध्यापक पालीवाल से सुनता रहा था, बताया करता था।

एक दिन जब दुर्गानन्दन ने श्रीपति से उसको छोकरा कहने के लिए क्षमा माँगी तो श्रीपति पूछने लगा, "दुर्गा भैया! यह क्यों, मेरी हँसी उड़ा रहे हो क्या?"

"नहीं श्रीपति! यह बात नहीं है। मैंने तुमको एक देहाती-गँवार समझ एक समय छोकरा कहा था। परन्तु तुमको तथा तुम्हारे मन और बुद्धि की प्रखरता को देख मैं समझता हूँ कि मैंने कुछ ग़लत बात कर दी थी। अब तो तुम मेरे छोटे भाई श्रीपति हो न?"

इस प्रकार अन्य विषयों पर भी उसके विचार बदल रहे थे। बिस्मिल और अन्य क्रांतिकारियों की बातें वह श्रीपति से सुनकर चकित रह गया था।

इस सब पृष्ठभूमि पर यह चोरी किया हुआ रुपया वापस आया तो उसके मन ने कहा कि उसे उसी आलमारी में रखकर पिताजी के सम्मुख सब बात स्वीकार कर लेनी चाहिए।

उसने रुपया मिलने पर वह ज्यों-का-त्यों आलमारी में रख दिया। अब वहाँ वह काले रंग की सन्दूकची नहीं थी। इस कारण उसने एक अन्य वैसी ही लकड़ी की सन्दूकची ला उस स्थान पर रख उसमें रुपये रख दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानसिंह इलाहाबाद से लौटा तो पिता-पुत्र में बात का अवसर तब मिला जब दानसिंह ने आलमारी में एक नई सन्दूकची पड़ी देखी। उसने सन्दूकची निकालकर खोली तो उसमें ग्यारह हज़ार रुपये पड़े देख विचार करने लगा कि कांग्रेसी स्वयंसेवकों के कप्तान बाबूलाल श्रीवास्तव ने ही ये यहाँ रख दिए होंगे। उसने पहले चौकीदार से पूछा, "कभी बाबूलाल यहाँ आया था क्या?"

"नहीं साहब! अब वे यहाँ आते ही नहीं।"

दानसिंह ने दुर्गानन्दन से पूछा तो उसने उससे पूछ लिया, "आप किसलिए पूछ रहे हैं?"

इसपर दानसिंह ने सन्दूकची दिखाकर उसको कहा, "यह यहाँ कैसे आ गई है?"

दुर्गानन्दन ने बताया, "पिताजी! यह तो मैंने रखी है।"

"और इसके रुपये?"

"वे भी मैंने रखे हैं।"

"क्यों, किसलिए रखे हैं?"

तब दुर्गानन्दन ने वहाँ से रुपये निकालने और एक लड़की के साथ भाग जाने तथा दानसिंह के ठीक समय पर जेल से छूटकर आने के कारण न भाग सकने की सारी बात सविस्तार सुना दी।

इस सब कथा को सुन दानसिंह हँस पड़ा। उसने पूछा, "परन्तु इस बात को तो अब तीन वर्ष होने जा रहे हैं, अब तक यह रुपया कहाँ रखा हुआ था?"

इसपर दुर्गानन्दन ने महीपाल से मिलने में त्रिवेणी को कारण और फिर त्रिवेणी से लखनऊ में भेंट और रुपया लेकर उसके गाँव चले जाने की बात बता दी। तदनन्तर शिवलाल के यहाँ आने और उसके खुफिया पुलिस के समझे जाने पर उसको बैठक में बैठने की स्वीकृति और उससे दुर्गा का सम्पर्क तथा उसका पुनः आना तथा स्वयं को महीपाल का भाई तथा त्रिवेणी का पिता बताकर उसके कपड़े और रुपया वापस कर देने की बात बताई। उसने कहा, "रुपया आने पर मैंने उसको उसके उचित स्थान पर रखने की बात विचार यह सन्दूकची खरीद रुपया यहाँ रख दिया है।"

इस सब कथा को सुन दानसिंह गम्भीर हो पूछने लगा, "तो तुम चोर हो। यह तो दान का रुपया था। तुमने इसको चुराकर घोर पाप किया है।"

"इसके लिए मैं लज्जित हूँ, क्षमा चाहता हूँ। जो प्रायश्चित्त आप बताएँगे मैं वह करूँगा।"

"परन्तु तुम त्रिवेणी से विवाह करोगे?"

"यदि आप स्वीकृति देंगे तो।"

"यह स्वीकृति तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि सीता वापस उसकी माँ को नहीं मिल जाती।"

"मैं यत्न करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद सीता के लखनऊ में मिलने के समाचार आने लगे और तिवारी आने लगा।

ठीक उस दिन जिस दिन नरही में अब्दुल समद के मकान पर डाका डाला जाने लगा था तो कुरेड़ी भेजने के लिए दुर्गानन्दन की आवश्यकता पड़ी थी। परन्तु वह बहुत प्रातःकाल का घर से गया हुआ था।

उससे पहली रात उसको एक लड़का एक पत्र दे गया था। लड़के ने यह पत्र उसको अमीनाबाद की दुकान में खड़े-खड़े दिया था। पत्र देते समय लड़के ने उससे पूछा था, "आपका नाम दुर्गानन्दनसिंह है?"

"हाँ।"

"आपके लिए यह पत्र है।"

दुर्गानन्दन पत्र हाथ में लेकर लिफाफा देख रहा था। उसमें नाम-पते के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं लिखा था। लड़के ने कहा, "इसको तो आप घर जाकर पढ़िएगा और दो आने मेरा इनाम!"

दुर्गानन्दन ने जेब से पैसे निकाल लड़के की हथेली पर रखे तो वह सलाम कर भाग गया। दुर्गानन्दन अनुमान लगा रहा था कि कदाचित् यह पत्र त्रिवेणी से सम्बन्धित है। वह वहाँ से सीधा घर की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचते ही उसने अपने कमरे में जा पत्र पढ़ना आरम्भ कर दिया। उसमें लिखा था,

"प्रिय दुर्गानन्दनजी,

कल प्रातःकाल साढ़े चार बजे लखनऊ रेलवे स्टेशन के फर्स्ट क्लास के वेटिंग-रूम में त्रिवेणी आपको मिलेगी। उसको लेकर पाँच बजे की गाड़ी से कानपुर चले जाना। वहाँ से झाँसी की गाड़ी मिलेगी और वहाँ से बम्बई चले जाइए। आगे के लिए त्रिवेणी से पता कर लेना। मैं आप लोगों को बम्बई में मिलने का यत्न करूँगा।

यथासमय उससे विवाह कर लेना। अब वह सत्रहवें वर्ष में है। शेष तुमको समझदार समझ तुमपर छोड़ रहा हूँ। अपने ठहरने का स्थान मुझे निम्न पते पर लिख देना।"

जब दुर्गानन्दन पत्र पढ़ चुका तो उस समय रात के आठ बज रहे थे। उस समय उसके माता-पिता घर पर नहीं थे। वह उनको कुछ कह नहीं सका। कुछ उनको कह जाने के विषय में भी वह अनिश्चितमन था। इस अवसर को वह चूकना नहीं चाहता था।

उसके पास वसूली में से कुछ रुपये सदा पड़े रहते थे। उसने कैश-बक्स खोल उसमें रखे रुपये गिने। ढाई हज़ार से कुछ अधिक थे। उसने रुपयों को निकाल उनके स्थान पर एक चिट रख दी। उसमें लिख दिया—'मैं अपने काम के लिए रुपये निकालकर ले-जा रहा हूँ। यथासमय लौटा दूँगा।'

अगले दिन दुर्गानन्दन की आवश्यकता पड़ी तो वह घर पर नहीं मिला। उस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब काम इतनी तीव्र गति से होता रहा कि किसीको दुर्गा की ओर ध्यान देने का अवकाश ही नहीं मिला। अगले दिन जहाँ अभी श्रीपति, नर्मदा और सीता के विषय में चिन्ता बनी ही हुई थी वहाँ दुर्गा की ओर भी ध्यान गया।

दानसिंह का जब कैश-बक्स में से रुपया लापता मिला तो उसको विश्वास हो गया कि वह पुनः त्रिवेणी के साथ भागने में संलग्न है। इस विचार के आते ही वह देहरावालों की कोठी पर जा पहुँचा। वहाँ परिवार का कोई मालिक व्यक्ति उपस्थित नहीं था। ज़मींदारी का मैनेजर रघुनाथ सहाय वहाँ पर उपस्थित था। दानसिंह को वह पहचानता था। उसने द्वार पर उसे चौकीदार से बातें करते देखा तो वह अपने कमरे से बाहर आ गया और दानसिंह के समीप पहुँच उसको नमस्कार कर पूछने लगा, "फ़रमाइए, किससे मिलने के लिए आए हैं?"

"मैं चौकीदार से पूछ रहा था कि बाबू शिवलाल यहाँ हैं कि नहीं। यदि नहीं हैं तो उनके कब तक आने का समाचार है?"

"इस समय वे यहाँ हैं नहीं, और न ही उनके शीघ्र आने का कोई समाचार ही हम लोगों को मिला है।"

"अच्छा, तो नमस्कार।" इतना कह दानसिंह जाने के लिए घूमा।

मैनेजर ने उसको रोक लिया और कहने लगा, "यह तो चाय का समय है, कृपया एक प्याला पी लीजिए। मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।"

"परन्तु आपके मालिकों को भी प्रसन्नता होगी क्या?"

"मैं मालिक के घन में से आपको चाय के लिए आमन्त्रित नहीं कर रहा हूँ। मेरी अपनी कमाई भी तो है!"

"क्षमा कीजिए। हम नौकर को मालिक से पृथक् नहीं मानते। इसपर भी मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।"

"इसकी आवश्यकता नहीं है। यद्यपि मैं आपके विचार से सहमत नहीं हूँ, तो भी आपसे चाय ग्रहण करने के लिए हठ नहीं करूँगा।

"हाँ, तो शिवलालजी से आपको क्या काम आ पड़ा? क्या मैं आपका किसी प्रकार का कोई सन्देश उनके पास भेज दूँ?"

"जब आवें तो केवल उनसे यही कहिए कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। महीपाल के विषय में कुछ बात है।"

"उनके विषय में क्या बात है?"

"वह मैं उनको ही बताऊँगा।"

रघुनाथ सहाय को विगत रात्रि के डाके के विषय में कुछ ज्ञात नहीं था। इससे आगे वह कुछ और पूछ भी नहीं सका।

दानसिंह लौट आया। इसके बाद डिप्टी कमिश्नर के घर चाय की घटना घटी और इसके कुछ दिन बाद ही दानसिंह बंगाल रेगूलेशन के अधीन पकड़ लिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दानसिंह के लिए भाग-दौड़ होने लगी तो दुर्गानन्दन की ओर किसीका ध्यान नहीं गया।

७

दुर्गानन्दन निश्चित समय पर रेल के स्टेशन पर फर्स्ट क्लास के वेटिंगरूम में पहुँच गया। त्रिवेणी वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे दुर से आता देख त्रिवेणी लपककर उसके समीप गई और उसने उसे नमस्कार किया। दुर्गानन्दन ने हाथ पर बँधी घड़ी में देखकर कहा, "समय हो गया है, चलो।"

"आप कानपुर का टिकट ले आइए और साथ ही कुली को भी लेते आइएगा। मेरे पास बिस्तरा और सूटकेस है।"

फर्स्टक्लास के डिब्बे में दुर्गा और त्रिवेणी अकेले ही थे। गाड़ी चलने पर दुर्गानन्दन ने पूछ लिया, "यह कैसे हुआ है?"

"घर में केवल पिताजी ही थे जो मेरा पक्ष ले रहे थे। घर के अन्य सब प्राणी मेरा आपसे विवाह पसन्द नहीं करते थे। कभी-कभी चाचा महीपाल आते थे और घरवालों को आपके विरुद्ध भड़का जाते थे। वे तो आपको महामूर्ख मानते हैं।

"कई बार उनमें और पिताजी में गरमागरम वाद-विवाद भी हो जाता था। घर की बैठकघर में होनेवाले उस वाद-विवाद का हल्ला अन्तःपुर में भी सुनाई देता था, किन्तु बात कुछ समझ में नहीं आती थी। कभी-कभी मैं इस विषय में माँ से पूछ लेती तो वह कह देती कि मेरा ही स्यापा हो रहा है। इससे मैं समझ जाती कि मेरे विवाह की चर्चा चल रही है।

"एक दिन चाचाजी आए और मुझे चाय बनाकर बाहर बैठक में ले-जाने के लिए कहा गया। मुझे सन्देह हुआ कि कोई मेरे विवाह का प्रत्याशी वहाँ पर बैठा होगा। इसपर भी मैं इनकार नहीं कर सकी। मैं चाय की ट्रे सजाकर ले गई। उस समय मेरे दादा-दादी, चाचा महीपाल और मेरे पिता तथा माता वहीं बैठे थे। मेरे दूसरे चाचा और चाची अब कलकत्ते में रहते हैं।

"मैं वहाँ गई तो मैंने देखा कि केवल एक ही खाली कुर्सी वहाँ पर है। वह माँ और उस अपरिचित व्यक्ति के मध्य में रखी थी। मैंने चाय की ट्रे रखी और उस एकमेव रिक्तस्थान पर जाकर बैठ गई। वह नवीन व्यक्ति बहुत ही फैशनेबल ढंग की अंग्रेज़ी पोशाक पहने हुए था। मैंने उसको देखा और मन-ही-मन उसको अस्वीकार कर दिया।

"चाय पीते समय इधर-उधर की बातें होती रही। बातों ही बातों में यह विदित हुआ कि वह व्यक्ति भी चाचाजी के विभाग का कोई उच्चाधिकारी है। वैसे वह काफी बड़ी आयु का प्रतीत होता था, इसपर भी बातचीत और हाव-भाव से वह हँसी-मज़ाक पसन्द करनेवाला व्यक्ति प्रतीत हुआ था।

"चाय के समय मेरे विवाह के विषय में कोई बात नहीं हुई। चाय और बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त हुईं तो हम सब उठ खड़े हुए। माँ मुझको लेकर भीतर चली गई। वहाँ जा वह मुझे उस आदमी के विषय में पूछने लगी। मैंने कह दिया, 'वही जो मेरे समीप बैठा था और पिताजी की आयु से कुछ कम प्रतीत होता था ?'

"माँ कहने लगी कि हाँ, वही। उसने बताया कि उसकी पहली स्त्री का देहान्त हो गया है। वह जयपुर राज्य-परिवार से सम्बन्धित है। इस समय सरकारी एक्साइज़ विभाग में उच्च पद पर है।

"माँ ने साथ ही यह भी कह दिया कि चाचा महीपाल का विचार है कि उसके साथ मेरा विवाह ठीक रहेगा।

"मैं माँ को वहीं खड़ी छोड़ चुपचाप अपने कमरे में चली गई। मैंने उसके प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया।

"प्रातः चार बजे से भी पूर्व पिताजी ने मुझे सोते से जगाया और कहने लगे कि मेरा विवाह निश्चित हो गया है।

"मैंने उनको बता दिया कि मेरा विवाह उस व्यक्ति के साथ नहीं होगा तो पिताजी कहने लगे कि वे उसीके विषय में बताने के लिए आए हैं। वे मुझे कहने लगे कि यदि वे मुझे यहाँ से भगा देने का प्रबन्ध कर दें तो क्या मैं आप (दुर्गानन्दन) पर विश्वास कर सकती हूँ ? मैंने कहा कि मैं समझती हूँ कि आप मेरी रक्षा करेंगे।

"उन्होंने कह दिया कि मैं चुपचाप अपना सामान तैयार कर लूँ, किसी भी दिन एक क्षण के नोटिस पर चलने के लिए कहा जा सकता है।

"इस प्रकार मैंने सबसे चोरी-चोरी अपनी तैयारी कर ली। कल रात पिताजी मोटर में लखनऊ से आए और रात के दो बजे मेरे द्वार पर आकर निर्धारित संकेत करने लगे। मैं जागी और द्वार खोला। उनको बाहर जाने के कपड़ों में देख प्रश्न-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगी तो उन्होंने चलने के लिए संकेत दिया।

"मैं दो मिनट में अपने कपड़े ले कमरे से बाहर आ गई। ड्राइवर समीप ही खड़ा था। उसने मेरा होलडाल उठाया और हम हवेली के पिछले द्वार से निकल कुछ दूर तक पैदल आए। मोटर गाँव के बाहर खड़ी थी। उसमें सवार हो हम यहाँ वेटिंग रूम में आ गए। पिताजी ने मुझे यह कहा कि आप साढ़े चार बजे यहाँ आवेंगे। यदि आप न आए तो मुझे यहाँ से कानपुर और वहाँ से झाँसी और फिर बम्बई जाने को उन्होंने कह दिया था।

"उस अवस्था में मुझे थर्ड क्लास के ज़नाने डिब्बे में यात्रा करने के लिए कहा गया था। वहाँ पर उन्होंने ठहरने का एक पता दिया है और उनको लखनऊ के पते पर तार देने के लिए कहा था।

"अब आपके साथ भी होगा तो ऐसा ही। केवल यात्रा फर्स्ट क्लास में करने की बात कही है।"

"मैं अपना और तुम्हारा दोनों का सौभाग्य मानता हूँ जोकि तुमको ऐसे पिता मिले हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उनकी इच्छा है कि हम बम्बई में जाकर अपने विश्वास के अनुकूल विवाह कर लें। उन्होंने मुझको विवाह की लिखित स्वीकृति दे दी है।"

"मैं तो विवाह के लिए उत्सुक हूँ, परन्तु इसमें अब एक अड़चन आ गई है। मुझे पिताजी का आदेश है कि तुमसे मैं तब तक विवाह न करूँ जब तक सीता उसकी माँ को वापस नहीं मिल जाती।"

"मगर मेरा उससे क्या सम्बन्ध है?"

"तुम्हारा नहीं। यह हमारे परिवार की मान-प्रतिष्ठा का प्रश्न है। कदाचित् उनके मन में यह बात रही हो कि तुम अपने परिवारवालों की स्वीकृति से विवाह करोगी तो मेरी इस शर्त लगाने पर सीता छूट सकेगी।"

"यह बहुत कठिन है।" त्रिवेणी ने परेशानी अनुभव करते हुए कहा।

"हम इस कठिनाई को पार करने का यत्न करेंगे।"

"कैसे?"

"ठिकाने पर पहुँचकर तुम्हारे पिताजी को लिख दूँगा कि हम सुरक्षित हैं। वे महीपाल पर बल देकर सीता को छुड़ावें।"

"परन्तु मेरा विवाह तो चाचाजी के मित्र से होनेवाला था और वर्तमान परिस्थिति में तो उनका क्रोध बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।"

"मैं अपने पिता को लिखूँगा कि तुम सारे परिवार की अस्वीकृति और केवल अपने पिता की स्वीकृति से ही मेरे पास आई हो, इसलिए वे मुझको तुमसे विवाह करने की स्वीकृति दे दें। मैं समझता हूँ कि वे मान जावेंगे।"

"और तब तक?"

"तब तक तुम और मैं प्रकट में पति-पत्नी और यथार्थ में मंगेतर-मात्र के रूप में रहेंगे। हमारा वास्तविक विवाह तब तक नहीं होगा जब तक मेरे पिताजी की स्वीकृति नहीं मिल जाती।"

"यह तो आप घोर तपस्या करने के लिए कह रहे हैं।"

"देखो त्रिवेणी! आत्मवान बनो। आत्मा को मन और शरीर पर राज्य करने के लिए कहो।"

"ऐसा कब तक चलेगा?"

"आशा है, एक मास के भीतर-भीतर सब ठीक हो जावेगा। इसपर भी मान लो कि जीवन-भर हमारी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती तब भी हम एक मानव की भाँति और एक आत्मवान मानव की भाँति रहेंगे।"

त्रिवेणी गम्भीर हो गई। उन्नाव स्टेशन पर दुर्गानन्दन ने पूछ लिया, "त्रिवेणी! क्या मुझको कानपुर स्टेशन से लौट जाना चाहिए?"

"नहीं डार्लिंग!"

दुर्गानन्दन को यह उच्चारण पहले तो अस्वाभाविक और कानों को खटकनेवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत हुआ। किन्तु जब उसने त्रिवेणी को अपनी ओर मुस्कराती देखा तो उसे नैनीताल में अपने इसी प्रकार के शब्दों के प्रयोग की घटनाएँ स्मरण हो आईं। इसपर दोनों हँसने लगे। दुर्गानन्दन ने उसका हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचना चाहा, परन्तु त्रिवेणी ने झटके से उसका हाथ छुड़ाकर कहा, "आत्मवान बनिए। सीता को छुड़ाए बिना…"

"ओह! भूल गया था।" उसने हाथ छोड़ दिया और बोला, "ठीक है। एक ओर हम उसको छुड़ाने का यत्न करेंगे और दूसरी ओर पिताजी को मनाने का यत्न करेंगे।"

दोनों शिवलाल के बनाए गए कार्यक्रम के अनुसार बम्बई जा पहुँचे। वहाँ बताए पते पर पहुँचे। उन्होंने अपना परिचय दिया तो मकान में रहनेवाले स्त्री-पुरुष तथा बच्चे सभी उनके चारों ओर एकत्रित हो गए।

गृहिणी, जिसका नाम मधु था, त्रिवेणी का हाथ पकड़कर भीतर ले गई और बताने लगी, "आपके पिताजी का पत्र आया कि उनकी लड़की अपने पति के साथ आ रही है। हम आप लोगों को अपने पास रखें और फिर किसी अच्छे मकान का प्रबन्ध कर दें।"

त्रिवेणी समझ गई कि उनके सामने उनको पति-पत्नी के रूप में ही रहना होगा। रात को सोने के लिए भी इनको एक ही कमरा मिला। परन्तु त्रिवेणी और दुर्गानन्दन दोनों ही दृढ़संकल्प थे कि बिना पिता की स्वीकृति के वे पति-पत्नीरूप में नहीं रहेंगे।

बम्बई में इन लोगों के रहने और फिर किसी अन्य स्थान पर मकान दिलवाने का आश्वासन पा दुर्गानन्दन डाकखाने गया और त्रिवेणी के बताए पते पर शिवलाल को तार दे आया। उसने समाचार दिया—हम दोनों सकुशल बम्बई में ताराचन्दजी के पास पहुँच गए हैं। आगे का समाचार पत्र द्वारा देंगे।

उसी पते पर दुर्गानन्दन ने एक पत्र लिख दिया और उसने उसमें अपने पिता की सीता के छूटने पर विवाह की शर्त के विषय में भी सूचित कर दिया।

इसके उत्तर में समाचार आया कि सीता को लखनऊ से कुछ डाकू लोग पकड़कर ले गए हैं। महीपाल का कहना है कि वे डाकू नहीं अपितु बाबू दानसिंह के व्यक्ति थे। परन्तु दानसिंहजी से मिलने पर विदित हुआ है कि उनको इस विषय में कुछ ज्ञान नहीं है। यह तो महीपाल ने उनको भुलावा देने के लिए डाके का नाटक किया है। हम वास्तविक स्थिति जानने का यत्न कर रहे हैं और यथासमय उसकी सूचना देंगे।

एक सप्ताह-भर यत्न करने पर उसको पृथक् मकान मिल गया। दुर्गानन्दन ने बताया था कि वह वहाँ किसी कारोबार में भाग लेने के लिए आया है। ताराचन्द स्वयं एक सरकारी दफ्तर में नौकर था। इससे न तो वह व्यापार के विषय में किसी प्रकार की रुचि ले सका और न ही किसी प्रकार की सहायता दे सका।

वैसे ताराचन्द और उसकी पत्नी दोनों उनसे मिलते रहते थे। पन्द्रह दिन के बाद त्रिवेणी को शिवलाल का पत्र मिला। उसमें उसने लिखा, "यद्यपि महीपाल कहता है कि सीता उसके घर से चुराई गई है, परन्तु कोई उसकी बात का विश्वास नहीं कर रहा। सब उसकी बात सुन मुस्करा देते हैं। मैं बाबू दानसिंह से मिलने के लिए दो बार जा चुका हूँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु वे स्वयं किसी मुसीबत में फँस गए प्रतीत होते हैं। वे आजकल घर पर मिलते नहीं। दुर्गानन्दन से कहो कि वह अपने पिता को लिखे।"

दुर्गानन्दन ने इससे पहले ही लिख दिया था। वहाँ से किसी प्रकार का उत्तर नहीं आ रहा था। एक दिन शिवलाल का पत्र आया। उसमें लिखा था, "दानसिंह को बंगाल रेगुलेशन ऐक्ट के अधीन पकड़ लिया गया है और उनके मित्र वायसराय के पास एक पिटीशन कर रहे हैं।"

यह समाचार तो इन दोनों की आभिलाषाओं पर तुषारापात करनेवाला सिद्ध हुआ। इसपर भी वे दोनों धैर्यपूर्वक अगले समाचार की प्रतीक्षा करने लगे।

दुर्गानन्दन को विदित नहीं था कि श्रीपति भी लखनऊ में नहीं है, इससे वह लखनऊ के काम की ओर से निश्चिन्त था। उसको विश्वास था कि श्रीपति उसकी माँ के पास होगा।

उसने एक पत्र अपनी माँ को लिखा, परन्तु उसका भी कोई उत्तर नहीं आया।

माँ भी जानती नहीं थी कि किसको पत्र लिखे अथवा न लिखे।

दुर्गानन्दन ने एक पत्र श्रीपति को भी लिखा। वह भी बिना खोले ही लखनऊ में पड़ा रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

महीपाल अपने मित्र के विवाह में विघ्न पड़ता देखकर तो उन्मत्त हो गया। उसने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी कि कुरेड़ी के बाबू साहब के घर में तस्करी का सोना एकत्रित किया जा रहा है, इसके लिए उसको उनके घर में छापा डालने तथा तलाशी लेने की स्वीकृति मिले। पुलिस ने बात लखनऊ के कमिश्नर के सामने भेज दी। लखनऊ का डिप्टी कमिश्नर इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसको विदित था कि महीपाल झूठी रिपोर्ट लिखा रहा है। वह डर गया था। दानसिंह के विषय में गवर्नर-जनरल की ओर से जाँच शुरू हो गई थी और दानसिंह के पकड़े जाने के अनन्तर उसके मकान की तलाशी में किसी प्रकार की सन्देहात्मक वस्तु अथवा पत्र प्राप्त नहीं हुआ था। डिप्टी कमिश्नर से रिपोर्ट माँगी गई थी कि किन आधारों पर उसको रेगुलेशन में निरुद्ध कर रखने की सिफारिश की है और डिप्टी कमिश्नर को अपनी सिफारिश का आधार बताने में कठिनाई हो रही थी।

महीपाल की इस नई शरारत से तो वह स्वयं को सर्वथा पृथक् रखना चाहता था। इसी कारण उसने महीपाल की रिपोर्ट कमिश्नर के पास भेज दी। कमिश्नर ने इस मुआमले की जाँच के लिए एक मैजिस्ट्रेट नियुक्त कर दिया। मैजिस्ट्रेट ने जाँच के लिए उस मुआमले को खुफिया पुलिस के हाथ में दे दिया।

इस सब देरी से तो महीपाल पागल-सा एक अफसर के बाद दूसरे के पास फिरता रहा। इन्हीं दिनों में वह देहरा पहुँचा तो शिवलाल से फिर झगड़ा हो गया।

शिवलाल के घरवालों को इस बात में किंचित्-मात्र भी सन्देह नहीं था कि त्रिवेणी के भागने में उसका हाथ नहीं है। उसके इस रहस्य को जानने में केवल उसकी मोटर का ड्राइवर साझीदार था और वह शिवलाल का भक्त था। वह जानता था कि यह रहस्य किसीको बताने का नहीं है।

सब घरवाले परेशान थे कि तीन महीने व्यतीत होने पर भी त्रिवेणी का पता नहीं चला। महीपाल यह समाचार लाया था कि दानसिंह का लड़का दुर्गानन्दन भी घर से ग़ायब है।

महीपाल का विचार था कि दुर्गानन्दन के एक नाबालिग़ लड़की को भगा ले जाने रिपोर्ट की जाए। शिवलाल ने रिपोर्ट करने से इनकार कर दिया। उसका कहना था कि कैसी भी हो, है तो वह उसकी लड़की ही। वह उसको कचहरी में ले-जाकर बदनाम नहीं कर सकता।

इस बार महोपाल घर आया तो वहाँ यह सूचना गर्व से सुनाने लगा कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरेड़ी के कोट की तलाशी कराने का बन्दोबस्त कर आया है।

"क्यों, उन्होंने क्या अपराध किया है ?"

"मैंने लिखाया है कि उनके तोशाखाने में तस्करी का सोना पड़ा रहता है और वे सोने का व्यापार करते हैं।"

"तो यह तुमने सत्य लिखाया है ?"

"क्या कचहरी में भी कोई सत्य बात कही जाती है ?"

"अर्थात् तुमने यह झूठी रिपोर्ट लिखाई है।"

"हाँ, मैं कुरेड़ीवालों का बीज नाश करके ही रहूँगा। दानसिंह अब इस जीवन में तो कैद से छूटेगा नहीं। उसका लड़का एक अल्पवयस्क लड़की के अपहरण के मामले में पकड़ लिया जावेगा। उसको सात वर्ष से कम का दण्ड नहीं होगा। उनकी हवेली की तलाशी हुई तो कुछ सोना तो निकलेगा ही—मुझे विश्वास है कि कई लाख की कीमत का निकलेगा। तब यह सिद्ध करना कि वह तस्करी का है, मेरे बायें हाथ का खेल है।"

"महीपाल ! यह पाप तुम कब तक कमाते रहोगे ?"

"सीता मुझको मिलनी चाहिए। मैं उसको अपनी पत्नी बनाऊँगा।"

"मगर वह तो तुम्हारे पास ही है। लखनऊ का डिप्टी कमिश्नर भी यही रहता था।"

"वह कुछ भी कहे। वह मेरे पास नहीं है। साथ ही त्रिवेणी दानसिंह के लड़के के साथ है। उसको भी ढूँढ निकालना है। मैं किसी प्रकार से बाबूजी की दोनों पत्नियों को जेल में डलवाना चाहता हूँ।"

"महीपाल ! तुम पागल हो रहे हो ?"

"नहीं भैया ! तुम पागल हो। मुझे भाभी ने बताया है कि आरम्भ से ही तुम त्रिवेणी का दुर्गानन्दन से विवाह कर देने के पक्ष में थे।"

"भाभी ने क्या कहा और क्या नहीं कहा उसको छोड़ो। असल बात यह है कि त्रिवेणी का मुझको भी कोई पता नहीं है। मैं उसको ढूँढने का यत्न कर रहा हूँ। परन्तु तुम सीता के पीछे इतने पागल क्यों हो रहे हो ?"

"इसलिए कि वह विन्ध्यवासिनी की लड़की है।"

"यही तो पागलपन है !"

"देखो भैया ! पागल मैं नहीं, पागल तुम हो ! अगर फिर यह बात कही तो तुमको पागलखाने में डलवा दूँगा।"

महीपाल की इस धमकी को किसीने पसन्द नहीं किया। इसपर भी उसने शिवलाल को जी भरकर गालियाँ दीं।

अभी कुरेड़ी के मामले की खुफिया पुलिसवाले जाँच ही कर रहे थे कि गवर्नर की आज्ञा से दानसिंह छूट गया।

इस सूचना से महीपाल को एक और असफलता मिली। वह अब कुरेड़ी के बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब की हवेली की तलाशी का हुक्म लेने के लिए सिरतोड़ यत्न करने लगा।

परन्तु अब महीपाल का सितारा उलट गया था और इस तलाशी के लिए खुफिया पुलिस ने किसी प्रकार का कारण नहीं बताया। यह केस फाइल कर दिया गया।

महीपाल अब बम्बई चला गया और वह अपने काम में लग गया। इस समय समाचारपत्र में एक्साइज़ के अधिकारी के विरुद्ध बारह वर्ष की लड़की के अपहरण का मुकद्दमा प्रेज़िडेंसी की अदालत में पेश किए जाने का वृत्तान्त छप गया। बम्बई में रहते हुए सीता और नर्मदा की ओर से महीपाल के खिलाफ अर्ज़ी कराई गई थी। दानसिंह के छूटते ही महीपाल पर यह वार करना आवश्यक हो गया था।

२

श्रीपति को जब यह पता चला कि दानसिंह पकड़ा गया है तो वह द्विविधा में फँस गया। वह चाहता था कि वह दानसिंह की पत्नी मोहिनी के पास चला जाए। उधर नर्मदा भी बम्बई में अकेली सीता के साथ नहीं रह सकती थी। पद्मजीतसिंह बम्बई में रहने लगता तो डर था कि उसके कारण महीपाल को सीता के बम्बई में होने का सन्देह हो जाता और वह पुनः उसके अपहरण का यत्न कर सकता था। दुर्गानन्दन ने भी इस समय लखनऊ से लापता होकर समस्या को और भी अधिक उलझा दिया था।

बहुत विचारोपरान्त मोहिनी कुरेड़ी में जाकर रहने लगी और श्रीपति बम्बई में ही रह गया। दानसिंह की सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिए एक मैनेजर नियुक्त कर दिया गया।

सीता ने अपनी कहानी बड़ी माँ और श्रीपति को बताई थी। उसने बताया कि श्रीपति के शौच करने के लिए लखनऊवाली कोठरी में से जाने के बाद महीपाल उसको कुरेड़ी ले-जाने के बहाने मोटर में बिठाकर एक मकान में ले गया और वहाँ मिर्ज़ा अब्दुल समद को कुछ रुपये देकर उसे छोड़ आया।

"जब मैंने रोना और चिल्लाना आरम्भ किया तो अब्दुल समद ने मुझे मार-पीटकर चुप कराना आरम्भ किया। मुझे शीघ्र ही समझ आ गई कि वहाँ मेरा कोई सहायक नहीं। मैंने रोना छोड़ा तो मुझे गाना सिखाया जाने लगा। दो वर्ष बाद मुझे नृत्य भी सिखाया जाने लगा। पिछले वर्ष से मुझको दूसरों के सामने गाने और नाचने के लिए कहा जाने लगा था। एक दिन श्रीपति भैया आया था और मेरा नृत्य देख मुझे दस रुपये दे मुझको बुलाने लगा तो मुझे याद आ गया कि वह दादा पृथिवीपाल का मित्र है। परन्तु मैं अब्दुल समद से बहुत डरती थी। जब वह खाँसता था तो मेरी समझ में आ जाता था कि वह मुझको यह काम करने के लिए मना कर रहा है। मैं वह काम करती-करती रुक जाती। मैं भैया श्रीपति को बुलाते-बुलाते रुक गई थी।

"इन लोगों के जाने के बाद मुझसे पूछा गया था कि वह कौन था। मैंने बता दिया। इसलिए उसी रात वहाँ से चलने की तैयारी की जाने लगी। फैज़ाबाद से हम इलाहाबाद और वहाँ से नरही आ गए। इस सब समय मेरे खाने-पीने और पहनने तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने का प्रबन्ध इस प्रकार किया जाता था, मानो मैं किसी बहुत बड़े रईस की लड़की हूँ।

"यह तो मुझे लखनऊ में आकर विदित हुआ था कि महीपाल मुझसे विवाह करेगा। मैं उसको सदा अपना शत्रु समझती रही थी। वही मुझे लखनऊ में कैद रखे हुए था। वही मुझको कुरेड़ी ले-जाने के बहाने अब्दुल समद के मकान पर ले गया था। अब्दुल समद ने ही मुझको मार-पीटकर अपने माता-पिता को भूलने के लिए विवश किया था। वह सदा मेरे साथ जहाँ एक ओर क्रूरता का व्यवहार करता था वहाँ उतनी ही उदारता भी बरतता था।

"यह उसने ही मुझे बताया था कि महीपाल मुझसे विवाह करनेवाला है। इसी कारण वह मुझपर हज़ारों रुपया व्यय कर रहा था। मैंने उसको कहा था, मैं उससे विवाह नहीं करूँगी।

"वह कहने लगा कि मगर जब-जब मुझे प्यार करता है तो मैं प्रसन्न तो होती हूँ ?

"महीपाल मुझको प्यार करता था और मेरा मुख चूमा करता था। मैं वह सब पसन्द नहीं करती थी। परन्तु अब्दुल समद के भय के कारण चुप रहना पड़ता था। इसीको वह मेरी प्रसन्नता समझता था।

"मैंने कह दिया कि वह बात दूसरी है और विवाह की बात दूसरी।

"अब्दुल समद यह सुन हँस पड़ा था। कहने लगा कि दोनों एक ही बात हैं। एक-दो वर्ष में मैं वह सब समझ जाऊँगी।

"मैं चुप रही। इन दिनों एक औरत नौकर रख दी गई जो मेरी सेवा किया करती थी। अभी तक तो मैं पुरुषों के साथ ही रही थी। उस औरत के साथ मैं खुलकर बातें करने लगी। मैंने उसको अपना सारा इतिहास, जितना मुझे स्मरण था, बताया था। इसपर वह मेरे साथ सहानुभूति प्रकट करने लगी। उसने मुझे देवनागरी और अंग्रेज़ी सिखानी आरम्भ कर दी।

"जब मैं उसको कहती कि मुझे मेरे माता-पिता के पास पहुँचा दिया जाए तो वह कहती कि महीपाल बहुत ही सज्जन आदमी है। लड़कियों को तो अपने माता-पिता का घर छोड़कर पति के घर में जाना ही होता है, मुझे भी इसलिए अपने माता-पिता की बात भूल जानी चाहिए।

"परन्तु उसके ऐसा कहने पर मुझे अपने घर की याद और भी अधिक सताने लगी। मैं अपने माता-पिता के पास जाने के लिए और भी अधिक व्याकुल रहने लगी थी।

"फिर एक दिन घर पर डाका पड़ा। मैं सो रही थी। मुझे जगाया गया और कुछ अपरिचित लोगों ने मुझसे कहा, 'चलो !'

"मैंने पूछा, 'कहाँ ?'

"तो एक ने कहा, 'कुरेड़ी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तुरन्त तैयार हुई, अपने आभूषण लिये और उनके साथ मोटर में बैठ चली आई और सत्य ही वह मुझे माँ के पास ले आया।"

"मगर तुमको अपने बयान कुछ बदलकर कहने होंगे।" नर्मदा ने उसको समझाते हुए कहा।

"क्यों ?"

"जिससे महीपाल को अपने पाप का फल मिल जाए और डाका डालनेवाले हमारे आदमी नहीं थे, ऐसा पता चल सके।"

सीता तो महीपाल को अपना शत्रु मानती ही थी। इस कारण वह मान गई। फिर उसको वकील के कहने के अनुसार सिखाया गया और उसने बम्बई प्रेज़िडेंसी मैजिस्ट्रेट के सामने यह कह दिया कि अब्दुल समद ने उसको जगाया और मोटर में चढ़ाकर रेल के स्टेशन पर ले आया। वहाँ से वह उसके साथ कानपुर स्टेशन तक आया। मुझको वहाँ खड़ा कर वह टिकट खरीदने बाहर गया तो लौटा ही नहीं। मैं परेशान थी कि भैया श्रीपति मुझको देख-पहचान मेरे पास आ गया और मुझको कुरेड़ी ले गया। परन्तु महीपाल पर मुकद्दमा करने के लिए और उससे मेरी रक्षा करने के लिए मुझको बम्बई लाकर रखा हुआ है। अब मैं अपनी बड़ी माँ के साथ रहती हूँ। मेरी माँ और पिताजी भी मुझसे मिलने के लिए आया करते हैं।

इस प्रकार मुकद्दमा चलने लगा। जिस दिन महीपाल पकड़कर कोर्ट में हाज़िर किया गया और उसकी सवा लाख की ज़मानत हुई, यह समाचार 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में छप गया।

दुर्गानन्दन और त्रिवेणी एपोलो पायर पर प्रातःकाल के भ्रमण से लौटते हुए समाचारपत्र खरीद लाया करते थे। उस दिन दुर्गानन्दन का ध्यान महीपाल के पकड़े जाने और ज़मानत पर छूटने के समाचार पर गया तो वह उसको ध्यान से पढ़ने लगा। उससे उसको पता चला कि महीपाल पकड़ा गया है। उसको यह तो विदित था कि सीता का महीपाल से भी अपहरण हो गया है, परन्तु उसको यह पता नहीं था कि कहाँ है। अब उसको सब बात समझ में आ गई। मुकद्दमा करनेवाली नर्मदा और सीता थीं। इससे वह इतना तो जान गया कि इस समय सीता और नर्मदा इकट्ठी हैं। इससे उसको यह भी पता चल गया कि उसके पिता दानसिंह छूट गए हैं और वे आजकल बम्बई में हैं।

दुर्गानन्दन ने यह समाचार त्रिवेणी को सुनाया तो उसने कहा, "आपको अपने पिताजी से मिलने का प्रबन्ध करना चाहिए। कदाचित् इस समाचार को सुन मेरे पिताजी भी यहाँ आए होंगे।"

"आज फिर पेशी है। मैं आज कचहरी में जाकर उनसे मिलने का यत्न करूँगा।"

तदनुसार प्रातःकाल अल्पाहार ग्रहण कर दुर्गानन्दन मैजिस्ट्रेट के न्यायालय में जा पहुँचा। वहाँ दोनों परिवारों के मुख्य-मुख्य व्यक्ति उपस्थित थे। छोटेलाल और शिवलाल महीपाल की ओर से उपस्थित थे। छोटेलाल अपने साथ एक अन्य ज़मींदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ज़मानत के लिए लाया था। वह व्यक्ति ज़मानत दे लखनऊ लौटनेवाला था, परन्तु छोटेलाल और शिवलाल अभी महीपाल के साथ ठहरे हुए थे। महीपाल ने दुर्गानन्दन को वहाँ देखा तो पिता से कहा, "देखिए, वह लड़का है जिसके विषय में यह सन्देह है कि वह त्रिवेणी को भगाकर ले गया होगा।"

छोटेलाल ने कहा, "तो तुम कोर्ट में उसकी मुखबरी कर दो।"

महीपाल इस प्रस्ताव पर विचार ही कर रहा था कि शिवलाल ने कह दिया, "यदि तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हारे दावे का खण्डन करूँगा।"

"क्यों ?"

"तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि उसने त्रिवेणी का अपहरण किया है ?"

"यह उसका काम है कि वह सिद्ध करे कि उसने अपहरण नहीं किया।"

"मैं कहता हूँ कि पहले स्वयं को तो बचा लो ! दूसरों को फँसाने का षड्यन्त्र फिर करते रहना।"

"तो त्रिवेणी का पता कैसे चलेगा।"

"मैं अभी उस युवक से मिलकर बात करता हूँ। उसकी बात सुनकर ही हम अपने व्यवहार का निश्चय करेंगे।"

"तब तक तो वह लड़की को कहीं छिपा देगा।"

"मैं समझता हूँ कि यदि त्रिवेणी उसके पास होती तो वह यहाँ कचहरी में आता ही नहीं।"

छोटेलाल बड़ी कठिनाई से शिवलाल को साथ लेकर आया था। इस कारण दोनों भाइयों में झगड़ा होने से रोकने के लिए शिवलाल से बोला, "अच्छा, तुम दानसिंह से मिलकर लड़के से बातचीत करो। कदाचित् वह लड़की का पता बता दे। तब हम लड़की को लाकर कोर्ट में उपस्थित कर उससे बयान दिलवा देंगे।"

शिवलाल मुस्कराया और महीपाल को अपने पिता के पास छोड़ वहाँ चला गया जहाँ पद्मजीतसिंह इत्यादि खड़े थे। नर्मदा और सीता मोटर में बैठी थीं और सब लोग बाहर खड़े थे।

शिवलाल का परिचय दानसिंह को था। वह कमलापति के नाम से उससे लखनऊ में मिल चुका था। दुर्गानन्दन ने अपने पिता को बता रखा था कि कमलापति खुफिया पुलिस का आदमी नहीं, वरंच देहरा के बाबू साहब का लड़का और त्रिवेणी का पिता है। वह पिछले दिन भी कोर्ट में उपस्थित था और दानसिंह ने उसको देखा था।

आज उसको अपनी ओर आते देख दानसिंह को विस्मय हुआ। दुर्गानन्दन बता रहा था कि वह समाचारपत्र में मुकद्दमे का वृत्तान्त पढ़कर कोर्ट में आया है। पद्मजीतसिंह ने उससे पूछा, "मगर तुम इतने दिन रहे कहाँ ?"

इस समय शिवलाल उनको आता दिखाई दिया तो वे लोग चुप हो गए। शिवलाल को दुर्गानन्दन ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया तो सबके सामने ही उसने पूछा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहिए दुर्गानन्दनजी ! त्रिवेणी कुशल से तो है ?"

"बहुत आनन्द से है।"

इसपर तो दुर्गानन्दन के घरवाले भी विस्मय में उन दोनों का मुख देखने लगे। शिवलाल ने बताया, "महीपाल कह रहा है कि वह कोर्ट में मुखबरी करेगा कि तुमने एक नाबालिग़ लड़की का अपहरण किया है।"

"मगर पिताजी, आप तो जानते ही हैं कि मैंने अपहरण नहीं किया है। आप····"

वह इतना कहता-कहता रुक गया। शिवलाल ने उसके कथन को पूरा करते हुए कहा, "ठीक है। पर मैंने अभी उसका पूर्ण रहस्य अपने पिताजी को नहीं बताया है। इसपर भी मैं अभी कह आया हूँ कि यदि उसने मुखबरी की तो मैं उसके दावे का खण्डन करूँगा।"

दुर्गानन्दन मुस्कराया। इसपर दानसिंह ने दुर्गानन्दन को कहा, "तो यह सत्य है कि तुम इनकी लड़की को भगाकर यहाँ लाए हो ?"

"पिताजी ! बात यह है कि लड़की के बाबा उसका विवाह कहीं किसी अनिच्छित पुरुष के साथ करना चाहते थे। उसके पिता ने लड़की को छिपाकर रखने के लिए मेरे साथ यहाँ छिपकर रहने की योजना बना दी थी।"

इस समय अदालत में आवाज़ पड़ गई थी। सब लोग वहाँ चले गए और दुर्गानन्दन की बात अधूरी ही रह गई।

आज के दिन नर्मदा के वकील ने अदालत मे इस बात पर बहस की कि वायसराय हिन्द का किसी अपराधी को क्षमा कर देने का अधिकार तो अपराध के सिद्ध हो जाने पर और कोर्ट के निर्णय के उपरान्त होता है।

महीपाल के वकील ने कहा, "यह अपराधी पर दया नहीं की गई। दया तो अपराध सिद्ध हो जाने के बाद की जा सकती थी। परन्तु क्षमा तो किसी को किसी भी समय किया जा सकता है।"

सरकारी वकील का कहना था कि क्षमा तो सरकारी अधिकारी तब तक ही कर सकते हैं जब तक मुआमला महकमे के अन्दर रहे। परन्तु एक बार मुकद्दमा अदालत में चले जाने के बाद तो यह महकमे की कार्यवाही से ऊपर हो जाता है। वायसराय को क्षमा करने का अधिकार तब तक ही है जब तक बात पुलिस तक ही हो। परन्तु जब बात पुलिस ने अदालत के हवाले कर दी और अदालत ने अपराधी के वारंट जारी कर दिए तो यह वायसराय के क्षमा करने की बात नहीं रह जाती।

यह विषय इतना विषम था कि प्रेज़िडेंसी मैजिस्ट्रेट इसका निश्चय स्वयं नहीं कर सका। उसने इसे हाईकोर्ट के हवाले कर दिया। तब तक के लिए मुकद्दमा स्थागित कर दिया गया।

नर्मदा के वकील ने कहा, "यदि हाईकोर्ट यह निर्णय दे भी दे कि वायसराय की क्षमा उचित और वैधानिक है, तब भी वह उसको वर्तमान मुकद्दमे में लागू नहीं समझता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण यह कि उस क्षमा में अपहरण के अपराध का उल्लेख नहीं है।"

जब सब कोर्ट से चलने लगे तो शिवलाल ने अपने पिता से कहा, "मैं त्रिवेणी का पता करने के लिए जा रहा हूँ।"

इतना कह वह दानसिंह इत्यादि के साथ चल पड़ा।

तब दुर्गानन्दन ने अपने पिता से कहा, "आपको मेरे साथ चलना चाहिए।"

"किसलिए ?"

"वहाँ कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।"

"पहले तुम अपनी माँ के पास चलो। वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

इसपर दुर्गानन्दन ने बाबू शिवलाल की ओर देखा तो वे कहने लगे, "बाबू दानसिंह ठीक कहते हैं। पहले तुम अपनी सफाई तो दे लो। फिर त्रिवेणी भी अपनी अर्ज़ी उपस्थित कर देगी। चलो मैं तुम्हारी वकालत के लिए साथ चल रहा हूँ।"

सब उस घर में जा पहुँचे जहाँ नर्मदा और सीता ठहरी हुई थीं। दानसिंह तो एक होटल में ठहरा हुआ था। मोहिनी अभी भी कुरेड़ी में ही थी। श्रीपति सीता के साथ था।

वहाँ पहुँचते ही दानसिंह ने दुर्गानन्दन से पूछा, "तुमने फिर चोरी की है ?"

"पिताजी, मैं तो कैशबक्स में लिखकर रख आया था कि सख्त ज़रूरत के लिए निकाल रहा हूँ।"

तदनन्तर दुर्गानन्दन ने अमीनाबाद में रात आठ बजे बाबू शिवलाल के पत्र का मिलना और उनका रात के बारह बजे तक न आना तथा उसका प्रातःकाल साढ़े चार बजे स्टेशन पर पहुँचना बता दिया। उसने कहा, "तब से मैं बम्बई में हूँ। त्रिवेणी नाबालिग़ थी। अपने दादा-दादी से छिपकर मेरे पास रह रही थी।

"यहाँ मकान मिलते ही मैंने आपको पत्र लिखा था परन्तु तब तक आप पकड़े जा चुके थे। मैंने माताजी तथा श्रीपति को भी पत्र लिखा था, परन्तु उनका कोई उत्तर नहीं आया।"

दुर्गानन्दन की पूर्ण बात का शिवलाल ने समर्थन कर दिया और बताने लगा, "मेरी स्वीकृति से ही लड़की यहाँ दुर्गानन्दनजी के पास रहती है। यद्यपि मैंने इनको अपनी इच्छा से विवाह करने की स्वीकृति दे रखी है, परन्तु इनका कहना था कि आपने कहा हुआ है कि यह विवाह तब तक नहीं होगा जब तक सीता नहीं मिल जाती। इस कारण इन्होंने अभी विवाह नहीं किया है।"

इसपर दानसिंह ने पूछ लिया, "और समागम ?"

"वह भी नहीं, पिताजी !"

"सत्य कहते हो ?"

"मैं भगवान को साक्षी मान और सबके कर्मों का फलदाता जान सत्य कहता हूँ कि हम अभी तक संयम से रह रहे हैं। आपके आशीर्वाद की प्रतीक्षा में हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो बात विचारणीय हो गई है। क्यों शिवलालजी ! आप क्या कहते हैं ?"

"मैं तो अपनी लड़की का हाथ दुर्गानन्दन के हाथ में दे चुका हूँ। इसके लिए मुझको अपने घरवालों से झगड़ा करना पड़ेगा, कदाचित् त्रिवेणी की माँ से भी। मैं किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा में था जबकि यह रहस्य उनके सम्मुख प्रकट करता।

"मेरा विचार है कि वह अवसर आ गया है। त्रिवेणी अठारह वर्ष की हो चुकी है। अब वह अपने माता-पिता एवं दादा-दादी की अवहेलना कर सकती है। इसपर भी मेरा तो उसके लिए सदा आशीर्वाद बना रहेगा।"

दानसिंह बोला, "मैं तो दुर्गा की माँ के बिना कुछ नहीं कह सकता।"

"तो उनको भी यहाँ बुला लीजिए। जब वे लड़की को देखकर स्वीकार कर लेंगी, तब मैं अपने घरवालों को सब बात बता दूँगा।"

पद्मजीतसिंह और नर्मदा यह पूर्ण वार्तालाप सुन रहे थे। उन्होंने तो मोहिनी से पहले ही दुर्गानन्दन का त्रिवेणी से विवाह स्वीकार कर लिया।

श्रीपति ने छूटते ही कहा, "भैया ! भाभी को कब दिखाओगे ?"

"हाँ भैया !" सीता ने श्रीपति का समर्थन कर दिया। साथ ही बोली, "हम तो अभी तुम्हारे साथ भाभी से मिलने चलेंगे।"

शिवलाल ने कहा, "देखिए दानसिंहजी ! मैं तो आपके पुत्र को योग्य वर समझकर उसे अपनी लड़की दे चुका हूँ। आप अब उसे रखें चाहे नाली में फेंकें—यह विषय मेरे विचार करने का नहीं रहा। वह रहेगी आपके घर में ही, बहू बनाकर रखिए अथवा दासी बनाकर।

"अभी तो मैं अपने पिताजी के पास जा रहा हूँ। उनको भी इस घटना के लिए तैयार करना है। कल पुनः आपसे मिलकर इस विषय में बात करूँगा।"

शिवलाल वहाँ से चलकर महीपाल के मकान में आ गया। पिता और पुत्र दोनों ही शिवलाल की प्रतीक्षा कर रहे थे। शिवलाल ने बताया, "त्रिवेणी का पता चल गया है।"

"तो चलो, वहाँ चलकर उसको ले आवें। यहाँ लाकर उसको समझावेंगे कि उसने भूल की है।"

"वह नहीं आवेगी। हम उसको ज़बरदस्ती ला भी नहीं सकते। वह अब बालिग़ हो चुकी है।"

"परन्तु अपहरण तो पहले हुआ है न ?" महीपाल का कहना था।

"ठीक है। मगर वह बात तो अदालत में जाकर ही कहने पर होगी, और मैं अपनी लड़की को अदालत में घसीटना नहीं चाहता। दुर्गानन्दन अपने घर से भी भागा हुआ था। आज उसने अपने पिता से सुलह कर ली है और अब विधिवत् विवाह करने की बात कर रहा है।"

"तो अभी तक विवाह नहीं हुआ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, वह तो कहता है कि दोनों अभी तक संयमपूर्वक रह रहे हैं। परन्तु यह पति-पत्नी के आपस की बात है। इसमें मुझको रुचि नहीं है।"

"तो फिर?" छोटेलाल ने पूछ लिया।

"फिर यह कि जब वे विवाह करें तो आप भी उनको आशीर्वाद दे दीजिएगा। मैं समझता हूँ अब यही एक मार्ग रह गया है। तब कदाचित् महीपाल के मुकद्दमे में भी कुछ हो सकने की सम्भावना है।"

छोटेलाल और महीपाल टुकर-टुकर शिवलाल का मुख देखते रह गए।

३

श्रीपति और सीता त्रिवेणी से मिलने के लिए गए तो सीता पहली ही भेंट में उससे सुलह कर आई। सीता का तो कहना था कि उसको उनके साथ चलकर फूफाजी के चरणस्पर्श करने चाहिएँ। परन्तु त्रिवेणी ने कहा, "जब तक तुम्हारी बुआ अथवा घर की कोई अन्य बड़ी औरत उसके लिए नहीं आवेगी, वह कैसे जा सकती है? लड़कियों को लड़केवाले लेने के लिए आते हैं।"

इसपर तो सब हँसने लगे। सीता ने कहा, "तो मैं बड़ी माँ से जाकर कहूँगी कि वे आपको आकर ले जावें।"

"हाँ, मेरे लिए माँ और मामी में कोई अन्तर नहीं है। यदि वे यहाँ आईं तो मैं सहर्ष उनके साथ चल पड़ूँगी।"

अब तो सीता भी इन बातों को समझने लगी थी। जिस वातावरण में वह पाँच वर्ष तक रह चुकी थी, उसका प्रभाव समझो अथवा निरन्तर अपने विषय में चिन्तन करने का परिणाम समझो, वह स्वयं में विवाह की इच्छा प्रस्फुटित होती अनुभव करने लगी थी।

आज वह घर पर आई तो बड़ी माँ को अकेली देख उसके पास बैठ त्रिवेणी की प्रशंसा करने लगी।

नर्मदा ने कहा, "तो तुम उसको पसन्द कर आई हो?"

"हाँ माँ! वह बहुत ही भली लगी है।"

"तो उसको यहाँ ले आना था।"

"मैंने कहा था। परन्तु वह कहती थी कि जब तक उसके पति के घर की कोई बड़ी औरत उसे लेने नहीं आवेगी तब तक वह कैसे आ सकती है?"

"वह कहती तो ठीक है।"

"तो माँ! उसको जाकर ले आओ।"

"मैं मोहिनी बहिन की इच्छा जाने बिना किस प्रकार ला सकती हूँ?"

"फूफाजी से पूछकर।"

"मैं समझती हूँ कि मोहिनी से राय किए बिना वे मुझे लाने की स्वीकृति नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देंगे।"

"माँ, पूछकर देख तो लो!"

"आशा नहीं है।"

"अच्छा, यदि वे लाने की स्वीकृति न भी दें, तो भी मिलने के लिए तो जा सकती हो।"

"पर तुम इतना आग्रह क्यों कर रही हो?"

सीता चुप रही। नर्मदा ने पुनः कहा, "अब तो हमको भी तुम्हारे विवाह की चिन्ता करनी पड़ेगी।"

"कब तक चिन्ता करनी पड़ेगी?"

"तुम बारहवाँ पार कर चुकी हो। बस दो-तीन वर्ष तक।"

"माँ! किससे करोगी मेरा विवाह?"

"जिससे भगवान कहेगा।"

"माँ! मैं भी कुछ अपने मन की बात कह सकती हूँ अथवा नहीं?"

नर्मदा इस कथन को सुन विस्मय में सीता का मुख देखती रही। फिर यह विचार कर कि जिस वातावरण में वह रह चुकी है पता नहीं क्या-क्या उसने सीखा होगा। इससे उसके मन की बात सुनने की इच्छा से उससे पूछने लगी, "क्या कहता है तुम्हारा मन?"

"कहता है कि मेरे पति का निर्वाचन हो चुका है।"

नर्मदा भयभीत-सी पूछने लगी, "और वह कहाँ है?"

नर्मदा भयभीत इसलिए थी कि कहीं उसका निर्वाचित पति महीपाल ही न हो। इससे उसने उक्त प्रश्न कर सीता की आँखों में देखा। उसकी आँखें अब झुक गई थीं। उसने आँखें नीची किए हुए ही कह दिया, "इस घर में ही है।"

इतना कहकर वह उठी और भागकर अपने सोने के कमरे में चली गई। नर्मदा को इसका अर्थ समझने में बहुत विचार करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वह समझ गई कि सीता का अभिप्राय श्रीपति से है। पिछले एक वर्ष से दोनों एक-दूसरे के बहुत समीप रह रहे हैं। इससे उसको मन में चिन्ता भी लगी और सन्तोष भी हुआ।

चिन्ता तो इस बात की थी कि वह जानती नहीं थी कि यह सम्बन्ध उसके माता-पिता मानेंगे क्या? सन्तोष इस कारण था कि उसकी रुचि महीपाल में नहीं थी। वह अब मन में विचार करती थी कि इस विचार को सीता के मन में पनपने देना चाहिए क्या?

इससे वह तुरन्त उठी और दानसिंह के पास चली गई। वह वोमनजी वकील से राय करके लौटा ही था। दानसिंह ने नर्मदा को आई देखा तो पूछने लगे, "कुछ बात है भाभी?"

"हाँ, एक यह पूछना चाहती हूँ कि त्रिवेणी के विषय में क्या विचार है? क्या मैं उससे मिलने के लिए जाऊँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने मोहिनी को तार कर दिया है कि वह तुरन्त बम्बई चली आवे। अपने पहुँचने का दिन, समय आदि तार द्वारा सूचित करे। परन्तु इसका अर्थ यह तो नहीं कि भाभी बहू से मिलने के लिए भी नहीं जा सकती। मोहिनी भला लड़के के पास रह रही लड़की को किस प्रकार अस्वीकार कर सकती है ! इसपर भी उसका मान रखने के लिए विवाह की स्वीकृति उसके आने पर ही दूँगा।"

"क्या मैं उसको अपने यहाँ ला सकती हूँ ?"

"हाँ, ला सकती हो। मैं तो होटल में रहता हूँ। मोहिनी भी आएगी, तो मेरे पास ही ठहरेगी।"

"एक बात और है। सीता के पिता से कहने से पहले मैं आपसे राय करना चाहती हूँ। मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि सीता और श्रीपति में प्रेम प्रस्फुटित हो रहा है। उनमें परस्पर किसी प्रकार की बातचीत हुई है अथवा नहीं, मैं नहीं जानती। परन्तु उनके हाव-भाव से मुझे कुछ ऐसा सन्देह हुआ है। साथ ही यह स्वाभाविक भी है। यदि सब बड़े इस सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं तो इनको सीमा में रखते हुए साथ-साथ रहने दिया जाए, और यदि यह सम्बन्ध स्वीकार नहीं तो दोनों को पृथक् कर देना चाहिए। साथ ही इनको यह बात समझा देनी चाहिए कि यह सम्बन्ध सम्भव नहीं है।"

इस सूचना से तो दानसिंह भौचक्का रह गया। फिर कुछ विचारकर उसने कहा, "अच्छा, मैं श्रीपति से यह जानने का यत्न करता हूँ कि दोनों में बात कहाँ तक पहुँची है। इसके अतिरिक्त सीता के श्रीपति से विवाह के सम्बन्ध में तो बाबू साहब और उसकी माँ निर्णय करेंगे। इसपर भी मुझे पहले वस्तुस्थिति का ज्ञान तो कर लेने दो।"

दानसिंह ने मुकद्दमे की फाइल पद्मजीतसिंह के पास रखी और अपने होटल के लिए चल दिया। मार्ग में उसको श्रीपति मिला तो वह उसको भी अपने साथ ही ले गया। श्रीपति ने रात का भोजन वहीं किया। भोजनोपरान्त श्रीपति अपने निवास-स्थान की ओर आने लगा तो दानसिंह ने उसे ठहराकर पूछ लिया, "दुर्गानन्दन की पत्नी को देखा है ?"

"जी, देखने के लिए गया था। मेरी दृष्टि में दुर्गा भैया का निर्वाचन ठीक ही है।"

"अच्छा। भला तुम लड़कियों के विषय में क्या जानते हो ?"

"यही कि उनसे विवाह किया जाता है और फिर उनसे बच्चे होते हैं और उनका पालन-पोषण किया जाता है। इस कार्य में पत्नी का बहुत सहयोग होता है। इसके लिए त्रिवेणी मुझे ठीक लड़की प्रतीत हुई है।"

दानसिंह हँस पड़ा। उसने पूछ लिया, "भला तुमने यह कैसे समझ लिया कि इतना दुर्भर काम त्रिवेणी कर सकेगी ?"

"वह इस प्रकार कि उन्होंने अपने घर पर कोई नौकर नहीं रखा हुआ है। त्रिवेणी ने अपना घर, रसोई तथा बैठक शीशे की भाँति चमका रखे थे। मेरी कुरेड़ीवाली माताजी का घर भी बहुत साफ-सुथरा है। वह है तो कच्चा, परन्तु उसमें कहीं किसी वस्तु पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी का एक कण भी दिखाई नहीं देता। माँ सदा झाड़ती-फूँकती रहती है। एक बार, जब मैं पाँचवीं श्रेणी में पढ़ता था, मैंने पूछा कि वह दिन-भर मकान को झाड़ती-फूँकती क्यों रहती है? तो उसने बताया कि स्वच्छ-पवित्र स्थान पर देवताओं का वास होता है, वह चाहती है कि मैं देवता बनूँ, इसलिए मेरे रहने का मकान भी देवताओं के रहने योग्य बनाया करती है।

"जब मैं दुर्गानन्दन का घर देख रहा था तो मुझे अपनी माँ की बात स्मरण हो आई थी। ऐसी माँ के घर में देवता ही पैदा होंगे।"

दानसिंह गम्भीर हो गया। उसकी समझ में आ रहा था कि श्रीपति में जो भी गुण हैं वे उसकी माँ के पैदा किए हुए हैं। इसपर उसने बात बदलकर वह बात आरम्भ कर दी जिसके लिए वह उसको वहाँ लाया था। उसने कहा, "तब तो तुम्हारी बहू को पहले तुम्हारी माँ के पास रखना पड़ेगा, जिससे वह भी देवता पैदा करने का नुस्खा सीख आवे।"

"यह तो होगा ही। यदि मेरा विवाह हुआ तो उससे पहले माँ को लाकर मैं उस मकान में टिका दूँगा जिसमें बहू को लाकर रखने का विचार होगा।"

"और यह कब तक होगा?"

"इस विषय में तो अभी मुझे विचार करने का भी अवकाश नहीं। एक वर्ष से तो मेरी पढ़ाई बन्द है। यद्यपि इन दिनों मैंने ढेरों पुस्तकें पढ़ डाली हैं परन्तु किसी स्थान पर काम पाने लायक तो मैं बिना एक-दो परीक्षा पास किए किस प्रकार हो सकता हूँ?"

"तो तुम नौकरी करोगे? परीक्षाओं का महत्त्व तो नौकरी पाने में ही है न?"

"यह तो आप निश्चय करेंगे कि मुझे क्या करना है। जब आपने मुझे कॉलेज में भरती करवाया था तो मैं उस समय कुछ इस प्रकार ही समझा था।"

"मेरा यह आशय नहीं था। मैं तो यह विचार करता था कि अभी तुम छोटी आयु के हो। तुमको किसी ऐसे वातावरण में रखा जाए जहाँ तुम ज्ञान-उपलब्धि में सुगमता अनुभव कर सको।

"मेरा विचार तो तुमको अपने काम का मैनेजर नियुक्त करने का है।"

"और दुर्गा भैया क्या करेंगे?"

"उसको अपने राजनैतिक कार्य में अपने साथ रखना चाहता हूँ। ज़रा सीता के मुकद्दमे से अवकाश पा लूँ तो फिर मैं दिल्ली में असेम्बली के लिए खड़ा हो जाऊँगा। दुर्गा मेरे साथ मेरा सेक्रेटरी बनकर रहेगा। उसने बी० ए० पास किया है, वह इस कार्य को निभा लेगा।"

इस प्रबन्ध से श्रीपति प्रसन्न था। दानसिंह ने बात आगे चलाते हुए कहा, "अब तुम्हारे पुनः कॉलेज में जाने की आवश्यकता नहीं। तुमको एकाउँटेंसी सीखनी होगी। इसके लिए छः मास से अधिक का समय नहीं लगना चाहिए। तब तक मैं भी निर्वाचन लड़ने का प्रबन्ध कर लूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब मुझे लखनऊ कब तक जाना होगा?"

"मैं समझता हूँ, तुम्हारा अब यहाँ रहने का कुछ भी प्रयोजन नहीं। तुम वहाँ चलो और फिर दुर्गा का विवाह तो होगा ही। तुम्हारे लिए भी तो कोई बहू ढूँढनी पड़ेगी। क्या आयु है तुम्हारी?"

"इस समय मैं सत्रह साल का हो चुका हूँ।"

"खैर, विवाह के लिए तो अभी पाँच वर्ष तक तुम्हें विचार भी नहीं करना चाहिए। यह हमारा काम है कि हम इस दिशा में भी विचार करते रहें। हाँ, तुम्हारी कुरेड़ीवाली माँ से विचार-विमर्श कर लिया जावेगा।"

"वे तो मेरे लिए एक लड़की विचार किए हुए हैं।"

"कौन है वह?"

"रायबरेली में रहती है। उसके माता-पिता किसी ज़माने में कुरेड़ी में रहते थे। अब वे रायबरेली में रेल के बाबू हैं।"

"अच्छी बात है। उसको भी देख लेंगे। भला सीता इन दिनों क्या करती है?"

"मुझसे वह अंग्रेज़ी और गणित सीखती थी। अब तो उसके लिए और अधिक पढ़ा-लिखा अध्यापक रखना होगा। दसवीं श्रेणी तक की योग्यता वह प्राप्त कर चुकी है।"

"मैं समझता हूँ कि उसको और अधिक पढ़ाने की आवश्यकता नहीं। उसका तो शीघ्र ही विवाह कर देना चाहिए।"

श्रीपति ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

४

यह तो निर्णय हो गया कि सीता और श्रीपति में अभी किसी प्रकार की विवाह के विषय पर बात नहीं हुई है। इसपर भी सीता के लिए वह आकर्षण बन चुका था। इस समय वह सत्रह-अठारह वर्ष का युवक उसके मस्तिष्क पर अपने सभ्य, सुशिक्षित और उदार होने की छांप लगा चुका था।

बम्बई में रहते हुए नर्मदा ने सीता के मन में वेश्यागृह के संस्कारों को दूर करने के लिए उसे पति-पत्नी, विवाह, धर्म, पतिव्रत धर्म और गृहस्थाश्रम तथा यौन-सम्बन्ध की पवित्रता के विषय में एक श्रेष्ठ सभ्य परिवार के संस्कार डालने का यत्न किया था। इससे तो वह श्रीपति को ही अपना मान बैठी थी।

इसपर भी उसका कभी साहस नहीं हुआ था कि वह श्रीपति से इस विषय पर बात करे जो नर्मदा की बातों से उसके मन में उत्पन्न हो रही थी।

सीता के अपने मन की उक्त कल्पना को बड़ी माँ को भास कराने के दो-तीन दिन बाद नर्मदा ने पुनः श्रीपति के विषय में बात आरम्भ करते हुए कहा, "तो विवाह के लिए तुम्हारी इच्छा होती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता के आँखें नीची किए हुए कहा, "बड़ी माँ! तुम ही ने तो कहा था कि लड़कियों का विवाह होता ही है, होना ही चाहिए। तो मैं विचार करती थी कि होना ही है तो श्रीपति भैया बहुत अच्छे हैं।"

"पर तुम तो उसको भैया कहती हो। भैया से तो विवाह हो नहीं सकता।"

"पर माँ! यदि आप सब बड़े लोग वह निर्णय करोगे जोकि मेरा मन चाहता है तो मैं फिर उसको भैया नहीं कहूँगी।"

"तो क्या कहोगी?" मुस्कराते हुए नर्मदा ने पूछ लिया।

"वह तो आप ही बताएँगी, मुझे तो पता भी नहीं कि क्या कहा जाता है।"

"परन्तु मुझे तो किसीने बताया नहीं था कि तुम्हारे पिता को मुझे क्या कहकर बुलाना होगा। इस कारण मैं आज तक उनको बुलाती ही नहीं। जब मुझको कोई बात पूछने की आवश्यकता होती है तो मैं सामने जा खड़ी हो जाती हूँ। तुम्हारे पिता समझ जाते हैं कि मैं कुछ कहने के लिए आई हूँ। वे पूछ लेते हैं और मैं बता देती हूँ। हम हिन्दुओं में पत्नी पति का नाम नहीं लेती।"

"क्यों?"

"यह अनादर करना माना जाता है।"

सीता गम्भीर हो गई। वह कुछ विचारकर बोली, "तो मैं आज से श्रीपति का नाम ही नहीं लूँगी। मैं उसको भैया भी नहीं कहूँगी। मैं भी वैसे ही करुँगी, जैसे तुम पिताजी के सामने करती हो।"

नर्मदा हँस पड़ी। उसने कहा, "परन्तु अभी तो हमने यह फैसला किया ही नहीं कि तुम्हारा उसके साथ विवाह हो भी सकता है अथवा नहीं।"

"तो नहीं भी हो सकता क्या?"

"हाँ, पहले तो श्रीपति से ही पूछना है, फिर उसकी कुरेड़ीवाली माँ से और फिर जीजाजी और मोहिनी जीजी से। इधर तुम्हारे पिता को भी समझाना होगा और छोटी माँ की राय के बिना तो विवाह हो ही नहीं सकता।"

इसपर सीता उठी और अपने कमरे में जा पलँग पर लेट विचार करने लगी। कई घंटे के विचार का परिणाम यह हुआ कि उस दिन से उसने श्रीपति का नाम लेना और उसको भैया कहना छोड़ दिया।

मोहिनी कुरेड़ी से आई तो त्रिवेणी के विवाह का निश्चय हो गया। हाई कोर्ट में मुकद्दमे की पेशी तीन मास बाद की पड़ी। इससे सब परिवार वापस लखनऊ और कुरेड़ी चला गया। श्रीपति अपनी माँ से मिलने के लिए कुरेड़ी चला गया और दो दिन वहाँ रहकर लखनऊ जाने लगा तो बड़ी माँ और छोटी माँ से मिलने के लिए कोट में गया। जाने से पहले वह बाबू पद्मजीतसिंह को भी नमस्कार करना चाहता था। इससे वह कोट के द्वार पर पहुँचा तो वहाँ पृथिवीपाल को ताँगे से उतरते देख उससे मिलने की इच्छा भी करने लगा था। वह द्वार पर ही खड़ा हो गया और जब पृथिवीपाल ताँगे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर भीतर जाने लगा तो उसे स्वाभाविक भाव से कह दिया, "पृथिवी भैया ! नमस्ते।"

पृथिवीपाल ने इसका उत्तर केवल सिर हिलाकर दिया और बिना श्रीपति की ओर देखे भीतर चला गया। वह पृथिवी के मुख की कठोर मुद्रा देख समझ नहीं सका था कि इस गम्भीरता का क्या कारण हो सकता है। जब से पृथिवीपाल इलाहाबाद में क्षत्रिय कॉलेज में पढ़ने के लिए गया था, श्रीपति उससे मिल नहीं सका था। इससे इस कठोरता को समझने का यत्न करता हुआ वह भी भीतर चला गया। पृथिवी सीधा छोटी माँ के कमरे में गया। वास्तव में नर्मदा ने उसको इलाहाबाद में तार दिया था कि सीता अब कुरेड़ी आ रही है और उसे उससे मिलने के लिए आना चाहिए। इस तार की प्रतिक्रिया में वह आया था।

श्रीपति बाबू साहब से मिलने के लिए गया तो वे अपने पुत्र से मिलने के लिए विन्ध्यवासिनी के कमरे की ओर जा रहे थे। श्रीपति ने नमस्कार किया और कह दिया, "मालिक ! मैं लखनऊ जा रहा हूँ, आपको नमस्कार करने के लिए आया हूँ।"

"ठीक है, फिर कब आओगे ?"

"फूफा बाबूजी की इच्छा पर ही आऊँगा।"

"कुशल-समाचार भेजते रहना। पृथिवी आया है, उससे मिले हो ?"

"जी, उनको भी नमस्कार की है।"

पद्मजीतसिंह विन्ध्यवासिनी के कमरे में चला गया। श्रीपति बड़ी माँ के चरणस्पर्श करने उधर चला गया। श्रीपति ने उनके चरण स्पर्श किए तो उन्होंने पीठ पर हाथ फेरकर आशीर्वाद देते हुए कहा, "मोहिनी बहिन को कहना कि अब मेरे रहते हुए वे यहाँ आवें। अभी तक तो वे मेरी अनुपस्थिति में रहकर गई हैं।"

"अब घर में बहू आ गई हैं, देखें अब उनको किसी अन्य से मिलने के लिए अवकाश रहता है कि नहीं।"

"बाबू साहब ने दुर्गा को त्रिवेणी के साथ यहाँ आने के लिए निमन्त्रण दिया है। श्रीपति ! देहरावालों से झगड़े में हमारी विजय में तुम्हारा भी हाथ रहा है। इस कारण हम तुमको घर का ही प्राणी मानते हैं। इस कारण तुमको भी घर समझकर ही यहाँ आना चाहिए।"

वहाँ से सजल-नेत्र श्रीपति छोटी माँ और सीता से मिलने के लिए चला गया। उसके मन में सन्देह था कि पृथिवी इत्यादि अभी वहीं होंगे। वह पृथिवी से भी कुशल-समाचार जानना चाहता था। परन्तु उसको पृथिवी बड़ी माँ की ओर आता मिला। वह अकेला था। श्रीपति ने पुनः खड़े होकर नमस्कार किया। उसका विचार था कि पृथिवीपाल अब खड़ा होकर उससे कुशल-समाचार पूछेगा। परन्तु पृथिवी ने पुनः सिर ही हिलाया और आँखें सामने किए चला गया।

श्रीपति को ऐसा प्रतीत हुआ कि पृथिवीपाल का उसके प्रति व्यवहार एकदम शीतल हो गया है। इसपर उसने भी उसको मन से निकाला और छोटी माँ के कमरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा पहुँचा।

विन्ध्यवासिनी और सीता अभी खड़ी ही थीं। बाबू पद्मजीतसिंह उनके कमरे से निकल अपनी बैठक की ओर जा रहा था। सीता ने श्रीपति को देखा तो मुस्कराकर हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। श्रीपति ने विन्ध्यवासिनी के चरण स्पर्श किए तो उसने उसको प्यार दिया और उसको बैठा उसके जलपान के लिए पूछा।

"छोटी माँ ! माँ ने घर से खूब खिला-पिलाकर भेजा है।"

सीता ने पूछ लिया, "अब आपके दर्शन फिर कब होंगे ?"

श्रीपति इस परिवर्तित व्यवहार को तो बम्बई से ही देख रहा था। सीता ने उससे सख्य-भाव छोड़कर उसके प्रति आदर का भाव बना लिया था। श्रीपति को आज भी उसी आदर और प्रतिष्ठा की झलक प्रतीत हुई थी। इसपर भी उसने उस ओर ध्यान न देते हुए कह दिया, "जब सीता बहिन याद करेगी, श्रीपति दौड़ा हुआ चला आवेगा।"

इसपर तो सीता का प्रफुल्लित मन एकदम गम्भीर हो गया। श्रीपति ने इस ओर भी ध्यान नहीं किया और विन्ध्यवासिनी को सम्बोधित कर बोला, "छोटी माँ ! मैं आज लखनऊ जा रहा हूँ। इक्के में सामान लदा तैयार खड़ा है। आप आशीर्वाद दीजिए तो गाड़ी के समय से पहले पहुँच जाऊँगा।"

विन्ध्यवासिनी ने उसकी पीठ पर हाथ रख आशीर्वाद दिया और श्रीपति उसको प्रणाम कर सीता की ओर घूमा तो वह हाथ जोड़ खड़ी हो गई। श्रीपति ने देखा उसके नेत्र आँसुओं से भर गए थे।

इस प्रकार इस ज़मींदार के घर से रूखे और स्नेहमय व्यवहार पर विचार करता हुआ श्रीपति लखनऊ पहुँच गया।

लखनऊ पहुँच श्रीपति ने एकाउँटेसी की शिक्षा लेनी आरम्भ कर दी। दुर्गानन्दन त्रिवेणी के साथ कुरेड़ी गया और वहाँ वालों को प्रसन्न कर वह लखनऊ लौट आया। सब गाँववाले यह समझते थे कि इस लड़के ने देहरावालों की लड़की से विवाह कर कुरेड़ी की नाक रख ली है। जहाँ श्रीपति के सीता को छुड़ाने की चर्चा होती थी वहाँ दुर्गानन्दन की कुरेड़ी की नाक रख लेने की बात भी होती थी।

दुर्गानन्दन तथा त्रिवेणी के साथ मोहिनी भी गई थी और वह वहाँ से आई तो सीता के विषय में सूचना लाई। उसने श्रीपति की अनुपस्थिति में दानसिंह को बताया, "वहाँ सीता के श्रीपति से विवाह की चर्चा चल रही है। दोनों माताएँ इस सम्बन्ध को पसन्द करती हैं। परन्तु पृथिवीपाल श्रीपति का घोर विरोध कर रहा है। बाबू साहब तटस्थ हैं।

"मैं आपकी राय लेना चाहती हूँ। छोटी भाभी ने आपसे पूछा है। वह समझती हैं कि आप जो कुछ राय देंगे वह मानी जावेगी।"

"पृथिवी है कि चला गया है ?"

"हमारे वहाँ से विदा होने से एक दिन पहले ही वह गया था। त्रिवेणी का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि वह तो अर्द्धविक्षिप्त-सा है।"

दानसिंह हँस पड़ा। उसने पूछा, "जब तक पद्मजीतसिंह मुझे बुलाकर राय नहीं माँगेंगे, मैं इस विषय में राय नहीं दूँगा।"

"और आपकी सम्मति है क्या?"

"मैं समझता हूँ कि सीता की सगाई किसी रूढ़िवादी ज़मींदार से हुई तो वह उसका पूर्व-इतिहास जान उससे घृणा करने लगेगा। श्रीपति को मैं उसके सर्वथा योग्य समझता हूँ।"

"परन्तु श्रीपति भी तो उसको सबके सामने नाचते-गाते देख चुका है?"

"तो भी वह उसका मान करता है।"

"मैं मान की बांत नहीं कर रही। मैं उसके पत्नी बनाने की बात कर रही हूँ।"

"कह नहीं सकता। आशा तो मैं यही करता हूँ कि वह उसको पवित्र और साध्वी मानेगा।"

मोहिनी ने अपने पति की सम्मति विन्ध्यवासिनी को लिखकर भेज दी। इस सूचना पर विन्ध्यवासिनी अपने पति से दानसिंह की सम्मति लेने का हठ करने लगी।

दानसिंह हाईकोर्ट में प्रेज़ीडेंसी मैजिस्ट्रेट के प्रश्न पर बहस सुनने के लिए बम्बई गया हुआ था। वहाँ से वह बहुत अच्छा समाचार लेकर आया। हाईकोर्ट के जजों का यह विचार था कि मुकद्दमे का निर्णय होने से पूर्व न तो क्षमा हो सकती थी न ही दया। वायसराय कत्ल का मुकद्दमा वापस नहीं ले सकता था।

इस समाचार की तथा हाईकोर्ट की बहस की व्याख्या सुनने के लिए पद्मजीतसिंह लखनऊ आया हुआ था। विन्ध्यवासिनी और नर्मदा भी साथ आईं तो सीता भी आ गई।

सब दानसिंह के मकान में ठहरे थे। उनके लखनऊ आने पर एक और योजना पर बात होने लगी थी। महीपाल के वकील ने भी उसको लिखा था कि वायसराय का क्षमापत्र समय से पूर्व मान, अमान्य हो जावेगा।

इसपर योजना यह थी कि यदि दोनों पक्ष परस्पर सुलह कर लें तो प्रेज़ीडेंसी मैजिस्ट्रेट से बहुत हल्की सज़ा दिलाई जा सकती है। तब वायसराय के पुनः क्षमा करने में कठिनाई नहीं होगी।

इस योजना पर विचार करने के लिए शिवलाल दानसिंह से मिलने के लिए आया। दुर्गानन्दन के साथ त्रिवेणी के विवाह ने इस पक्ष के लोगों को भी नरम कर दिया था। शिवलाल का कहना था, "महीपाल को सरकारी नौकरी से तो निकाल ही दिया जाएगा। उसको दण्ड भी हो जाएगा। परन्तु यदि दोनों पक्ष सुलह कर लें तो पुलिस भी अपनी ओर से बहुत बल नहीं देगी और आशा की जा सकती है कि एक-दो वर्ष के दण्ड में ही उसको मुक्ति मिल जाएगी।"

दानसिंह ने पद्मजीतसिंह से राय कर बताया, "हम अपने वकील को मुकद्दमे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौन कर देंगे। परन्तु इसके लिए महीपाल को सीता और उसकी बड़ी माँ से क्षमा माँगनी होगी।"

शिवलाल इस शर्त को लेकर गया और बड़ी कठिनाई से महीपाल को इस बात के लिए राज़ी कर सका। एक दिन निश्चित कर लिया गया कि किसी दिन महीपाल सीता तथा उसके सब बड़ों से क्षमायाचना के लिए दानसिंह के घर पर आएगा।

निश्चित दिन शिवलाल महीपाल को साथ लेकर आया। कुरेड़ी का पूर्ण परिवार वहाँ उपस्थित था। महीपाल को दानसिंह ने अपने पास बैठाया और सबके लिए चाय-पानी का प्रबन्ध कर दिया। जब चाय पी जा रही थी तो शिवलाल ने सीता और उसकी माँ विन्ध्यवासिनी को सम्बोधित करके कहा, "हम दोनों परिवारों में जो वैमनस्य था उसका आज यहाँ अन्त होना चाहिए।"

फिर उसने महीपाल से भी कहा, "महीपाल ! इनसे क्षमा माँगो।"

महीपाल ने चाय की एक सुरकी ली। फिर प्याला सामने मेज़ पर रख दिया और खड़ा होकर सीता की ओर देखकर कहने लगा, "सीता रानी !...." इससे अधिक कहने से पूर्व उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल सीता की ओर निशाना कर दाग दिया। सीता ने उसके पिस्तौलवाले हाथ को उठते देख लिया था और वह नीचे झुक गई थी। गोली उसके सिर के ऊपर निकल गई। महीपाल ने दूसरा वार विन्ध्यवासिनी की ओर किया। वह मेज़ के नीचे झुक जाने की अपेक्षा उठकर खड़ी हो गई और गोली उसके हृदयस्थल पर न लगकर पेट में लगी।

श्रीपति वहाँ बैठा था। उसने पूर्व इसके कि महीपाल किसी अन्य पर वार करे, उसको पीछे से अपनी बाहों में दबोच लिया। पिस्तौल की तीसरी गोली भी चली जिसका निशाना बाबू पद्मजीतसिंह था, परन्तु वह मेज़ पर रखे चाय-पॉट को लगी। इस समय तक श्रीपति ने उसके हाथ से पिस्तौल छीन लिया था। उसने महीपाल को अपनी बाहों में कसकर जकड़ लिया।

शिवलाल तो भौंचक्का हो देखता रह गया था। दानसिंह ने समीप के थाने में फोन कर दिया और विन्ध्यवासिनी को, जिसके पेट से रक्त की धारा प्रवाहित हो रही थी, मोटर में बैठा अस्पताल ले-जाया गया।

दस मिनट के अन्दर पुलिस आई और महीपाल तथा पिस्तौल को अपने अधिकार में ले चली गई।

५

विन्ध्यवासिनी का अस्पताल में देहान्त हो गया। दानसिंह आदि सभी शिवलाल को भी इस षड्यन्त्र में सम्मिलित समझते थे। इस कारण उससे बोलचाल बन्द हो गई। महीपाल के पिस्तौल की जाँच की गई तो पता चला कि वह पिस्तौल लखनऊ के डिप्टी कमिश्नर कौल साहब का था। इसलिए उसको भी नौकरी से निलम्बित किया गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ लिया गया।

यह पता चला कि महीपाल घटना की पहली रात कौल के बँगले पर रहा था। साथ ही उसके महीपाल के पूर्व-सम्बन्धों के कारण उसको उसके कार्य में सहयोगी माना गया।

बम्बई के मुकद्दमे पर भी इस घटना का प्रभाव हुआ। लखनऊ के मुकद्दमे में शिवलाल के बयान हुए। उसके बयान महीपाल और कौल के सख्त खिलाफ थे।

वास्तव में अन्य सब साक्षी गौण हो गए। पुलिस का मुख्य साक्षी शिवलाल हो था। उसके बयान के बाद ही महीपाल और कौल को सेशन के सुपुर्द कर दिया गया।

बम्बई हाई कोर्ट का निर्णय महीपाल के विपरीत गया। बम्बई के सेशन कोर्ट ने महीपाल को दस वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड दिया और लखनऊ के सेशन कोर्ट ने महीपाल को फाँसी का हुक्म दिया। मिस्टर कौल को दस वर्ष कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

अन्तिम फैसले के दिन दानसिंह महीपाल और कौल को मिला। वे कोर्ट-रूम से पुलिस-वैन में ले-जाए जा रहे थे। कौल की ज़मानत की प्रार्थना रद्द हो गई थी। उसने हाईकोर्ट में अपनी अपील करने का विचार किया था। इसपर सेशन जज ने कह दिया कि ज़मानत की प्रार्थना भी वहीं की जाए।

दानसिंह की दृष्टि पुलिस-वैन की तरफ जाते हुए दोनों व्यक्तियों पर पड़ी। वह आगे बढ़कर कौल से कहने लगा, "कौल साहब ! शत्रु का शत्रु मित्र नहीं होता। मित्र ही मित्र होता है। शत्रु तो सदैव शत्रु ही रहता है।"

□□□

081
167944

Central Library
167944
Gurukula Kangri University Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-P आगत संख्या 167944

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...NGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
A.R.		
Comm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989 शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar